कवि-श्री माला

✲ उर्दू ✲

कवि :

मुहम्मद इक़बाल

सम्पादक-अनुवादक

मुहम्मद हसन



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण—१०००
मई, १९६२
मूल्य—रु. २/-
● ● ●

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा अपने कार्य-कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी-गद्यानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निश्चय करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए यथासाध्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके ये कवियोंका चुनाव किया गया है, उनका चुनाव करते समय सन् १९२० से पूर्वका साहित्य और १९२० से बादका साहित्य—इस तरहसे एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२० के पूर्वकी तथा १९२० के बादके साहित्यमें प्रवाहित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका अलगाव-सा पाया जाता है।

डॉ. मुहम्मद [illegible] प्रस्तुत पुस्तकमें कवि-परिचय और काव्यांशको सम्पादित तथा अनुवादित कर सारी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। ग्रंथमें संकलित साहित्य परिचयको श्री रसूल अहमद 'अबोध' ने तैयार किया है। पुस्तकमें संकलित कविका चित्र भी 'अबोध' जीके सद्प्रयत्नोंसे उपलब्ध हुआ है। ग्रंथके आवरण डिज़ाइनको बनवा देनेमें श्री वी. एन. आप्टेकरजी (डीन, सर जे. जे. इन्स्टीट्यूट ऑफ अप्लाईड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है इसके लिए समिति सभीकी आभारी है।

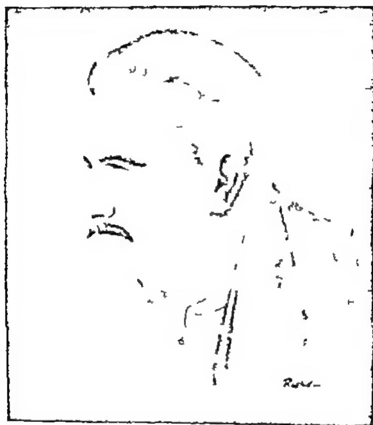
इसके अतिरिक्त छपाई तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे भिन्न-भिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

मन्त्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

अनुक्रमणिका

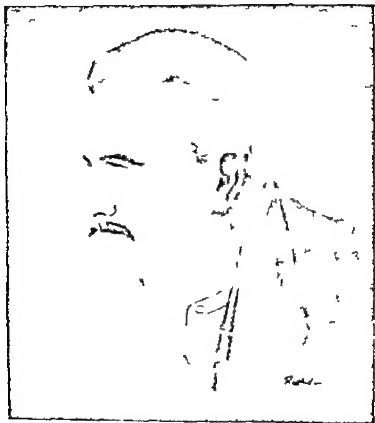
कवि-श्री माला
उर्दू



मुहम्मद इक़बाल

अनुक्रमणिका

कवि-श्री माला
उर्दू



मुहम्मद इकबाल

उर्दू साहित्य परिचय

[प्रारम्भसे १९२० तक]

उर्दू भाषा
और
उसका साहित्य

• • •

प्रारम्भिक-काल—१ (दक्षिण)

दक्षिण भारतपर अलाउद्दीन खिलजीके आक्रमणके बाद दो ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं जिन्होंने दक्षिण भारतमें उत्तर भारतकी मिली जुली बोलीको विकसित होनेके लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न कर दिया। इसमें पहली घटना है मुहम्मद तुगलकका दिल्लीकी जनताको यह आज्ञा देना कि वह दिल्ली छोड़कर देवगिरि (दौलताबाद) आबाद करे। दूसरी उसके एक अधिकारी जफर खाँका विद्रोह करके अलाउद्दीन हसन गंगो बहमनी बनकर दक्षिणमें बहमनी राज्यकी स्थापना करना। इन दोनों घटनाओंने स्वभावतः दक्षिण भारतमें एक ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दिया जिससे कालान्तरमें एक भाषा और साहित्यका विकास सम्भव हो सका।

हसन गंगो बहमनीने दक्षिणमें जिस बहमनी राज्यकी स्थापना की वह सन् १३४७ ई से १५२६ ई तक लगभग दो सौ वर्षोंतक दक्षिणमें राज्य करता रहा। अन्तमें अर्थात् सन् १५२६ ई में यह राज्य समाप्त होकर १—इमाद शाही २—बुरीद शाही ३—निजाम शाही ४—आदिल शाही और ५—कुतुब शाही नामक पाँच राज्योंमें विभक्त हो गया।

उत्तर भारतीयोंके दक्षिणमें पहुँचनेके कारण जो एक नई भाषा तथा साहित्यका विकास हो रहा था उसमें सबसे पहली रचना इसी बहमनी कालमें प्राप्त होती है। ख्वाजा बन्दानेवाज गेसूदराज् वे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने उक्त भाषामें रचनाएँ कीं और जिनकी रचनाएँ प्राप्त होती हैं। ख्वाजा बन्दानेवाज गेसूदराज दिल्लीके सुप्रसिद्ध मुस्लिम सन्त निज़ामुद्दीन औलियाके शिष्य तथा उत्तराधिकारी नसीरुद्दीन चिराग देहलवीके प्रधान शिष्य तथा उत्तराधिकारी थे। कहते हैं कि एक बार नसीरुद्दीन चिराग देहलवी पालकीपर कहीं जा रहे थे। पालकी उठाकर चलनेवालोंमें उक्त गेसूदराज भी थे। उनके बड़े-बड़े बाल पालकीमें फँस गए पर उन्होंने इससे होनेवाले कष्टकी ओर ध्यान न दिया और अपने आध्यात्मिक गुरुकी पालकी उठाए चलते रहे। जब किसीके ध्यान दिलानेसे नसीरुद्दीन चिराग देहलवीको पता चला तो उन्होंने गेसूदराज कहकर उन्हें सम्बोधित किया तभीसे वह गेसूदराजके नामसे प्रसिद्ध हुए। और जब १४१२ ई० में वे दक्षिणमें अपने विचारोंका प्रचार करने तथा लोकसुधारके लिए पहुँचे और वहाँकी जनतापर उनका व्यापक रूपसे प्रभाव पड़ा तो बन्दानेवाज अर्थात् भक्तवत्सलकी उपाधिसे विभूषित किए गए।

ख्वाजा बन्दानेवाज सन् १४१२ ई० में गुलबर्गा (कोलबुर्गा) पहुँचे और वहीं स्थायी रूपसे रहने लगे। ख्वाजा बन्दानेवाज आध्यात्मिक साधकके साथ ही बहुत बड़े विद्वान पुरुष भी थे अरबी और फारसीमें आध्यात्मिक विषयपर उनकी अनेक पुस्तकें प्रसिद्ध थीं। जब वे दक्षिण पहुँचे तो प्रत्येक श्रेणीके लोगोंने उनका हृदयसे स्वागत किया और बहुत ही शीघ्र उनके अनुयायियोंकी संख्या बढ़ने लगी। इन्हीं अनुयायियोंके लिए जो निस्सन्देह अरबी और फारसी भाषाओंसे परिचित न थे इस नई भाषामें कुछ रचनाएँ कीं। उन्होंने अपने अनुयायियोंके लिए कितनी रचनाएँ की हैं इस सम्बन्धमें तो निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। उनमेंसे एकाध रचनाके अतिरिक्त कोई प्राप्त ही नहीं है। जो रचना उनकी प्राप्त है उसका नाम मेराजुल-आशिकीन है। यह रचना एक छोटी-सी पुस्तिकाके रूपमें ही है और इसका विषय धार्मिक है। गेसूदराजकी मृत्यु सन् १४२१ ई० में हुई।

ख्वाजा बन्दानेवाज गेसूदराजके बाद उनके पौत्र सय्यद मुहम्मद अब्दुल्लाह हुसैनीने शेख अब्दुल कादिर जीलानीकी प्रसिद्ध अरबी पुस्तक निशातुल-इश्क का उक्त भाषामें अनुवाद किया।

जैसा कि कहा जा चुका है बहमनी राज्यका अन्त इस प्रकार हुआ कि वह पाँच भागोंमें विभक्त हो गया। इन स्वतन्त्र राज्योंमें बीजापुरके आदिल शाही राज्यवंश और गोलकुण्डाके कुतुबशाही राज्यवंशका भाषा और साहित्यकी उन्नतिकी दृष्टिसे विशेष महत्त्व है। आदिलशाही राज्यवंशके कालमें जो सबसे पहला नाम सामने आता है वह प्रसिद्ध मुस्लिम सन्त शाह मीराँजी शम्सुल उश्शाक़का है। यह

सुफ आदिल शाहके राज्य-काल सन् १४९०—१५१८ ई० में हुए हैं। गद्य और पद्यमें शाह मीरांजी शम्सुल उश्शाककी कई रचनाएँ प्राप्त हैं यथा—

१—दरद मरगूबुल कुलूब २—सबरस ३—खुशीनामा ४—शहादतुल हकीकत ५—खुशनग़ज़।

शाह मीरांजी शम्सुल उश्शाकके शाह बुरहानुद्दीन जानम भी अपने युगके प्रसिद्ध सन्त और कवि हुए हैं। उनकी भी रचनाएँ प्रसिद्ध हैं जो इस प्रकार हैं।

१—वसीयतुल हादी २—सुरतये-ताहिर ३—कलीमुल कलाम ४—रमूजुल्वासेलीन ५—बशारतुज़्ज़िक्र ६—हुज्जतुल्बका ७—इरशादनामा ८—मुनफ़अतुल ईमान ९—सुख सुहेला।

शाह बुरहानुद्दीन जानमकी मृत्यु सन् १५८२ ई० के लगभग हुई है। इन्होंने अपनी रचनाओंकी भाषाको हिन्दी कहा है। इनकी सभी रचनाएँ पद्यात्मक हैं और विषयकी दृष्टिसे सभी आध्यात्मिक हैं। इनकी समस्त रचनाओंमें सुख सुहेला वसीयतुल्हादी और इरशाद नामा अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। विषयके गम्भीर होनेपर भी भाषा सरल तथा काव्यात्मक सौन्दर्यसे परिपूर्ण है।

शाह बुरहानुद्दीन जानमके पुत्र शाह अमीनुद्दीन आला अपने पूर्वजोंकी भाँति आध्यात्मिक जीवन बितानेवाले सन्त पुरुष थे। गद्य और पद्य दोनों ही प्रकारकी इनकी रचनाएँ प्राप्त हैं। मुहब्बत नामा और रमूजुस्सालेकीन इनकी अत्यधिक प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इन सन्त कवियोंकी गद्यात्मक और पद्यात्मक रचनाओंके अतिरिक्त जो इनकी पद्यात्मक रचनाएँ उसी प्रकार फारसी मसनवी पर आधारित हैं जिस प्रकार प्रेम मार्गी सूफी कवियोंकी भ्रमरवादात्मक रचनाएँ हैं। अन्य अनेक ऐसे कवियोंकी रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं जिनकी रचनाओंके विषय धर्म तथा आध्यात्मिकके स्थानपर लौकिक रहे हैं। इस प्रकारके रचयिताओंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध इब्राहीम आदिल शाह (१५८०—१६२६ ई०) हैं। इब्राहीम आदिल शाहको केवल दक्खिनी भाषा और उसके काव्यसे ही प्रेम न था प्रत्युत भारतीय संगीतसे भी उसे अत्यधिक प्रेम था। इतना ही नहीं वह भारतीय संगीतका प्रामाणिक ज्ञाता भी था। नवरस नामक इब्राहीम आदिल शाहकी रचनासे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह भारतीय संगीतका अच्छा जानकार था। प्रसिद्ध है कि जब इस प्रकारकी पुस्तक लिखनेका उसके मनमें विचार आया तो उत्तर भारतसे विद्वानोंको बुलाकर उनसे पहले भाषाका अध्ययन किया तत्पश्चात् उक्त पुस्तककी रचना की।

इब्राहीम आदिल शाहने इस पुस्तकमें ब्रजभाषाका भी प्रयोग किया है और अरबी फारसी शब्द भी इसमें पर्याप्त आए हैं। विद्वानोंका अनुमान है कि यह पुस्तक १६ वीं शताब्दीके अन्त अथवा १७ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें लिखी गई होगी।

इब्राहीम आदिल शाहकी इस पुस्तक 'नवरस' की भूमिका फारसीके प्रसिद्ध कवि तथा लेखक 'जहूरी' ने लिखी है जिसे 'सेह-नस्र जहूरी' के नामसे भारतके फारसी साहित्यकी श्रेष्ठ रचनाओंमें माना जाता है।

इब्राहीम आदिल शाहके पश्चात् मुहम्मद आदिल शाह बीजापुरकी राज गद्दीपर बैठा। मुहम्मद आदिल शाह तथा उसकी पत्नी दोनोंको कविता तथा कवियोंसे अत्यधिक प्रेम था। 'रुस्तमी' 'मलिक खुशनूद' और 'दौलत शाह' उसके राज्य-कालके उल्लेखनीय कवि हैं। 'रुस्तमी' की एक रचना 'खावर नामा' प्राप्त है जो एक प्रबन्धात्मक काव्य रचना है। यह एक फारसी काव्यका अनुवाद है जिसे 'रुस्तमी' ने मुहम्मद आदिल शाहकी पत्नीके अनुरोधपर किया था। २४००० शेरोंके इस विशाल अनुवाद ग्रन्थको 'रुस्तमी' ने केवल डेढ़ वर्षमें समाप्त किया था। अनुवादका काल लगभग १६४९ ई० है।

'मलिक खुशनूद' की रचना भी प्रबन्धात्मक है। रचनाका नाम 'हश्त बहिश्त' है। यह रचना अमीर खुसरोकी एक फारसी रचनापर आधारित है।

सन् १६५६ ई० में बीजापुरकी राजगद्दीपर अलीआदिल शाह द्वितीय बैठा। वह स्वयं कवि था और प्रसिद्ध कवि 'नुसरती' का इसीके कालमें अभ्युदय हुआ। 'नुसरती' की रचनाओंमें तीन प्रबन्धात्मक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं १—अलीनामा २—गुलशने इश्क ३—तारीखे-सिकन्दरी। 'अलीनामा' में 'नुसरती' ने दक्षिण भारतमें मुगलों मराठों आदिल शाहियों और कुतुबशाहियोंके उस संघर्षकी कहानी लिखी है जो शक्ति प्राप्त करनेके लिए उस कालमें चल रहा था। इस रचनामें उसने तत्कालीन शासकका भी अत्यधिक सुन्दर चित्रण किया है। 'गुलशने इश्क' में उसने मनोहर और मधुमालतीकी उस प्रेम कथाका सुन्दर वर्णन किया है जो उस कालमें दक्षिणमें अत्यधिक लोकप्रिय प्रेम कथा थी तथा जिसे अनेकों अन्य कवि भी अपनी काव्य रचनाका विषय बना चुके थे। 'तारीखे-सिकन्दरी' 'नुसरती' की अधूरी रचना है जो १६८७ ई० में बीजापुरके विनाश और 'नुसरती' के मृत्युके कारण पूरी न हो सकी।

बीजापुरके आदिल शाही कालके कवियोंमें 'हाशिमी' बीजापुरी भी एक प्रसिद्ध कवि हुआ। 'हाशिमी' बीजापुरीकी रचना 'यूसुफ-जुलेखा' है। इसमें लगभग बारह हजार शेर हैं। हाशिमीकी मृत्यु १६९७ ई० में हुई।

इन कवियोंके अतिरिक्त इस कालमें अन्य भी अनेक कवि हुए हैं जिनके सम्बन्धमें यहाँ लिखनेकी आवश्यकता नहीं मालूम होती।

बीजापुरके आदिल शाही राजवंशके अतिरिक्त दक्षिणके जिस राजवंशका भाषा और साहित्यके विकासकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण स्थान है वह है गोलकुण्डाका कुतुबशाही राजवंश। बहमनी राजवंशकी समाप्तिके बाद यह राजवंश १५०८ में स्थापित हुआ। भाषा और साहित्यकी दृष्टिसे इस वंशका १६वीं शताब्दीका अन्तिम

बरन विशेष महत्वका है। सन् १५९ में गोलकुण्डेके राजसिंहासनपर मुहम्मद कुली कुतुब शाह बैठा। अन्य विशेषताओंके अतिरिक्त वह एक महान कवि भी था। प्रसिद्ध है कि उसने एक लाखसे भी अधिक शेर कहे थे। वह दक्खिनी फारसी और तेलगुमें कविताएँ रचता था। तेलगुमें उसका उपनाम तुर्क मान था। दक्खिनी का वह पहला कवि है जिसकी सारी काव्य रचना प्राप्त है और जिसका फारसीके अकरादि क्रमसे संग्रह किया जा सका है।

मुहम्मद कुली कुतुब शाह वास्तवमें दक्खिनीका पहला कवि है जिसने भारतीय वातावरणके अनुसार कविताएँ रची हैं। वह मुस्लिम त्योहारोंकी भाँति ही हिन्दू त्योहारों वसन्त होली दिवाली आदिमें भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित होता था। साहित्यकी दृष्टिसे मुहम्मद कुली कुतुब शाह ही वह व्यक्ति है जिसे दक्खिनीका पहला और सर्व श्रेष्ठ कवि कहा जा सकता है। उसके पूर्वके कवियोंकी भाषामें वह प्रौढ़ता नहीं दिखाई देती जो वास्तवमें मुहम्मद कुली कुतुब शाहकी भाषामें प्राप्त होती है। भाव भाषा और भारतीयताकी दृष्टिसे मुहम्मद कुली कुतुब शाहका स्थान अन्यतम है।

वली का पूरा नाम शम्सुद्दीन वली उल्लाह था। वली उनका उपनाम था। वे औरंगाबादमें पैदा हुए थे बीस वर्षकी आयुमें वे अहमदाबाद (गुजरात) गए जहाँ कुछ दिनों तक उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करनेके बाद अपने सय्यद अबुल मआलीके साथ दिल्लीकी यात्रा की। यह यात्रा सम्भवतः वली ने सन् १७ में की थी। दिल्लीमें वली ने शाह सादुल्लाह गुलशन से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। कुछ दिनोंके बाद जन्मभूमि लौट आए। सन् १७२० में वलीने फिर दिल्लीकी यात्रा की थी। सन् १७४१ ई में अहमदाबाद (गुजरात) में उनकी मृत्यु हुई।

भाषाकी दृष्टिसे वली की भाषाके तीन रूप हैं। एक रूप अर्थात् दिल्ली आनेसे पहलेका शुद्ध दक्खिनी है दूसरा दिल्ली जानेके बादका अरबी मिश्रित दक्खिनी है। और तीसरा वह है जिसे दिल्लीकी तत्कालीन भाषा अथवा रेख्ता कह सकते हैं।

प्रारम्भिक-काल—२ (दिल्ली)

सन् १७०० में वली के दिल्ली पहुँचनेपर तथा उनकी काव्य-रचना देखने पर दिल्लीवालोंको इस रहस्यका पता चला कि वे अपनी बोलचालकी भाषाको भी काव्य रचनामें प्रयुक्त कर सकते हैं और दूसरी ओर वली को दिल्लीमें एक ऐसी भाषा प्राप्त हुई जो दक्षिणकी दक्खिनीसे समानता रखते हुए भी वहाँ अधिक परिमार्जित थी। यह परिमार्जन दिल्लीकी भाषाके लिए स्वाभाविक भी था। एक तो वह दिल्लीकी स्थानीय भाषा थी दूसरे उसका कई पीढ़ियोंसे प्रयोग होता चला आ रहा

ा। अतः यह दक्षिणमें पहुँची हुई भाषाकी अपेक्षा तो निश्चय ही एक भिन्न वातावरण पहुँची थी उसे अधिक परिमार्जित होना ही चाहिए था। स्वभावतः जब वली ी दिल्लीमें इस प्रकारकी भाषा प्राप्त हुई तो उसे उन्होंने निस्संकोच स्वीकार कर ल्या। और जब वली दक्षिण लौटे तो यही परिमार्जित भाषा उनके साथ दक्षिण ई। निश्चय ही वली ने जानबूझकर अपनी भाषाको फ़ारसी मिश्रित बनाकर ल्पष्ट नहीं किया प्रत्युत उसे उन्होंने उसके उस सम्पन्न वातावरणके निकट कर ता जो वास्तवमें उसका अपना वातावरण था और जिसके बिना उसके विकासका र्ग अवरुद्ध ही रहता।

इस कालके कवियोंमें अत्यधिक प्रसिद्ध कवियोंके नाम इस प्रकार हैं —

शरफुद्दीन मज़मून (मृत्यु १७४५ ई०) शाह मुबारक आबरू (मृत्यु ७५० ई०) मुहम्मद शाकिर नाजी नजमुद्दीन हातिम (१७००—१७९२ ई०) ाने आरज़ू मिरज़ा मज़हरे जानेजानाँ यकरंग ताबाँ फ़ुगाँ आदि।

इस विकास कालमें दिल्ली और उसके आसपास ऐसे महान कवि उत्पन्न ए कि भाषा और काव्य विकासकी चरम सीमापर पहुँच गया। इन कवियोंमें न्हें विशेष ख्याति प्राप्त हुई तथा जो इतिहासमें सदा अमर रहनेवाले हैं उनमेंसे छ के नाम इस प्रकार हैं —

सौदा दर्द मीर मीर हसन नज़ीर ज़ौक़ ग़ालिब मोमिन ज़फ़र दाग़।

मीर का वास्तविक नाम मीर तक़ी था। मीर उपनाम है। वे सन् ७२४ ई० में अकबराबाद आगरामें पैदा हुए। किसी-किसी इतिहासकारने मीर पिताका नाम मीर अब्दुल्लाह लिखा है किसीने मीर मुत्तक़ी। पर निश्चित पसे उनके पिताका नाम मालूम नहीं है। मीर की आयु दस वर्षकी ही थी पिताका देहान्त हो गया। इस प्रकार मीर का जीवन प्रारम्भसे ही कठिनाइयोंमें ता। इन्हीं कठिनाइयोंके कारण मीर आगरेसे दिल्ली चले गए, यहाँ मुहम्मद सैन कलीम नामक एक सज्जनके साथ मीर की बहनका विवाह हुआ था ही ख़ाने आरज़ू जो दूसरे सम्बन्धसे मीर के मामा लगते थे रहते थे। यही कि प्रारम्भमें कुछ दिनों तक मीर ख़ाने आरज़ू के यहाँ रहे। पर ख़ाने आरज़ूसे मीर का स्वभाव मिलता न था इसलिए बहुत जल्दी ही मीर को ख़ाने आरज़ूका र छोड़ना पड़ा। दिल्लीमें रहते हुए मीर ने बहुतसे धनी-मानी व्यक्तियोंके ही नौकरी की। पर मीर को उसी प्रकार कभी सन्तोषप्रद जीवन प्राप्त न ा जिस प्रकार उस समय दिल्लीका जीवन सदैव अस्थिर बना रहता था। इस ार मानना चाहिए कि मीर का यह जीवन जो उनके काव्यके रूपमें उपलब्ध उसमें वास्तवमें दिल्लीके संकटपूर्ण अस्थिर जीवनकी कहानी है।

अब मीर' की रचनाओंमें हम पाते हैं —

दिल्लीकी बरबादीका क्या मज़कूर है।
यह नगर सौ मर्तबा लूटा गया॥

। वास्तवमें दिल्लीके लुटनेकी ही बात होती है। मीर की रचनाओंमें दिल्लीकी सम्पूर्ण कहानी जिस प्रकार काव्यकी भाषामें हमें प्राप्त होती है उस प्रकार अन्यत्र ही नहीं मिलती। मीर की आपबीती और जगबीती दोनोंमें एक प्रकारकी जो मानता थी उसीने उनके काव्यको करुणा तथा वेदनासे परिपूर्ण कर दिया है। ौर उन्हें वह स्थान दे दिया है जो जहाँ तक ग़ज़ल काव्यका सम्बन्ध है किसीको प्राप्त ही हो सका। मीर के परवर्ती कवियोंने मीर की जिस प्रकार प्रशंसा की शायद ही किसी कविकी प्रशंसा इस प्रकार उसके परवर्ती कवियोंने की होगी।

'ग़ालिब' कहते हैं —

रेख़्ते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'।
सुनते हैं अगले ज़मानेमें कोई मीर भी था॥

इसी प्रकार —

'ग़ालिब' अपना यह अक़ीदा है बक़ौले 'नासिख़'।
आप बेबहरा है जो मोतक़िदे 'मीर' नहीं॥

मीर —

न हुआ पर न हुआ 'मीर' का अन्दाज़ नसीब।
'ज़ौक़' यारोंने बहुत ज़ोर ग़ज़लमें मारा॥

आदि अनेक प्रशंसापूर्ण काव्य मीर के परवर्ती कवियोंने मीर के सम्बन्धमें कहे हैं।

मीर हसनका पूरा नाम मीर ग़ुलाम हसन था हसन उपनाम है। पिताका नाम मीर ज़ाहक था। मीर सन् १७३६ ई० में दिल्लीमें पैदा हुए बारह वर्षकी आयुमें पिताके साथ फ़ैज़ाबाद गए कुछ दिनोंके बाद लखनऊ गए और वहीं स्थायी रूपसे रहने लगे। ये पहले अपने पिताको अपनी काव्य रचना दिखाते थे। लखनऊ पहुँचनेके बाद मीर ज़ियाउद्दीन ज़िया के शिष्य बने। अन्तमें ख़्वाजा मीर दर्द मीर तक़ी मीर और सौदा का अनुकरण करने लगे।

सन् १७८६ ई० में मीर हसनका देहान्त हुआ।

इनकी रचनाओंमें एक काव्य-संग्रह तथा अनेक मसनवियाँ (प्रबन्ध-काव्य) और एक फ़ारसी भाषामें रेख़्ता के कवियोंका वर्णन है।

ग़ज़ल काव्यमें भी मीर हसनका स्थान उल्लेखनीय है पर जिन रचनाओंने उनको सबसे प्रमुख स्थान दिया है वे उनकी मसनवियाँ हैं। मसनवियोंमें भी मसनवी 'सहरुलबयान' जिसे मसनवी मीर हसन भी कहा जाता है ऐसी रचना है जिसकी तुलनामें कोई अन्य रचना नहीं ठहरती।

नज़ीर अकबराबादीका नाम वली मुहम्मद है। नज़ीर उपनाम है। ये सन् १७४० ई० में दिल्लीमें पैदा हुए। परन्तु नज़ीर का सारा जीवन आगरा अर्थात् अकबराबादमें बीता।

आगरेके ताजगंज महल्लेमें जहाँ नज़ीर ने अपने जीवनके दिन बिताए थे वहीं १८१० ई० में उनकी मृत्यु हुई और उसी घरमें जिसमें रहते थे उनकी समाधि बनाई गई।

ज़ौक़ का नाम शेख मुहम्मद इब्राहीम था। ज़ौक़ आपका उपनाम है। सन् १७८९ ई० में उनका जन्म हुआ और सन् १८५४ ई० में उनकी मृत्यु हुई। वह जन्मसे मृत्यु तक दिल्लीकी गलियाँ छोड़कर कहीं न गए। प्रसिद्ध है कि एक बार महाराजा चन्दूलालने उन्हें हैदराबाद बुलाया था पर वे न गए। इसी घटनासे सम्बन्धित उनका निम्न शेअर बहुत प्रसिद्ध है —

गर्चे है मुल्के-दकनमें इन दिनों क़द्रे-सुख़न।
कौन जाये ज़ौक़ पर दिल्लीकी गलियाँ छोड़कर॥

बीस बरसकी आयुमें बहादुर शाह ज़फ़रने जो उस समय मुग़लराज्यके उत्तराधिकारी थे ज़ौक़ को अपना काव्य-गुरु बना लिया। ज़फ़र की प्रशंसामें उस समय ज़ौक़ ने जो कविता लिखी उसपर उन्हें ख़ाक़ानिए-हिन्द की उपाधि प्रदान की गई। ज़ौक़ के शिष्योंमें कई प्रसिद्ध कवि हुए हैं। ज़फ़र आज़ाद मारूफ़ वीरान ज़हीर अनवर और दाग़ इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं।

ग़ालिब का नाम मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग था। सन् १७९७ ई० में आगरेमें इनका जन्म हुआ। अभी पाँच ही वर्षके हुए थे कि पिताका देहान्त हो गया। कुछ दिनों तक चचाने उनका पालन-पोषण किया पर चार वर्ष बाद उनकी भी मृत्यु हो गई। अब असदुल्लाह बेगको ननिहालमें रहना पड़ा। तेरह वर्षकी आयुमें दिल्लीके एक प्रतिष्ठित कुलमें उनका विवाह हो गया और तभीसे वे स्थायी रूपसे दिल्लीमें ही रहने लगे। जिस समय असदुल्लाह बेग दिल्लीमें रहने लगे थे दिल्ली काव्य-चर्चाका केन्द्र बनी हुई थी। अतः उनकी रुचिको जागृत होनेका उपयुक्त अवसर प्राप्त हुआ। दिल्लीमें अभी तक ऐसी स्थिति थी कि फ़ारसीमें काव्य-रचना करना विशेष महत्वकी बात समझी जाती थी। कुछ ऐसे कवि भी थे जो फ़ारसीमें ही अधिकांश रचनाएँ करते थे। ऐसे फ़ारसी कवियोंमें मिर्ज़ा अब्दुल क़ादिर बेदिल से असदुल्लाह बेग सबसे अधिक प्रभावित हुए और काव्य रचनामें उनका अनुकरण करने लगे।

दिल्लीके तत्कालीन शिष्ट समाजकी रुचिके अनुसार असदुल्लाह बेग अर्थात् ग़ालिब भी फ़ारसी और रेख़्ता में काव्य-रचना करते थे और अपने रेख़्ता सम्बन्धर इतना विश्वास भी हो चला था कि वह फ़ारसीसे मुक़ाबला करते हुए निम्नकोटि कहने लग गए थे —

पर कोई कहे कि 'रेख़्ता' क्योंकर हो रश्के फ़ारसी।
गुफ़्तए-ग़ालिब एक बार पढ़कर उसे सुना कि यों॥

'रेख़्ता' के कवियोंमें 'ग़ालिब' के स्थानके सम्बन्धमें इतना ही कहा जा सकता है कि गत पचास वर्षोंमें 'ग़ालिब' पर अनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। आज भी 'ग़ालिब' का अध्ययन करनेवालोंकी कमी नहीं है। और ऐसा महसूस होता है कि भविष्यमें भी 'ग़ालिब' का अध्ययन होता रहेगा।

विकास-काल—२

लखनऊ

दिल्लीकी केन्द्रीय राज्य-शक्तिके समाप्त होनेका परिणाम यह हुआ कि दिल्लीके आस-पड़ोसमें अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए। इन राज्योंमें अवध, रामपुर, टाण्डा, फ़र्रुख़ाबाद, फ़ैज़ाबाद, अज़ीमाबाद तथा हैदराबाद मुख्य हैं। इनमेंसे कुछ राज्य तो बहुत जल्दी ही समाप्त हो गए पर अवधका राज्य बहुत दिनों तक स्थिर रहा। सन् १७२४ ई० के लगभग इस राज्यकी स्थापना हुई और सन् १८५६ ई० तक यह अपने पूरे गौरवके साथ चलता रहा।

यद्यपि शुजाउद्दौलाके राज्य-कालमें ही 'सौदा', 'सोज़', 'फ़ुग़ाँ' तथा 'ज़ाहिक' आदि आ चुके थे पर वास्तविक रूपसे आसफ़ुद्दौलाके राज्य-कालमें ही उर्दू साहित्यका लखनऊमें विकास हुआ। १९वीं शताब्दीके आरम्भमें अवधका राज्य पूर्णरूपसे स्थापित हो चुका था अतः जो कवि दिल्लीकी तबाहीके कारण दिल्ली छोड़कर यहाँ आते उनका यथोचित स्वागत किया जाता। निस्सन्देह इस प्रकारके स्वागतमें दिल्लीको नीचा दिखानेका भी थोड़ा बहुत भाव रहता होगा। दूसरे अवधके शासकोंकी कला तथा साहित्यकी ओर स्वाभाविक रुचि भी प्रेरक सिद्ध हुई होगी। आरम्भमें दिल्लीसे आनेवाले उन लोगोंमें जिन्होंने लखनऊके साहित्यिक क्षेत्रको अत्यधिक प्रभावित किया 'इन्शा', 'मसहफ़ी', 'जुरअत' तथा 'मीर हसन' विशेष महत्त्व रखते हैं।

कहना न होगा कि ये चारों कवि जो लखनऊके जीवनसे प्रभावित भी हुए और लखनऊके साहित्यिक क्षेत्रको प्रभावित भी किया दिल्लीसे ही लखनऊ पहुँचे थे। और इसका कारण राजनैतिक था अर्थात् दिल्लीकी तबाही। एक ओर दिल्ली बरबाद हो रही थी और दूसरी ओर लखनऊ आबाद हो रहा था। लखनऊकी इस आबादीका सम्बन्ध हर क्षेत्रसे था। साथ ही लखनऊ अपने आपको हर क्षेत्रमें दिल्लीसे भिन्न दिखाना चाहता था। यह अवध जो एक लम्बे समय तक दिल्लीकी केन्द्रीय शक्तिके अधीन सूबेदारके द्वारा शासित होता रहा था, केन्द्रीय शक्तिके निर्बल होनेके साथ साथ स्वतन्त्र हाथ-पैर निकालने शुरू कर दिये थे। यहाँ तक कि ग़ाज़ीउद्दीन हैदरने ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी सहायता लेकर बादशाहकी उपाधि धारण कर ली और उस नाम मात्रके चले आते हुए सम्बन्धको भी समाप्त कर दिया जो लगभग १०० वर्षोंसे चला

आ रहा था। इस राजनैतिक परिवर्तनकी प्रतिक्रिया लखनऊके सारे जीवनमें उभर आई। कोई क्षेत्र ऐसा न बचा जिसमें लखनऊने दिल्लीसे भिन्न अपना स्थान बनानेका प्रयत्न न किया हो। भाषा और साहित्यके क्षेत्रमें लखनऊसे कहीं अधिक अनुकूल परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो गई थीं। आये दिनके राजनैतिक परिवर्तनोंके कारण जो दिल्लीके जीवनमें अस्थिरता थी सो तो थी ही देशी और विदेशियोंकी लूट खसोटने आर्थिक संकट भी उत्पन्न कर दिया था। ऐसी दशामें दिल्लीके लोगोंके सामने 'गालिब' के शब्दोंमें यह प्रश्न आता ही रहता था कि —

'हमने यह माना कि दिल्लीमें रहें, खायेंगे क्या ?'

खानेकी समस्याका जब दिल्लीमें समाधान न मिल सका तो लोग दिल्लीकी याद हृदयमें छिपे हुए और मिटी हुई दिल्लीका गुणगान करते हुए भी अपनी प्यारी दिल्लीको छोड़नेको विवश हो गए। दिल्ली छोड़नेके बाद जहां लोगोंको खानेकी समस्याका समाधान दिखाई पड़ता था वह लखनऊ ही था। लखनऊके शासक भी दिल्लीसे बढ़कर लखनऊको बनाना चाहते थे और इस प्रकार दिल्लीसे स्वतन्त्र अपने अस्तित्वकी महत्ताका प्रदर्शन करके मानसिक सन्तोष भी प्राप्त करना चाहते थे अतएव दिल्लीसे जो भी गुणी व्यक्ति लखनऊ आता लखनऊमें उसका स्वागत किया जाता और लखनऊके रंगमें उनको दिल्लीकी मस्तियोंकी याद भुलानेका प्रयत्न किया जाता। ऐसे गुणी व्यक्तियोंमें ही 'इन्शा' के ये कवि भी थे जिन्होंने आर्थिक संकटोंसे विवश होकर लखनऊकी राह ली थी।

'इन्शा' का पूरा नाम इन्शा अल्ला खाँ था उन्होंने अपने नामके ही अन्तिम अंशको अपना उपनाम बना लिया था। इनके पिताका नाम माशाअल्लाह था। माशाअल्लाह दिल्लीसे मुर्शिदाबाद चले गए थे वहींपर 'इन्शा' का जन्म हुआ। 'इन्शा' मुर्शिदाबाद छोड़कर शाह आलमके राज्यकालमें दिल्ली पहुँचे। यद्यपि वह वह समय था जब दिल्लीपर नादिरशाहका हमला हो चुका था। दरबार लुट चुका था और शाहआलम नाम मात्रको ही बादशाह रह गए थे। पर उन्होंने 'इन्शा' का बड़ा आदर-सम्मान किया। पर 'इन्शा' की महत्त्वाकांक्षाके अनुसार दिल्लीकी परिस्थितियाँ न थीं। अतः कुछ दिनों बाद वे दिल्लीसे लखनऊ पहुँचे। लखनऊमें उन्होंने शाहजादा सुलेमान शिकोहके यहाँ नौकरी कर ली और थोड़े समय बाद अपने विनोदी स्वभाव और प्रयत्नोंसे सुलेमान शिकोहके काव्य-गुरु 'मसहफ़ी' का स्थान ले लिया।

पर 'इन्शा' जिस स्वभावके व्यक्ति थे उनको इतनेसे ही सन्तोष होनेवाला न था अतः किसी-न-किसी प्रकार प्रयत्न करके लखनऊके तत्कालीन शासक नवाब सआदत अली खाँके दरबारमें पहुँच गए जहाँ बहुत समय तक उनका जीवन सुख और मस्तीके साथ बीता। अन्तमें उनके विनोदी स्वभावने नवाबके मनको उनकी

ोरसे फेर दिया और उनके जीवनके अन्तिम दिन बड़ी ही दुःखपूर्ण अवस्थामें बीते। इन्शा का लखनऊ ही में सन् १८१७ ई० में देहान्त हुआ।

एक काव्य-संग्रहके अतिरिक्त इन्शा की दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना 'दरियाए लताफ़त' है। इस पुस्तकमें भाषा-विज्ञान व्याकरण तथा काव्य-शास्त्रपर विचार किया गया है। यह पुस्तक फ़ारसीमें है पर इसका सम्बन्ध खड़ी बोलीसे है। तीसरी महत्त्वपूर्ण रचना जो कहानीके रूपमें है रानी केतकीकी कहानी है। इस कहानीको इन्शा ने यह प्रण करके लिखा है कि हिन्दवी छुट किसी और भाषाका पुट न आने पाए।

मसहफ़ी का नाम शेख गुलाम हमदानी था मसहफ़ी उनका उपनाम है। 'मसहफ़ी' अमरोहाके रहनेवाले थे वे युवावस्थामें दिल्ली चले गए थे। दिल्लीमें रहते हुए वे वहाँके कवि-सम्मेलनोंमें आते-जाते रहते थे। इस प्रकार साहित्यिक जीवनसे भी उनका सम्बन्ध था। कुछ दिनों तक दिल्लीमें नौकरीकी खोजमें भटकते रहे। अन्तमें लखनऊ चले गए, वहाँ मिर्ज़ा सुलेमान शिकोहके यहाँ नौकर हो गए और अन्तमें सुलेमान शिकोहके काव्य-गुरुके स्थान तक पहुँच गए। यहाँ मसहफ़ी और इन्शा ने अपने स्थानोंको सुरक्षित रखनेके लिए झगड़े होते रहते थे। ये झगड़े इतने बढ़ गए थे कि एक दूसरेको नीचा दिखानेके लिए बहुत नीचे तक उतर आते थे। निस्सन्देह इस प्रकारके झगड़े लखनऊके उस जीवनके स्वाभाविक परिणाम थे जिसने लखनऊको विलासिता तथा आमोद-प्रमोदकी ओर उन्मुख कर रखा था और लखनऊके साहित्यको भी बहुत हद तक प्रभावित कर रखा था।

मुसहफ़ी की गणना उच्च कोटिके काव्याचार्योंमें की जाती है कविके रूपमें भी वह पर्याप्त प्रसिद्ध है। हाँ उनकी अपनी कोई निश्चित शैली नहीं बन सकी जिसका कारण बड़े-बड़े कवियोंके अनुकरणकी ओर उनकी रुचि थी।

जुरअत जिनका नाम शेख कलन्दर बख्श था दिल्लीसे फ़ैज़ाबाद आए थे उन्होंने वहीं शिक्षा प्राप्त की थी। जिस समय ये दिल्लीसे लखनऊ आए लखनऊमें मिर्ज़ा सुलेमान शिकोहके दरबारकी बड़ी धूम थी। सुलेमान शिकोह शाहआलमके पुत्र थे और आसफ़ुद्दौलाके राज्यकालमें लखनऊ चले आए थे। वे स्वयं तो कवि थे ही कवियोंका बड़ा आदर-सत्कार भी करते थे स्वभावतः दिल्लीसे जो भी कवि लखनऊ आता था सुलेमान शिकोहकी शरणमें अवश्य पहुँचता था। जब जुरअत आए तो वे भी उक्त सुलेमान शिकोहके दरबारी बन गए। उस कालके राज्याश्रित कवियोंकी तरह जुरअत मुसहफ़ी और इन्शा में दरबारमें मुख्य स्थान प्राप्त करनेके लिए परस्पर जो चालें चला करती थीं और एक दूसरेको नीचा दिखानेके लिए जिस प्रकारके षड्यन्त्र रचे जाते थे वे तत्कालीन राज्याश्रित साहित्यका अच्छा उदाहरण है।

दिल्लीसे जो प्रसिद्ध कवि लखनऊ आए थे उनमें एक गुलाम हसन भी थे जो मीर हसनके नामसे प्रसिद्ध हुए। इन मीर हसनके पिताका नाम ज़ाहिक था। ज़ाहिक उपनाम ही मालूम होता है। ज़ाहिक दिल्लीसे फ़ैज़ाबाद गए जहाँ मीर हसन भी उनके साथ गए थे। मीर हसनकी प्रसिद्धि मसनवी सहरुलबयान के कारण है। इस मसनवीके पढ़नेसे उस कालके जीवनको समझनेमें पर्याप्त सहायता मिलती है।

भाषा और साहित्यके विकासकी दृष्टिसे लखनऊमें जिनको विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है उनमें नासिख आतिश नसीम अनीस दबीर मुख्य हैं।

नासिख का नाम शेख़ इमाम बख़्श था। फ़ैज़ाबादमें उनका जन्म हुआ था पर लखनऊमें उनके जीवनके अधिकांश दिन व्यतीत हुए। काव्य-रचनामें बहुत शीघ्र उनकी ऐसी प्रसिद्धि हुई कि बड़े-बड़े राज-कर्मचारी उनके शिष्य बन गए। इस प्रकार यद्यपि उन्होंने राज दरबारसे अपना सम्बन्ध स्थापित नहीं किया पर उनके इर्द-गिर्द राज दरबारका वातावरण बना रहता था। ऐसी दशामें उनको दरबारके नियमोंका पालन करना पड़ता था। पर उनका स्वाभिमान उन्हें ऐसा करने न देता था। ऐसी दशामें उन्हें लखनऊ छोड़ना पड़ा और उन्होंने अपने जीवनका कुछ काल इलाहाबाद कानपुर फ़ैज़ाबाद तथा बनारसमें बिताया।

लखनऊमें भाषा और साहित्यका जो विकास हुआ है उसमें सबसे बड़ा भाग नासिख का ही है। नासिख भाषाके सम्बन्धमें बहुत सतर्क और सावधान रहनेवाले व्यक्ति थे। इसका परिणाम यह हुआ कि लखनऊमें भाषा बहुत कुछ परिमार्जित हो गई। कविकी दृष्टिसे यद्यपि नासिख को कोई उच्च स्थान प्राप्त नहीं हो सका पर भाषाके शुद्ध प्रयोग और अलंकारोंका यथावसर प्रयोग उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। भाषाकी ओर विशेष ध्यान देनेके कारण भाषा तो अवश्य परिमार्जित हो गई, पर विचार और भावोंके स्थानपर लोगोंका ध्यान काव्यके बाह्य पक्ष शब्द-योजना तथा अलंकार-योजनापर ही केन्द्रित हो गया जो कालान्तरमें लखनऊके काव्यकी विशेषता बन गई।

नासिख की ही भाँति ख़्वाजा हैदरअली आतिश भी लखनऊके प्रसिद्ध कवियोंमें हुए हैं। आतिश के पिता ख़्वाजा अलीबख़्श नवाब शुजाउद्दौलाके समयमें दिल्लीसे फ़ैज़ाबाद चले गए। आतिश का वहींपर जन्म हुआ। बाल्यावस्थामें ही पिताका देहान्त हो गया जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त न कर सके। बड़े होनेपर नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद तक़ी ख़ाँ तरक़्क़ी के यहाँ नौकर हो गए और उन्हींके साथ लखनऊ चले आए। उस समय लखनऊमें इन्शा और मुसहफ़ी के बीच साहित्यिक संग्राम चल रहा था। आतिश मुसहफ़ी के शिष्य हो गए। पर कुछ ही दिनों बाद मुसहफ़ी से विवाद हो गया और तबसे अपना काव्य स्वयं ही ठीक करने लग गए।

नासिख़ और आतिश के समसामयिक होनेके कारण उस समयमें लखनऊके कवि भी दो भागोंमें बँट गए थे। कुछ लोग नासिख़ के प्रशंसकोंमें थे और कुछ आतिश के। परिणामस्वरूप इन दोनों महाकवियोंके बीच कभी-कभी नोंक-झोंक भी हो जाया करती थी। साथ ही भाषा और काव्यकी दृष्टिसे यह बड़ा काम हुआ कि इस प्रतिस्पर्धाके कारण दोनों महाकवि अपनी रचनाओंपर अधिक गम्भीरतासे ध्यान देने लग गए।

आतिश की भाषा बहुत सुन्दर सरल और प्रवाहपूर्ण है। नासिख़ और आतिश में सबसे बड़ा भेद यह है कि नासिख़ की भाषा जहाँ बनावटी रूपसे अलंकारोंसे लदी हुई है वहाँ आतिश की भाषा बहुत सरल तथा स्वाभाविक है। "आतिश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने भावोंको प्रभावपूर्ण तथा चित्ताकर्षक भाषामें व्यक्त करते हैं। आलोचकोंका कहना है कि इस दृष्टिसे मीर और ग़ालिब के बाद यदि किसीको स्थान दिया जा सकता है तो वे आतिश हैं।

नसीम का पूरा नाम पण्डित दयाशंकर कौल था। नसीम उनका उपनाम है। ये काश्मीरी ब्राह्मण थे। आतिश के शिष्योंमें इनका मुख्य स्थान है। वैसे इन्होंने ग़ज़ल भी लिखी। परन्तु इनकी प्रसिद्धि मसनवी गुलज़ारे नसीम के कारण है। उर्दूके मसनवी साहित्यमें मसनवी सेहरुलबयान के बा" सबसे प्रसिद्ध मसनवी यही नसीम की गुलज़ारे नसीम है। नसीम का ३२ वर्षकी आयुमें सन १८४३ ई में लखनऊमें देहान्त हुआ।

यद्यपि उर्दूके सारे काव्यमें जिस प्रकार ग़ज़लका सर्वाधिक प्रचलन रहा है उसी प्रकार लखनऊमें भी ग़ज़ल काव्य ही सर्वाधिक रचा गया है। पर जिस समय लखनऊ नासिख़ जैसे काव्याचार्योंके कारण काव्यके बाह्य रूपपर अधिक ध्यान देनेवाला था और रचनाओंमें स्वाभाविकताके स्थानपर कृत्रिमताका अधिक-से-अधिक प्रचार हो गया था। लखनऊके काव्याकाशमें दो ऐसे कवियोंका उदय हुआ जिनकी रचनाओंने उक्त असन्तुलित अवस्थामें सन्तुलन उत्पन्न कर दिया। ये दो कवि थे अनीस और दबीर। उस कालमें लखनऊके शासक शिया धर्मके माननेवाले थे अत: लखनऊके पूरे समाजपर एक प्रकारसे शिया वातावरण छाया हुआ था। मुहर्रमके दिनोंमें हजारों स्थानोंपर इमाम हुसैनके बलिदानसे सम्बन्धित मजलिसोंका होना लखनऊके जीवनमें व्याप्त था। इन मजलिसोंमें जो काव्य पढ़ा जाता है उसे मर्सिया कहा जाता है। मर्सियाका सीधा अर्थ यद्यपि शोक गीत है परन्तु रूढ़ अर्थ है इमाम हुसैन और उनके साथियोंके बलिदानसे सम्बन्धित शोक गीत।

यद्यपि जहाँ जहाँ शिया मुसलमानोंका प्रभाव रहा है वहाँ वहाँ इन मजलिसों व मर्सियोंमेंसे किसी-न-किसीका प्रचलन भी अवश्य रहा है। इसीलिये मर्सियोंका प्रचलन दक्षिणमें भी मिलता है। पर इसमें सन्देह नहीं कि मर्सियेको साहित्यिक महत्त्व

लखनऊमें ही प्राप्त हुआ। लखनऊमें भी सर्वाधिक अनीस और दबीर की रचनाओंमें।

अनीस' और दबीर के पूर्व लखनऊके मर्सिया कवियोंमें सर्वाधिक प्रसिद्ध दिलगीर फसीह खलीक और जमीर हुए हैं। इन्हीं चारों के सिवा अनीस और दबीर हुए जिन्हें निस्सन्देह मर्सियह काव्यका सूर्य और चन्द्र कहा जा सकता है।

अनीस का पूरा नाम मीर बबर अली था। अनीस इनका उपनाम है। इनके पिताका नाम मीर खलीक था। मीर खलीक फैजाबादमें रहते थे। फैजाबादमें ही मीर अनीसका सन् १८ ४ में जन्म हुआ। बड़े होनेपर अनीस अपने पिताके साथ फैजाबादसे लखनऊ चले आये जहांसे बाहर वे केवल इलाहाबाद बनारस हैदराबाद और पटना गये। लखनऊसे बाहर जाना वे पसन्द नहीं करते थे जब कभी बाहर जानेका प्रसंग आता था तो कहते कि मेरी कविताको इसी शहरके लोग ठीकसे समझ सकते हैं अन्य स्थानोंके लोग इसका क्या सम्मान करेंगे। लखनऊमें ही सन् १८७४ ई॰ में अनीस का देहान्त हुआ।

मर्सिये के दूसरे कवि मिर्जा सलामत अली दबीर थे। दबीर का जन्म दिल्लीमें हुआ। दबीर के पिता दिल्लीसे लखनऊ चले आये थे वहीं दबीर का सारा जीवन बीता। जैसा कि कहा जा चुका है अनीस और दबीर समकालिक कवि थे। अतः दोनोंमें प्रतिस्पर्धा भी होती रही और लखनऊके मर्सिया काव्यमें दिलचस्पी रखनेवाले लोग अनीसिये और दबीरिये के नाम से दो भागोंमें बंट गये। अनीस और दबीर के काव्यकी विशेषताओंके सम्बन्धमें यही कहा जा सकता है कि जिस प्रकार नासिख और आतिश की भाषा तथा वर्णन शैलीमें कृत्रिमता और स्वाभाविकता पायी जाती है उसी प्रकार अनीस और दबीर की रचनामें है। अनीस की रचनाओंमें जहां सरलता तथा स्वाभाविकता है वहां दबीर की रचनाओं में क्लिष्टता और कृत्रिमता। अनीस और दबीर की रचनाओंके इसी भेदने अनीस को लोकप्रिय बनाया और दबीर लोकप्रिय न हो सके।

जैसा कि कहा जा चुका है अनीस और दबीर के इस मर्सिया काव्य ने लखनऊके उस जीवनको जो हर प्रकारसे आमोद प्रमोद तथा विलासिता की ओर अग्रसर था और साहित्य भी जिसके लिए प्रेरक सिद्ध हो रहा था उसीकी गतिको मोड़ दिया। और इस प्रकार लखनऊकी भाषा और काव्यमें सन्तुलन आ गया।

आधुनिक-काल (पद्य) रामपुर और हैदराबाद

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्रामके विफल होने तथा अंग्रेजी राज्यके पूर्णरूपसे स्थापित हो जानेके बाद दिल्ली और लखनऊके उर्दू शायरोंके सामने जीवन यापन सम्बन्धी कठिन समस्यायें आ गयीं। राज्यके इस प्रकार परिवर्तित हो जानेके बाद

जब उनके लिये यह सम्भव न रह गया था कि पूर्ववत् अपने अपने स्थानोंपर रह
उसी प्रकार जीवन बिता सकते थे जिस प्रकार अभीतक बिताते आ रहे थे। अ
शायरोंकी दृष्टि आस पासके उन स्थानोंकी ओर गयी जहाँके शासक थोड़ी ब
साहित्यिक रुचि रखते थे।

इन स्थानोंमें जहाँ दिल्ली और लखनऊके शायर सन १८५७ ई० के
पहुँचे विशेष रूपसे जिनका उल्लेख किया जा सकता है वे इस प्रकार हैं —

फर्रुखाबाद अजीमाबाद मुर्शिदाबाद टाण्डा टोंक मंगरोल भोपा
रामपुर और हैदराबाद। इन स्थानोंमें सर्वाधिक महत्व रामपुर और हैदराबादका है

अन्य स्थानोंकी अपेक्षा रामपुरमें उर्दू शायर अधिक संख्यामें एकत्रित
इसका एक कारण तो यह था कि रामपुर दिल्ली और लखनऊके बीच है। दूसरा का
यह था कि रामपुरके शासकोंको स्वयं भी शायरीसे रुचि थी और वे शायरों
विद्वानोंको अपना नौकर न समझकर बराबरीका व्यवहार करते थे। नवाब यूसु
अलीखाँ स्वयं उर्दू और फ़ारसीके शायर थे। इसी प्रकार नवाब यूसुफ़अली के
उनके पुत्र नवाब कल्बेअलीखाँ भी शायरों तथा साहित्यिकोंका बड़ा सम्मान करते
इसका परिणाम यह हुआ कि रामपुरमें दिल्ली और लखनऊके शायरोंका एक अच
समुदाय एकत्रित हो गया और इस प्रकार रामपुर दिल्ली और लखनऊका
स्कूल बन गया।

यों जैसा कि कहा जा चुका है कि रामपुरमें दिल्ली और लखनऊसे आ
हुए शायरोंकी अच्छी संख्या एकत्रित हो गयी थी पर इनमेंसे अधिक ख्याति प्रा
शायर इस प्रकार हैं —

मीर मुज़फ़्फ़र अली असीर शेख इमदाद अली बहर मुन्शी अमी
अहमद अमीर मिर्ज़ाखाँ दाग़ जलाल तस्लीम कल्क हय
'साकिब शादाँ आदि। इनमें मुन्शी अमीर अहमद अमीर मीनाई अ
मिर्ज़ाखाँ दागका सर्वाधिक महत्त्व है।

अमीर सन् १८२८ ई० में नसीरुद्दीन हैदर के राज्य कालमें लखन
पैदा हुए। ये लखनऊके प्रसिद्ध मुस्लिम सन्त मख़दूम शाह मीना जिनकी समा
लखनऊमें है—के वंशज हैं। इसीकारण मीनाई कहलाते हैं। बाल्यकालमें
इनको शायरीका शौक पैदा हो गया था। इनका समय भी वह है जब लखनऊ
वातावरण शायरीसे भरा हुआ था। लखनऊके इस प्रकारके वातावरणने अमी
मीनाईको भी प्रभावित किया और वह भी थोड़े ही समयके अभ्यासमें एक अच्छे शाय
रूपमें प्रसिद्ध हो गये। सन् १८५२ ई० में इनकी ख्याति तत्कालीन शासक नव
वाजिद अलीके दरबारमें पहुँची। राज्यकी ओरसे इनको बुलाया गया तथा इन

रचनायें पुरी गयीं और वे दरबारसे सम्बद्ध हो गये। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद अर्थात् १८५७ ई. में जब नवाब वाजिद अली शाहको गिरफ्तार करके कलकत्ते भेज दिया गया और लखनऊका खेल बिगड़ गया तो उन अनेक शायरोंकी भी स्थिति बिगड़ गयी जिनका दरबारसे सम्बन्ध था। पर कुछ दिनोंके बाद अमीर मीनाईको रामपुरके तत्कालीन शासक नवाब यूसुफ अलीखाँने रामपुर बुला लिया जहाँ अमीर ४१ वर्ष तक आदर तथा सम्मान पूर्वक रहे। अन्तमें १९०० ई. में वे हैदराबाद गये वहाँ कुछ दिनोंके बाद बीमार हुए और बिहत्तर वर्षकी आयुमें इनका देहान्त हो गया।

अमीर की रचनाओंकी पर्याप्त संख्या है गद्य और पद्य दोनों ही उन्होंने लिखा है। वे केवल एक अच्छे शायर ही नहीं प्रत्युत भाषा और काव्यके मर्मज्ञ भी थे।

उर्दूके दूसरे शायर जिनका रामपुर और फिर हैदराबादके दरबारसे सम्बन्ध रहा है तथा जो विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं वे हैं दाग देहल्वी। दाग का पूरा नाम मिर्जाखाँ था दाग उनका उपनाम है। सन् १८३१ ई. में दिल्लीमें पैदा हुए। दाग के पिताका नाम नवाब शम्सुद्दीनखाँ था। ये नवाब जियाउद्दीन खाँ लोहारूके शासकके भाई थे। नवाब शम्सुद्दीनखाँका देहान्त जिस समय हुआ उस समय दाग की आयु केवल सात वर्ष की थी। पिताके देहान्तके बाद दाग की माताने मिर्जा मुहम्मद सुल्तान उर्फ मिर्जा फखरू बहादुर शाहके पुत्रसे विवाह कर लिया। इस प्रकार माताके साथ दाग लाल किले पहुँचे। लाल किला जहाँ उन दिनों शायरीकी चर्चा रहती थी दाग का पालन पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा हुई।

सन् १८५६ ई. में दागके पिता मिर्जा फखरूका देहान्त हो गया। इसके एक ही वर्ष बाद सन् १८५७ ई. का वर्ष आया जिसमें हजारों लाखों दिल्लीवालोंको दिल्ली छोड़ना पड़ा दाग भी अपने कुटुम्ब सहित दिल्लीसे निकलकर रामपुर पहुँचे। इस समय नवाब यूसुफअलीखाँ वहाँ राज्य करते थे जो दाग को पहलेसे जानते थे। दाग युवराज नवाब कल्बेअलीखाँ के मुसाहिब और अस्तबलके दारोगा नियुक्त किये गए थे। दाग २४ वर्ष तक रामपुरमें रहे। रामपुरका जीवन इनका सुख शान्तिका जीवन था कि दाग रामपुरको आरामपुर कहते थे। सन् १८८७ ई. में नवाब कल्बेअलीखाँकी असामयिक मृत्युने दाग की सारी आशाओंपर पानी फेर दिया और उन्हें रामपुर छोड़ना पड़ा। दाग रामपुर छोड़कर दिल्ली पहुँचे। दिल्लीमें कुछ दिन रहनेके बाद सन् १८८८ ई. में हैदराबाद पहुँचे। पर इस यात्रामें उनकी इच्छानुसार कोई काम न बन सका अतः फिर दिल्ली चले गये। तीन वर्षके बाद फिर हैदराबाद गये। इस बार उनकी मनोकामना पूरी हुई। पहले पहल उनको साढ़े चार सौ रुपये मासिक वेतन दिया गया पर कुछ ही दिनोंमें एक हजार

मासिक और फिर पन्द्रह सौ मासिक हो गये। दाग लगभग ग्यारह वर्ष हैदराबादमें रहे। सन् १९०५ ई० में हैदराबादमें ही दाग का देहान्त हुआ।

दाग के कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं गुलजारे दाग आफ़ताबे दाग महताबे दाग और यादगारे दाग ये चार दागकी गजलोंके संग्रह हैं। फरयादे दाग नामसे एक मसनवी भी है। इन रचनाओंके अलावा नवाब रामपुर और निजामकी प्रशंसामें कुछ कसीदे हैं और एक शहरे आशोब दिल्लीकी बरबादीसे सम्बन्धित रचना है।

जिस प्रकार मीर व सौदा ज़ौक व 'ग़ालिब' इन्शा व मुसहफ़ी आतिश व नासिख और अनीस व दबीर आदि समसामयिक कवियोंमें परस्पर प्रतिद्वन्द्विता रही है उसी प्रकार अमीर और दाग भी समसामयिक प्रतिद्वन्द्वी कविके रूपमें प्रसिद्ध हुए हैं। निस्सन्देह अमीर और दाग की प्रतिद्वन्द्विता का सम्बन्ध व्यक्तिगत सीमा तक कभी नहीं पहुँचा और न कोई ऐसी घटना घटी है जिससे यह कहा जा सके कि उक्त शायरोंमें एक दूसरेके प्रति किसी प्रकारका मनोमालिन्य रहा है। हाँ अमीर और दाग के शिष्य जिनकी पर्याप्त संख्या थी अवश्य ही अपने गुरुकी रचनाओंकी प्रशंसामें विपक्षी की थोड़ी बहुत आलोचना कर दिया करते थे। परन्तु न तो अमीर ने और न दाग ही ने इस प्रकारकी आलोचनाओं को कभी पसन्द किया है।

दाग की गजलें प्रसाद गुण युक्त हैं उर्दू भाषाका चलता हुआ प्रवाहपूर्ण रूप दाग की गजलोंकी सबसे बड़ी विशेषता है।

हैदराबाद

उर्दू भाषा और साहित्यके विकासकी दृष्टिसे रामपुरके अतिरिक्त जिस स्थानको विशेष महत्त्व प्राप्त है वह निस्सन्देह हैदराबाद है।

जिस प्रकार उर्दू भाषा और साहित्यके विकासका प्रारम्भिक काल हैदराबाद है उसी प्रकार उर्दू भाषा और साहित्यके आधुनिक कालका सम्बन्ध भी हैदराबादसे है।

निजामुलमुल्क आसफजाह प्रथम (१६७१ ई०–१७४८ ई०) जिनका नाम मीर कमरुद्दीन खाँ था। फ़ारसीके शायर थे। फ़ारसीमें उनके दो काव्य-संग्रह हैं। सम्भव है उर्दूमें भी उन्होंने रचनाकी हो पर वह प्राप्त नहीं है।

आसफजाही राजवंशमें मीर महबूब अली खाँ आसफजाह षष्ठ और उनके पुत्र मीर उस्मान अलीखाँका काल उर्दू भाषा और साहित्यकी उन्नति तथा विकासकी दृष्टिसे उल्लेखनीय है। यद्यपि दिल्ली और लखनऊसे हैदराबादके बहुत दूर होनेके कारण उस्ताद 'ज़ौक' यह कहते रहे कि —

इन दिनों गरचे दकनमें है बड़ी कद्रे सखुन।
कौन जाय 'ज़ौक' पर दिल्लीकी गलियाँ छोड़कर॥

हैदराबाद न पहुँचे पर फिर भी हैदराबाद (दकन) की कद्रे सखुनने बहुतोंको अपना अपना स्थान छोड़नेके लिये विवश कर दिया। जैसा कि लिखा जा चुका है उर्दूके दो प्रसिद्ध शायर 'अमीर' और 'दाग' को इस कद्रे सखुनने खींच ही लिया था। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रसिद्ध शायर और साहित्यिक समय समयपर हैदराबाद की ओर खिंचते रहे और वहाँ उनको स्थान मिलता रहा। प्रसिद्ध विद्वान सय्यद अली बिल्ग्रामी मौलाना शिबली नोमानी मौलाना हाली' पण्डित रतननाथ 'सरशार' मौलवी अब्दुल हलीम शरर आदि बहुतसे साहित्यिक हैदराबाद दरबारसे सम्बन्धित रहे। तथा इसी प्रकार बहुतोंको हैदराबादसे आर्थिक सहायता मिलती रही है।

यद्यपि रामपुर और हैदराबादकी रियासतोंने दिल्ली और लखनऊके शायरों-को आश्रय दिया और इस प्रकार शायर परम्परागत रूपमें शायरी करते रहे परन्तु इनके साधनोंकी एक सीमा थी। अतः उक्त रियासतोंमें न तो सारे शायर और साहित्यिक आश्रय ही पा सकते थे और न यही सम्भव था कि जिनको आश्रय प्राप्त था उनको स्थायी रूपसे वह प्राप्त ही रहता। ऐसी दशामें बार-बार शायरोंको आश्रय प्राप्त करनेके लिए इधर उधर दौड़ना पड़ता था। परिणाम-स्वरूप शायरोंको कल्पनाओंके अतिरिक्त यथार्थकी पथरीली भूमिका भी अनुभव प्राप्त हुआ। दूसरी ओर अँग्रेजी शासनकी स्थापनाके साथ-साथ अँग्रेजी शिक्षाका भी प्रचार हुआ। जिस प्रकार अँग्रेजी शासन केवल एक जातिका दूसरी जातिपर शासन मात्र ही न था उसी प्रकार अँग्रेजी भाषाकी शिक्षा किसी विशिष्ट भाषाकी शिक्षा मात्र ही न थी। प्रत्युत अँग्रेजी शासनके माध्यमसे जहाँ हमारा सम्पर्क आधुनिकताके साथ हो गया वहाँ अँग्रेजी भाषाने हमें आधुनिक विचार तथा दृष्टिसे परिचित कराया।

यह देश यद्यपि अँग्रेजोंसे पूर्व विदेशियोंके सम्पर्कमें आ चुका था पर वह विदेशी एशियाई देशोंके ही रहनेवाले थे इसलिए एक सीमा तक ही उस सम्पर्कने देशवासियोंके संस्कारोंको झकझोरा था। पर अँग्रेजोंका सम्पर्क ऐसा न था वे एक योरपीय जातिके लोग थे। उस योरपीय जातिके यहाँ आधुनिकताका सम्पूर्ण रूपमें उदय हो चुका था। अतः अँग्रेजोंके सम्पर्कमें तथा अँग्रेजी भाषाकी शिक्षाने हमारे जीवनके प्रत्येक क्षेत्रको न केवल झकझोराही प्रत्युत प्रभावित भी किया।

अँग्रेजी भाषाके साथ-साथ जब अँग्रेजी साहित्यका परिचय मिला तो मानो हमारी आँखें खुल गयीं। अभी तक हम साहित्यको केवल पद्यबद्ध रचना ही समझते थे। अन्य भाषाओंकी तरह ही उर्दूमें भी एक प्रकारकी पद्यात्मक रचना जिसे गद्य कहा जाता है चली आ रही थी जो उस जीवनके अनुरूप न थी जो अँग्रेजी राज्यके कारण उत्पन्न हो रहा था। अँग्रेजी साहित्य न केवल कोई विशिष्ट प्रकारके पद्यका ही साहित्य था प्रत्युत उसमें पद्यके अतिरिक्त कहानी उपन्यास नाटक निबन्ध आदि अनेक प्रकारकी रचनाएँ थीं। स्वभावतः उर्दूका शायर और साहित्यिक भी उर्दूमें इस प्रकारका साहित्य रचनेकी बात सोचने लगा।

अंग्रेजी राज्यकी स्थापना और अंग्रेजी भाषाकी शिक्षाके बाद उत्पन्न परिस्थितिके अनुसार जिन लोगोंने उर्दू कविताका दिशा-परिवर्तन किया है उनमें सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद और मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली हैं।

निस्सन्देह उर्दू शायरीके दिशा परिवर्तन करनेवाले ये दोनों महानुभाव ऐसे न थे कि जिनका अंग्रेजी भाषा और साहित्यसे कोई विशेष परिचय था वह अंग्रेजी साहित्यकी रूप रेखासे उन अनुवादोंके द्वारा ही परिचित हुए थे जो अंग्रेजी राज्यकी ओर से कराये गये थे। पर इन अनुवादोंसे आधुनिकताके साथ साथ उनको उर्दू साहित्यकी त्रुटियोंका भी पता चल गया। परिणाम स्वरूप उन्होंने उर्दू काव्यको एक ऐसा रूप देना चाहा जो अपनी सारी परम्परासे भिन्न न होते हुए भी आधुनिक जीवनकी माँगको पूरी कर सके।

मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद सन् १८१२ या १८३३ ई में दिल्लीमें पैदा हुए। पिताका नाम मौलवी मुहम्मद बाकर था। मौलवी मुहम्मद बाकरका उस्ताद जौक से मित्रताका सम्बन्ध था अतः उन्होंने आजाद को जौक की सेवामें दे दिया। आजाद ने जौक की ही देखरेखमें प्रारम्भिक शिक्षा पायी और काव्य ज्ञानसे भी परिचय प्राप्त किया।

सन् १८५७ ई में पिता मारे गये जौक की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। जब दिल्लीमें कोई सहायक तथा सम्बन्धी न रह गया तो आजीविकाकी खोजमें आजाद लाहौर चले गये वहां वे शिक्षा विभागमें नौकर हो गये। थोड़े ही दिनोंमें अतालीक पंजाब नामक पत्रके सहायक सम्पादक हो गये। शिक्षा विभागने इनसे कससुल हिन्द तथा अन्य नई पुस्तकें लिखवाईं।

अगस्त सन् १८६७ ई में आजाद ने एक व्याख्यानमें कविताके सम्बन्धमें अपने नये विचार प्रकट किये जिसमें उन्होंने उर्दू और फारसी काव्यकी त्रुटियोंकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया। इन्हीं विचारोंके प्रचारके लिए कुछ दिनों बाद लाहौरमें अंजुमने पंजाब नामक एक संस्थाकी स्थापना हुई जिसके तत्वावधानमें ८ मई सन् १८७४ ई को वह पहला मुशायरा (कवि सम्मेलन) हुआ जिसमें नये विचारोंके अनुसार जीवन और प्रकृति वर्णनसे सम्बन्धित कविताएँ पढ़ी गईं। कवि सम्मेलनके पूर्व आजाद ने भाषण दिया जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूपमें कहा कि कवितामें वास्तविकता तथा स्थानीयता अवश्य होनी चाहिये।

आजाद की कुछ कविताओंका संग्रह उनके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने सन् १८९९ ई में प्रकाशित कराया है।

आजाद के अतिरिक्त मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली का स्थान है। हाली सन् १८३७ ई में पानीपतमें पैदा हुए। हाली के पिताका नाम ख्वाजा ईजद बख्श था। हाली अभी नौ वर्षके हुए थे कि इनके पिताका देहान्त हो गया।

'हाली' की शिक्षा दीक्षाका प्रबन्ध इनके बड़े भाई और बहनने किया। सत्रह वर्षकी आयुमें 'हाली' का विवाह हुआ। सन् १८५४ ई. में 'हाली' चुपकेसे दिल्ली चले गये। दिल्लीमें नवाजिश अलीसे कुछ दिनों तक अरबी भाषाका अध्ययन किया। सन् १८५५ ई. में पानीपत लौट आये। सन् १८५६ ई में हिसार कलक्टरीमें नौकरी कर ली पर १८५७ में फिर वापस पानीपत चले गये। तीन चार वर्ष पानीपतमें रहनेके बाद नवाब मुस्तफा खाँ 'शेफ्ता' से मुलाकात हो गई। शेफ्ता के साथ जहाँगीराबाद जिला बुलन्दशहरमें 'हाली' आठ वर्ष तक रहे। वहाँसे वे लाहौर पहुँचे वहाँ गवर्नमेन्ट बुक डिपोमें एक नौकरी मिल गयी। यहाँ 'हाली' को अंग्रेजीसे उर्दूमें अनूदित पुस्तकोंकी भाषा शुद्ध करना पड़ता था। जिससे उन्हें आधुनिक विचारोंकी जानकारी प्राप्त हो गई। चार वर्षके बाद 'हाली' फिर दिल्ली पहुँचे वहाँ उनको ऐंग्लो अरेबिक स्कूलमें शिक्षकका स्थान मिल गया। यहीं सर सय्यद अहमद खाँ से उनका परिचय हुआ। सर सय्यद अहमदखाँ के अनुरोधसे 'हाली' ने मद्दो-जजरे-इस्लाम नामक काव्य लिखा जो मुसद्दसे हाली के नामसे प्रसिद्ध है।

'हाली' की अन्य रचनाओंमें मुनाजाते बेवा, बरखारुत, चुपकी दाद, निशाते उम्मीद तथा दीवाने हाली अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

'हाली' मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद द्वारा स्थापित अंजुमने पंजाब के मुशायरोंमें भी सम्मिलित हुआ करते थे। 'हाली' ने अपनी चार कविताएँ बरखारुत, निशाते उम्मीद, मनाजिरये रहम-ओ-इन्साफ और हुब्बेवतन इसी अंजुमनके मुशायरेमें पढ़ी थी।

सन् १९०४ ई में 'हाली' को शम्सुल-उलमाकी उपाधि मिली। सन् १९१४ ई. में 'हाली' का पानीपतमें ही स्वर्गवास हो गया।

इस कालके कवियोंमें अकबर इलाहाबादीका स्थान सबसे अलग है। अकबरकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने उर्दूमें जिस प्रकारकी रचना की है उस प्रकारका व्यंग न तो उनके पूर्व किसीने किया है और न बादमें ही कोई सफलतापूर्वक उसका अनुकरण कर सका। अकबरकी रचनाओंमें वह सारा असन्तोष झलकता है जो अंग्रेजी राज्यके विरुद्ध तत्कालीन मुस्लिम समाजमें था। अकबर यद्यपि सरकारी नौकर थे पर उनका जीवन होते हुए अंग्रेजी ही नहीं अंग्रेजी राज्यके माध्यमसे आनेवाली सारी बातोंका विरोधी था। अकबर यदि सरकारी नौकरीमें न होते और खुलकर सारी बातें कह पाते तो निःसन्देह वे इतने बड़े सफल व्यंग्य लेखक न होते। अकबरके समसामयिक व्यक्तियोंमें सर 'सय्यद' और 'हाली' भी थे। सर सय्यद इस विचारधाराका प्रतिनिधित्व कर रहे थे कि मुसलमानोंको अब न अंग्रेजी राज्यके प्रति विरोध और असन्तोष प्रकट करनेमें लाभ हो सकता है और न अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी विद्यालयोंके बहिष्कारमें। बल्कि वे इस पक्षमें थे कि मुसलमानोंको अंग्रेजी राज्यके साथ सहयोग करना चाहिये और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके सरकारी

नौकरियोंमें जाना चाहिये। इसी उद्देश्यको सम्मुख रखकर उन्होंने अलीगढ़ कालेजकी स्थापना की थी पर अकबर किसी रूपमें भी यह माननेको तैयार न थे। यद्यपि स्वयं सरकारी नौकरीमें थे। इस प्रकार अकबर मुसलमानोंकी उस मनोवृत्तिका अपने काव्यमें प्रतिनिधित्व करते थे जो मुस्लिम शासनकी समाप्तिके कारण मुसलमानोंमें उत्पन्न हो गई थी। इसी मनोवृत्तिका प्रतिनिधित्व उलमा राजनीतिके क्षेत्रमें कर रहे थे।

अकबर इलाहाबादीका पूरा नाम अकबर हुसैन था। अकबर सन् १८४९ ई० में इलाहाबादकी तहसील बारामें पैदा हुए। सन् १८६६ में मुख्तियारीकी परीक्षामें सफल हुए जिससे नायब तहसीलदार बना दिये गये। सन् १८७० ई० में हाईकोर्टमें जगह मिल गयी और उन्होंने वकालतकी परीक्षा पास कर ली। कुछ समय तक वकालत करनेके बाद जज हो गये। सन् १९०३ ई० तक अकबरका न्यायालय विभागसे किसी-न-किसी रूपमें सम्बन्ध बना रहा। इसी बीच उनको खान बहादुरकी उपाधि भी मिल गई और इलाहाबाद विश्वविद्यालयके फेलो भी चुन लिए गये। सन् १९२१ ई० में अकबरकी मृत्यु हुई।

अकबर की रचनाओंके कई संग्रह निकल चुके हैं उनकी रचनाओंका प्रचार भी पर्याप्त है। अकबरकी रचनाओंको ठीकसे समझनेके लिए इस्लाम धर्म तथा भारतीय मुसलमानोंकी संस्कृतिके साथ ही अकबरके कालकी राजनैतिक तथा सामाजिक दशाका ज्ञान भी आवश्यक है।

इस कालके अन्य कवियोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय मुहम्मद इस्माईल मेरठी मुन्शी दुर्गा सहाय सुरूर पं० बृजनारायण चकबस्त और डा० मुहम्मद इकबाल हैं। मुहम्मद इस्माइल मेरठी १२ नवम्बर १८४४ ई० में मेरठमें पैदा हुए। सोलह वर्षकी आयुमें शिक्षा विभागमें नौकर हो गये। सन् १८९९ ई० में पेन्शन ली और सन् १९१७ ई० में उनका देहान्त हो गया। इस्माइल मेरठीकी पाठ्य पुस्तकोंका वही स्थान है जो मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद की पाठ्य पुस्तकोंका पंजाबमें रहा है। इनकी पाठ्य पुस्तकें प्रवाह पूर्ण भाषा और विषयकी दृष्टिमें अत्यधिक महत्वपूर्ण रही हैं।

सुरूर जहानाबादमें सन् १८७३ ई० में पैदा हुए। ३७ वर्षकी अवस्थामें सन् १९१० ई० में सुरूर का देहान्त हो गया। जामे सुरूर और खुमखानये सुरूर नामक उनकी रचनाओंके संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

चकबस्त सन् १८८२ ई० में फ़ैज़ाबादमें पैदा हुए। सन् १९०८ ई० में चकबस्त ने वकालत शुरू की और सन् १९२६ ई० में उनका देहान्त हो गया। सुबहे वतन नामक उनका काव्य संग्रह बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता तथा देशभक्तिसे परिपूर्ण रचनाएँ की हैं जिनका एक समयमें बड़ा महत्व था।

डा. मुहम्मद इक़बाल उर्दूके उन महान कवियोंमें हैं जिनकी संख्या अधिक नहीं है। इक़बाल केवल कवि ही न थे प्रत्युत् वे एक बहुत बड़े विचारक थे। इक़बालकी सामान्य रचनाओंको देखकर उनके सम्बन्धमें किसी प्रकारका निर्णय करना इक़बालके प्रति अन्याय करना ही है। परन्तु बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि इक़बालके प्रति यह अन्याय बहुत दिनोंसे होता आ रहा है और इक़बालके प्रशंसक और विरोधी दोनों ही अपने अपने ढंगसे इस अन्यायमें भाग लेते रहे हैं। इक़बालके द्वारा कहा हुआ निम्न शेर उनके प्रति लोगोंके दृष्टिकोण और उनकी वास्तविक स्थितिको शायद बड़े मार्मिक ढंगसे व्यक्त करता है —

ज़ाहिदे तंग नज़रने मुझे काफ़िर जाना।
और काफ़िर यह समझता है मुसल्माँ हूँ मैं॥

तात्पर्य यह कि इक़बालके काव्यको समझनेके लिए गहरे अध्ययनकी आवश्यकता है। ऐसा गहरा अध्ययन जो पूर्वी और पश्चिमी दर्शन शास्त्र धर्मशास्त्र विज्ञान इतिहास तथा राजनीति आदि विषयोंको आत्मसात् कर ले। बल्कि इक़बालको समझनेके लिए इस्लामी विचारधाराओं और इतिहासके साथ प्लेटो नीत्शे बर्गसाँ और आइनस्टीनसे भी भलीभाँति परिचित होना आवश्यक है।

इक़बाल सन् १८७४ ई. में सियालकोट (पंजाब) में पैदा हुए। प्रारम्भिक शिक्षा उन्हें सियालकोटमें प्राप्त हुई। बादमें लाहौर चले गए। दर्शन शास्त्रमें एम. ए. कर लेनेके बाद उच्च शिक्षाके लिए इंग्लैण्ड गए जहां उन्होंने बैरिस्टरी की पास कर ली तथा जर्मनीसे दर्शन शास्त्रमें पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त की। वहांसे वापस आनेके बाद उन्होंने लाहौरमें बैरिस्टरी शुरू कर दी। उन्होंने कुछ दिनों तक पंजाबकी राजनीतिमें भी भाग लिया। सन् १९३१ में भारतके मुसलमानोंके प्रतिनिधियोंके रूपमें वे गोलमेज परिषदमें भी सम्मिलित हुए। सन् १९३५ ई. से इक़बालका स्वास्थ्य बिगड़ने लग गया और सन् १९३८ ई. में अप्रैल मासमें उनका स्वर्गवास हो गया।

इक़बालने उर्दू और फ़ारसी दोनोंमें रचनाएँ की हैं। उर्दू रचनाओंमें बांगे-दरा बाले-जिब्रील ज़र्बे कलीम और अरमुग़ाने हिजाज़ हैं। फ़ारसीमें उनकी अनेक रचनाएँ हैं। इक़बालके साहित्यको पूर्ण रूपसे समझनेके लिये फ़ारसी भाषाका ज्ञान भी आवश्यक है।

इस कालके अन्य उल्लेखनीय कवियोंमें कुछके नाम इस प्रकार हैं शाद अज़ीमाबादी रियाज़ ख़ैराबादी साक़ी लखनवी आरज़ू लखनवी

ज़ाहिदे तंग नज़र–संकीर्ण दृष्टिवाला धार्मिक व्यक्ति। काफ़िर–विधर्मी धर्म शत्रु।

फ़ानी बदायूनी सीमाब अकबराबादी असग़र गोंडवी जिगर मुरादाबादी हसरत मोहानी नूह नारवी आदि।

आधुनिक काल पद्य—२

उर्दूके शायरोंमें इस नई डगर पर चलनेवाले शायरोंकी सूची पर्याप्त लम्बी है। जिसमेंसे प्रत्येकका नामोल्लेख करना भी यहाँ सम्भव नहीं है। जो शायर अधिक प्रसिद्ध हो चुके हैं उनके नाम इस प्रकार हैं —

जोश मलीहाबादी हफ़ीज़ जालंधरी सागर निज़ामी अख़्तर शीरानी फ़िराक़ गोरखपुरी रविश सिद्दीक़ी एहसान दानिश फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ मजाज़ लखनवी जाँनिसार अख़्तर, अलीसरदार जाफ़री साहिर लुधियानवी कैफ़ी आज़मी मजरूह सुल्तानपुरी अर्श मलसियानी जगन्नाथ आज़ाद ।

जोशके काव्य संग्रह हैं — शोला-ओ-शबनम नक़्श-ओ-निगार फ़िक्र-ओ-निशात हर्फ़-ओ-हिकायत रामिश-ओ-रंग सुम्बुल-ओ-सलासिल सुमूम-ओ-सबा सरोश-ओ-ख़रोश ।

जोश हर्फ़े आख़िर नामक एक बड़ा काव्य लिख रहे हैं जिसमें मनुष्य के वैज्ञानिक विकासका विश्लेषण है।

हफ़ीज़ जालंधरी जालंधर पंजाब के रहनेवाले शायर हैं। इनके अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। शाहनामए इस्लाम उनकी ऐसी रचना है जिससे वे बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं।

सागर निज़ामी मेरठके रहनेवाले हैं। ये सीमाब अकबराबादीके शिष्य हैं इनकी भाषा भी सरल बोलचालकी भाषा है राष्ट्रीय विषयोंपर तथा राष्ट्रीय नेताओंपर इनकी रचनाएँ हैं। इनके बादए-मशरिक़ मौज-ओ-साहिल तथा रंग महल तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

अख़्तर शीरानी टोंकके रहनेवाले थे। युवावस्थामें ही उनका देहान्त हो गया। उर्दूके स्वच्छन्दतावादी कवियोंमें अख़्तर शीरानीका उच्च स्थान है। इनके ६–७ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

रविश *सिद्दीक़ी ज्वालापुरके रहने वाले हैं आजकलके* शायरोंमें रविश का ऊँचा स्थान है। रविश की भाषा फ़ारसी मिश्रित है और इक़बालसे प्रभावित है।

फ़िराक़ गोरखपुरीका पूरा नाम रघुपति सहाय है। फ़िराक़ उनका उपनाम है। उर्दूके वर्तमान कवियोंमें फ़िराक़ का स्थान बहुत ऊँचा है। फ़िराक़ की ग़ज़ल और रुबाइयाँ न केवल प्रसिद्ध ही हैं प्रत्युत काव्यकी दृष्टिसे भी बहुत उच्च हैं। फ़िराक़ उर्दूके उन कवियोंमें हैं जो अंग्रेजी साहित्यसे भी भली-

भाँति परिचित हैं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञानसे भी अच्छी वाकफ़ियत है। इनके कायनात मशअल रम्ज़-ओ-किनायात शोला-ए-साज़ ग़ज़लिस्तान 'फ़िराक़' की ग़ज़लोंके संग्रह हैं तथा रूप रुबाइयोंका संग्रह है।

एहसान दानिश भी एक अच्छे कवि हैं। किसान और मज़दूरोंके जीवन पर इनकी रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इनके भी कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' प्रगतिशील कवियोंमें सबसे अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियोंमें हैं अँग्रेज़ी साहित्यके साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञानसे भी वे अच्छी तरह परिचित हैं। इधर पाकिस्तान बननेके बाद बहुत दिनों तक वे अपने विचारोंके कारण पाकिस्तानकी जेलोंमें रह चुके हैं। प्रगतिशील विचारके कवियोंपर सबसे अधिक फ़ैज़ का ही प्रभाव पड़ा है। फ़ैज़ के दो काव्य संग्रह नक़्श-ए-फ़रियादी और दस्त-ए-सबा प्रकाशित हो चुके हैं।

मजाज़ का पूरा नाम असरारुल हक़ है। मजाज़ उपनाम है। मजाज़ का स्थान भी बहुत ऊँचा है। अलीगढ़में शिक्षा प्राप्त करनेके बाद कुछ दिनों तक ऑल इण्डिया रेडियोमें नौकर रहे पर अपने प्रगतिशील विचारोंके कारण शीघ्र ही उन्होंने नौकरी छोड़ दी। मजाज़ की कविताओंका एक संग्रह आहंग नामसे प्रकाशित हो चुका है। प्रगतिशील कवियोंमें वे बड़ी ही कोमल भावनाओंके कवि थे। उनकी रचनाओंमें तत्कालीन भारतीय युवक समाजकी आशाओं उमंगों कल्पनाओंका प्रतिबिम्ब मिलता है। सन् १९५५ ई० में उनकी अकाल मृत्यु हो गई।

जाँ निसार अख़्तर भी प्रगतिशील कवियोंमें हैं। इनका भी अच्छा स्थान है। अलीगढ़में शिक्षा समाप्त करके ग्वालियर और भोपालके कालेजोंमें अध्यापन कार्य किया है। उनकी दो रचनाएँ सलासिल और जाविदाँ प्रसिद्ध हैं।

अली सरदार जाफ़रीका स्थान भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मजाज़ के साथियोंमें अली सरदार जाफ़रीका स्थान बहुत ऊँचा है। उनकी रचनाएँ साम्यवादी विचार-धारामें प्रवाहित हैं। उन्होंने कविताको उन आदर्शोंकी प्राप्तिका एक प्रकारसे साधन ही बना लिया है जिनपर वे विश्वास रखते हैं। अली सरदार जाफ़री के कई काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमेंसे मुख्य ये हैं —

अम्न का सितारा ख़ूनकी लकीर पत्थरकी दीवार एशिया जाग उठा तथा नई दुनियाको सलाम।

साहिर लुधियानवी भी एक उच्च कोटिके कवि हैं। तल्ख़ियाँ नामका उनका एक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है। ताजमहल नामक उनकी एक कविता बहुत लोकप्रिय है।

कैफ़ी आज़मी लोकप्रिय तथा प्रगतिशील कवि हैं। झंकार आख़िरी शब नामक दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

मजरूह सुल्तानपुरीकी सिनेमा जगतसे सम्बन्ध होनेके कारण अच्छी ख्याति है। वैसे भी ये एक अच्छे कवि हैं। गज़ल नामक उनका एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है।

अर्श का पूरा नाम बालमुकुन्द है। अर्श उनका उपनाम है। इनके हफ्त रंग और चंग-ओ-आहंग काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल ये केन्द्रीय सरकारके उर्दू मासिक आजकल के सम्पादक हैं।

जगन्नाथ आज़ाद पंजाबके प्रसिद्ध उर्दू कवि हैं। उनके पिता तिलोकचन्द महरूम भी उर्दूके प्रसिद्ध कवि थे। आज़ाद की बेकराँ और सितारों से ज़र्रों तक दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

उर्दू गद्यका प्रारम्भ

उर्दू-ए-क़दीम के लेखक मौलाना अब्दुल हक़के अनुसार उर्दू गद्यकी प्रारम्भिक रचनाएँ शेख ऐनुद्दीन गंजुल इल्म (मृत्यु सन् १३९२ ई०) की पुस्तिकाएँ हैं। पर ये पुस्तिकाएँ अभी तक प्राप्त नहीं हो सकीं इसलिए निश्चित रूपमें इनके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कहा जा सकता। पर ख्वाजा बन्दानेवाज़ गेसूदराज़ (सन् १३९८ ई०) की रचना मेराज-उल-आशेक़ीन जो कि प्राप्त हो चुकी है उर्दू गद्यकी पहली रचना ठहरती है। मेराज-उल-आशेक़ीन के बाद लगभग सौ वर्षोंतक किसी गद्य रचनाका पता नहीं चलता। सौ वर्षोंके बाद जो दूसरी गद्य रचना प्राप्त होती है वह बीजापुरके शाह मीराँजी शम्स-उल-उश्शाक़ की रचना शरह मरगूब-उल-कुलूब है। यह रचना सन् १४९६ ई० के लगभग की है।

प्रारम्भिक कालकी तीसरी गद्य रचना शाह बुर्हानुद्दीन जानमकी कलमत-उल-हक़ायक़ है इसका रचना काल भी सन् १५८२ ई० के पूर्व है।

चौथी रचना सन् १६२२ की अहकाम-उस्सलात है इसके रचयिताका नाम मौलाना अब्दुल्लाह है।

दक्षिण भारतकी दक्खिनी रचनाओंमें सब रस सबसे प्रसिद्ध तथा साहित्यिक रचना है। इसका रचना काल सन् १६३५ ई० है और रचयिताका नाम मुल्ला वजही है।

इस कालकी कुछ अन्य रचनाओंका भी पता चलता है पर विशेष रूपसे उल्लेखनीय रचनाएँ नहीं हैं। सबरस के अतिरिक्त अन्य रचनाओंका विषय धार्मिक है तथा धार्मिक उद्देश्योंको सम्मुख रख कर रची गई है। सबरस ही एकमात्र साहित्यिक रचना है।

उत्तर भारतकी सबसे पहली गद्य रचना शाह फ़ज़लुल्लाह फ़ज़ली की करबल कथा या दह मजलिस है। इसका रचना काल सन् १७३२ ई० है।

करबल कथा के बहुत समय बाद मिर्ज़ा रफ़ीअ सौदा ने अपने दीवान मर्सियाकी भूमिका गद्यमें लिखी है जो उनके कुल्लियात (ग्रन्थावली) में मौजूद है।

सौदा की इस भूमिकाके लगभग बारह वर्ष बाद अर्थात् सन् १७८८ ई. में शाह रफीउद्दीनने कुरान शरीफका उर्दूमें अनुवाद किया। और दो वर्ष बाद अर्थात् सन् १७९० ई में शाह अब्दुल कादिरने भी कुरान शरीफका उर्दूमें अनुवाद किया।

इस कालकी दूसरी गद्य रचनाओंमें शाह इस्माईल शहीदकी तकवियत-उल-ईमान और सिराते मुस्तकीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें मीर अता हुसैन तहसीन की नौतर्ज़ मुरस्सा है। यह पुस्तक एक फ़ारसी रचना किस्स-ए चहार दरवेश का उर्दू अनुवाद है।

कुछ योरोपियन लेखक तथा फोर्ट विलियम कालेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके साथ-साथ दो रूपोंमें योरोप निवासियोंका भारतसे सम्बन्ध आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नौकरके रूपमें यहाँ आये और कुछ धर्म प्रचारकके रूपमें। किन्तु जहाँ तक यहाँके जीवनसे परिचय प्राप्त करनेका प्रश्न था दोनोंके लिए यह आवश्यक था कि वह इस देशकी किसी ऐसी भाषाको सीखनेका प्रयत्न करें जिसके माध्यमसे इस देशकी बहु सख्यक जनताके सम्पर्कमें वे आ सकें। इस उद्देश्यसे उन लोगोंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इस प्रकारके विदेशियोंमें जिन्होंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयत्न किया उनमें विशिष्ट व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार हैं —

जान जोशुआ केटलर, जर्मन पादरी शुल्ज, मिस बैन्जामिन शुल्ज, गाल्किन हुर्से सावन्ट, हण्टर, पादरी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लेखकोंने विशेष रूपसे व्याकरण और शब्द कोशोंकी रचनाकी ओर ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दू सीखना सिखाना मात्र था। हाँ इनमेंसे धर्म प्रचारक पादरियोंने बाइबिलके अनुवादोंकी ओर ध्यान दिया। अस्तु

उर्दू अथवा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण जोशुआ केटलर द्वारा रचित समझा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७१५ ई में रचा। इसी प्रकार जर्मन पादरी शल्जने भी व्याकरण लिखा तथा फिलने हिन्दुस्तानी वर्णमाला एवं पुस्तक लिखी। पर सबसे अधिक इस दिशामें जिस व्यक्तिने कार्य किया है और जिसने उर्दू गद्यके विकासके लिए मार्ग निकाला है वह है डा. जॉन गिलक्राइस्ट।

जॉन गिल क्राइस्टने न केवल स्वयं अनेक रचनाएँ की प्रत्युत फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे अपनी देखरेखमें अनेक पुस्तकें लिखवाईं।

दिल्ली और लखनऊसे समय-समयपर अनेक लेखक जान गिल क्राइस्टकी चरचा सुन-सुनकर कलकत्ता पहुँचने लगे और फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागसे सम्बद्ध होने लगे।

जिन लेखकोंने फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागमें रहकर उर्दू गद्यमें रचनाएँ की हैं उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अम्मन देहलवी हैदरबख्श हैदरी मीर शेरअली अफसोस मिर्जा अलीलुत्फ बहादुर अली हुसैनी मजहर अलीखाँ विला काजिम अली जवान निहालचन्द लाहौरी बेनीनारायण जहाँ तथा लल्लूलाल।

इन भारतीय लेखकोंके अतिरिक्त स्वयं गिलक्राइस्टने भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। जो इस प्रकार हैं —

१—अँग्रेजी हिन्दुस्तानी डिक्शनरी (सन् १७९१ ई०) २—हिन्दुस्तानी ग्रामर (सन् १७९६ ई०) ३—ओरियन्टल लिंगुइस्ट (सन् १७९८ ई०) ४—कसस-ए-मशरिकी (सन् १८०३ ई०) ५—रहनुमा-ए-जबान-ए-उर्दू (सन् १८०४ ई०) ६—कवायद-ए-उर्दू (सन् १८ ९ ई०) ७—अँग्रेजी बोल चाल (सन् १८२० ई०)

डाक्टर गिलक्राइस्टने सन् १७८७ ई० से उर्दूके सम्बन्धमें लिखना प्रारम्भ किया जिसका क्रम बीस वर्ष तक चलता रहा। सन् १८४१ ई० में पेरिसमें गिलक्राइस्टका देहान्त हुआ। गिलक्राइस्टकी रचनाओंकी संख्या जिसमें छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती है।

गिलक्राइस्ट तथा फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित गद्यकारोंके सामने एक निश्चित उद्देश्य था। उसी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचते थे पर इनके अतिरिक्त देशमें अन्य भी कई ऐसे व्यक्ति थे जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन गद्यकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इन्शाअल्लाखाँ 'इन्शा' रजब अली बेग सुरूर तथा फकीर मुहम्मद खाँ गोया आदि हैं।

इन्शा अल्ला खाँकी गद्य रचनाओंमें रानी केतकीकी कहानी और दरिया-ए-लताफत अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

रजब अली बेग सुरूर लखनऊके पहले उर्दू गद्य लेखक हैं। ये सन् १७८७ ई० में लखनऊमें पैदा हुए और सन् १८६७ ई० में लखनऊमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें सुरूर-ए-सुल्तानी शरर-ए-इश्क 'शिगूफ-ए-मुहब्बत' गुलजार-ए-सुरूर शबिस्तान-ए-सुरूर इन्शा-ए-सुरूर तथा फिसाना-ए-अजायब हैं। सुरूर की सर्व श्रेष्ठ रचना फिसाना-ए-अजायब है।

फकीर मुहम्मद गोया लखनऊके रहनेवाले थे वह अपने समयके अच्छे कवि भी थे नासिख को वह अपनी काव्य रचना दिखाते थे। सन् १८५० ई० में गोया' का देहान्त हुआ। अनवार-ए-सुहैली नामक फारसी कहानी पुस्तकका

करबल कथा के बहुत समय बाद मिर्ज़ा रफ़ीअ सौदा ने अपने दीवान मर्सियाकी भूमिका गद्यमें लिखी है जो उनके कुल्लियात (ग्रन्थावली) में मौजूद है।

सौदा की इस भूमिकाके लगभग बारह वर्ष बाद अर्थात् सन् १७८८ ई. में शाह रफ़ीउद्दीनने कुरान शरीफ़का उर्दूमें अनुवाद किया। और दो वर्ष बाद अर्थात् सन् १७९ ई में शाह अब्दुल क़ादिरने भी कुरान शरीफ़का उर्दूमें अनुवाद किया।

इस कालकी दूसरी गद्य रचनाओंमें शाह इस्माईल शहीदकी तक़वियत-उल-ईमान और सेराज मुस्तक़ीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें मीर अता हुसैन तहसीन की नौतर्ज़ मुरस्सा है। यह पुस्तक एक फ़ारसी रचना किस्स-ए चहार दरवेश का उर्दू अनुवाद है।

कुछ योरोपियन लेखक तथा फोर्ट विलियम कालेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके साथ-साथ दो रूपोंमें योरोप निवासियोंका भारतसे सम्बन्ध आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नौकरके रूपमें यहाँ आये और कुछ धर्म प्रचारकके रूपमें। किन्तु यहाँ तक यहाँके जीवनसे परिचय प्राप्त करनेका प्रश्न था दोनोंके लिए यह आवश्यक था कि वह इस देशकी किसी ऐसी भाषाको सीखनेका प्रयत्न करें जिसके माध्यमसे इस देशकी बहु संख्यक जनताके सम्पर्कमें वे आ सकें। इस उद्देश्यसे उन लोगोंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इस प्रकारके विदेशियोंमें जिन्होंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयत्न किया उनमें विशिष्ट व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार हैं —

जान जोशुआ केटलर, जर्मन पादरी शुल्ज़ मिस्टर बेन्जामिन शुल्ज़ शालिस दुर्ग डाक्टर, हण्टर, पादरी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लेखकोंने विशेष रूपसे व्याकरण और शब्द कोशोंकी रचनाकी ओर ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दू सीखना सिखाना मात्र था। हाँ इनमेंसे धर्म प्रचारक पादरियोंने बाइबिलके अनुवादोंकी ओर ध्यान दिया। अस्तु

उर्दू अथवा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण जोशुआ केटलर द्वारा रचित समझा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७१५ ई में रचा। इसी प्रकार जर्मन पादरी शुल्ज़ने भी व्याकरण लिखा तथा किसीने हिन्दुस्तानी वर्णमालापर एक पुस्तक लिखी। पर सबसे अधिक इस दिशामें जिस व्यक्तिने कार्य किया है और जिसने उर्दू गद्यके विकासके लिए मार्ग दिखाया है वह हैं डा जॉन गिलक्राइस्ट।

जॉन गिल क्राइस्टने न केवल स्वयं अनेक रचनाएं कीं प्रत्युत फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे अपनी देखरेखमें अनेक पुस्तकें लिखवाईं।

दिल्ली और लखनऊसे समय-समयपर अनेक लेखक जान गिलक्राइस्टकी उदारता सुन-सुनकर कलकत्ता पहुँचने लगे और फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागसे सम्बद्ध होने लगे।

जिन लेखकोंने फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागमें रहकर उर्दू गद्यमें रचनाएँ की हैं उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अम्मन देहलवी हैदरबख्श हैदरी मीर शेरअली अफसोस मिर्जा अलीमुतुफ बहादुर अली हुसैनी मजहर अलीखाँ विला काजिम अली जवान निहालचन्द लाहौरी बेनीनारायण जहाँ तथा लल्लूलाल।

इन भारतीय लेखकोंके अतिरिक्त स्वयं गिलक्राइस्टने भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। जो इस प्रकार हैं —

१—अंग्रेजी हिन्दुस्तानी डिक्शनरी (सन् १७९१ ई) २—हिन्दुस्तानी ग्रामर (सन् १७९६ ई) ३—ओरियन्टल लिंग्विस्ट (सन् १७९८ ई) ४—कवायद-ए-मशरिकी (सन् १८ १ ई) ५—रहनुमा-ए-जबान-ए-उर्दू (सन् १८ ४ ई) ६—कवायिद-ए-उर्दू (सन् १८ ९ ई) ७—अंग्रेजी बोल चाल (सन् १८२ ई)

डाक्टर गिलक्राइस्टने सन् १७८७ ई से उर्दूके सम्बन्धमें लिखना प्रारम्भ किया जिसका क्रम बीस वर्ष तक चलता रहा। सन् १८४१ ई में पेरिसमें गिलक्राइस्टका देहान्त हुआ। गिलक्राइस्टकी रचनाओंकी संख्या जिसमें छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती है।

गिलक्राइस्ट तथा फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित गद्यकारोंके सामने एक निश्चित उद्देश्य था। उसी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचते थे पर इनके अतिरिक्त देशमें अन्य भी कई ऐसे व्यक्ति थे जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन गद्यकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इन्शाअल्लाखाँ 'इन्शा' रजब अली बेग 'सुरूर' तथा फकीर मुहम्मद खाँ 'गोया' आदि हैं।

इन्शा अल्ला खाँकी गद्य रचनाओंमें 'रानी केतकीकी कहानी' और 'दरिया-ए-लताफत' अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

रजब अली बेग 'सुरूर' लखनऊके पहले उर्दू गद्य लेखक हैं। ये सन् १७८७ ई में लखनऊमें पैदा हुए और सन् १८६७ ई में लखनऊमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें 'सुरूर-ए-सुल्तानी' 'शरर-ए-इश्क' 'शिगूफा-ए-मुहब्बत' 'गुलजार-ए-सुरूर' 'शबिस्तान-ए-सुरूर' 'इन्शा-ए-सुरूर' तथा 'फिसाना-ए-अजायब' हैं। 'सुरूर' की सर्व श्रेष्ठ रचना 'फिसाना-ए-अजायब' है।

फकीर मुहम्मद 'गोया' लखनऊके रईसोंमेंसे थे वह अपने समयके अच्छे कवि भी थे 'नासिख' को वह अपनी काव्य रचना दिखाते थे। सन् १८५० ई में 'गोया' का देहान्त हुआ। 'अनवार-ए-सुहैली' नामक फारसी कहानी पुस्तकका

करबल कथा के बहुत समय बाद मिर्ज़ा रफ़ीअ सौदा ने अपने दीवान मर्सियाकी भूमिका गद्यमें लिखी है जो उनके कुल्लियात (ग्रन्थावली) में मौजूद है।

सौदा की इस भूमिकाके लगभग बाइस वर्ष बाद अर्थात् सन् १७८८ ई में शाह रफ़ीउद्दीनने कुरान शरीफ़का उर्दूमें अनुवाद किया। और दो वर्ष बाद अर्थात् सन् १७९ ई में शाह अब्दुल कादिरने भी कुरान शरीफ़का उर्दूमें अनुवाद किया।

इस कालकी दूसरी गद्य रचनाओंमें शाह इस्माईल शहीदकी तकवियत-उल-ईमान और सिराते मुस्तक़ीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें मीर अता हुसेन तहसीन की नौतर्ज मुरस्सा है। यह पुस्तक एक फ़ारसी रचना किस्सा-ए चहार दरवेश का उर्दू अनुवाद है।

कुछ योरोपियन लेखक तथा फोर्ट विलियम कालेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके साथ-साथ दो रूपोंमें योरोप निवासियोंका भारतसे सम्बन्ध आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नौकरके रूपमें यहाँ आये और कुछ धर्म प्रचारकके रूपमें। किन्तु यहाँ तक यहाँके जीवनसे परिचय प्राप्त करनेका प्रश्न था दोनोंके लिए यह आवश्यक था कि वह इस देशकी किसी ऐसी भाषाको सीखनेका प्रयत्न करें जिसके माध्यमसे इस देशकी बहु संख्यक जनताके सम्पर्कमें वे आ सकें। इस उद्देश्यसे उन लोगोंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इस प्रकारके विदेशियोंमें जिन्होंने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयत्न किया उनमें विशिष्ट व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार हैं —

जान जोशुआ केटलर, जर्मन पादरी शुल्ज मिस बेन्जामिन शुल्ज फ़ाक्लिन-हुर्स्ट डाक्टर, हण्टर, पादरी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लेखकोंने विशेष रूपसे व्याकरण और शब्द कोशोंकी रचनाकी ओर ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दू सीखना सिखाना मात्र था। हाँ इनमेंसे धर्म प्रचारक पादरियोंने बाइबिलके अनुवादोंकी ओर ध्यान दिया। अस्तु

उर्दू अथवा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण जोशुआ केटलर द्वारा रचित समझा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७१५ ई में रचा। इसी प्रकार जर्मन पादरी शुल्जने भी व्याकरण लिखा तथा जिसने हिन्दुस्तानी वर्णमालापर एक पुस्तक लिखी। पर सबसे अधिक इस दिशामें जिस व्यक्तिने कार्य किया है और जिसने उर्दू गद्यके विकासके लिए मार्ग निकाला है वह हैं डा जॉन गिलक्राइस्ट।

जॉन गिल क्राइस्टने न केवल स्वयं अनेक रचनाएं कीं प्रत्युत फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे अपनी देखरेखमें अनेक पुस्तकें लिखवाईं।

दिल्ली और लखनऊसे समय-समयपर अनेक लेखक डाक्टर गिलक्राइस्टकी उदारता सुन-सुनकर कलकत्ता पहुँचने लगे और फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागसे सम्बद्ध होने लगे।

जिन लेखकोंने फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य निर्माण विभागमें रहकर उर्दू गद्यमें रचनाएँ की हैं उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अम्मन देहल्वी हैदरबख्श हैदरी मीर शेरअली अफसोस मिर्ज़ा अलीलुत्फ़ बहादुर अली हुसैनी मज़हर अलीखाँ विला काज़िम अली जवान निहालचन्द लाहौरी बेनीनारायण जहाँ तथा लल्लूलाल।

इन भारतीय लेखकोंके अतिरिक्त स्वयं गिलक्राइस्टने भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। जो इस प्रकार हैं —

१—अंग्रेजी हिन्दुस्तानी डिक्शनरी (सन् १७९१ ई) २—हिन्दुस्तानी ग्रामर (सन् १७९६ ई) ३—ओरियन्टल लिंगुइस्ट (सन् १७९८ ई) ४—कसस-ए-मशरिकी (सन् १८०१ ई) ५—रहनुमा-ए-ज़बान-ए-उर्दू (सन् १८०४ ई) ६—क़वायद-ए-उर्दू (सन् १८०९ ई) ७—अंग्रेजी बोल चाल (सन् १८२ ई)

डाक्टर गिलक्राइस्टने सन् १७८७ ई से उर्दूके सम्बन्धमें लिखना प्रारम्भ किया जिसका क्रम तीस वर्ष तक चलता रहा। सन् १८४१ ई में पेरिसमें गिलक्राइस्टका देहान्त हुआ। गिलक्राइस्टकी रचनाओंकी संख्या जिसमें छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती है।

गिलक्राइस्ट तथा फोर्ट विलियम कालेजके साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित गद्यकारोंके सामने एक निश्चित उद्देश्य था। उसी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचते थे पर इनके अतिरिक्त देशमें अन्य भी कई ऐसे व्यक्ति थे जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन गद्यकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इन्शाअल्लाखाँ 'इन्शा' रजबअली बेग सुरूर तथा फकीर मुहम्मद खाँ गोया आदि हैं।

इन्शा अल्ला खाँकी गद्य रचनाओंमें रानी केतकीकी कहानी और दरिया-ये-लताफ़त अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

रजब अली बेग सुरूर लखनऊके पहले उर्दू गद्य लेखक हैं। ये सन् १७८७ ई में लखनऊमें पैदा हुए और सन् १८६७ ई में लखनऊमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें सुरूर-ए-सुल्तानी शरर-ए-इश्क 'शिगूफ़ा-ए-मुहब्बत' गुलज़ार-ए-सुरूर शबिस्तान-ए-सुरूर इन्शा-ए-सुरूर तथा फिसाना-ए-अजायब हैं। सुरूर की सर्व श्रेष्ठ रचना फिसाना-ए-अजायब है।

फकीर मुहम्मद गोया लखनऊके रहनेवाले थे वह अपने समयके अच्छे कवि भी थे नासिख को वह अपनी काव्य रचना दिखाते थे। सन् १८५ ई में गोया' का देहान्त हुआ। अनवार-ए-सुहैली नामक फारसी कहानी पुस्तकका

मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद (सन् १८३३–१९१० ई) की प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं आब-ए-हयात दरबार-ए-अकबरी नैरंग-ए-ख़याल सोखनदान-ए-फ़ारस। आब-ए-हयात में उर्दू के कवियोंका वर्णन है। दरबार-ए-अकबरी में आज़ाद ने अकबर के कालकी सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्थाका वर्णन किया है। नैरंग-ए-ख़याल में अंग्रेजी (Allegary) का अनुकरण किया गया है। सोखनदान-ए-फ़ारस भाषा विज्ञान सम्बन्धी पहली उर्दू पुस्तक है।

ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली (सन १८३७–१९१४ ई) की गद्य पुस्तकोंमें उल्लेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं हयात-ए-सादी मुक़द्दमा-ए-शेअर-ओ-शायरी यादगार-ए-ग़ालिब हयात-ए-जावेद। हयात-ए-सादी में प्रसिद्ध फ़ारसी कवि शेख सादीका जीवन चरित है। मुक़द्दमा-ए-शेअर-ओ-शायरी आलोचनात्मक पुस्तक है। यादगार-ए-ग़ालिब मिर्ज़ा ग़ालिबका जीवन और साहित्यसे सम्बन्धित रचना है। हयात-ए-जावेद सर सय्यद अहमद ख़ाँका जीवन चरित है।

डा नज़ीर अहमद (सन् १८३६–१९१२ ई) की विशेष उल्लेखनीय रचनाओंमें मेरात-उल-उरूस बनात-उन-नाश तौबत-उन-नसूह इब्न-उल-वक़्त आदि हैं। डा नज़ीर अहमद उर्दूके पहले उपन्यासकार होनेके साथ ही ऐसे लेखक भी थे जिन्होंने सामयिक समस्याओंपर भी प्रकाश डाला है। नज़ीर अहमद की भाषा भी बड़ी प्रभावपूर्ण और दिल्लीकी विशुद्ध उर्दू है।

मौलाना शिबली नोमानी (सन १८५७–१९१४ ई) ने विभिन्न विषयोंपर रचनाएँ की हैं और इस प्रकार उनकी रचनाओं की संख्या भी बहुत है। पर सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं अलमामून सीरत-उन-नोमान अलफ़ारूक़ अल ग़ेज़ाली इल्म-उल-कलाम मवाज़िना मौलाना-रूम शेअर-उल-अजम सीरत-उन-नबी अलकलाम मजमूआ मक़ालात शिबली।

पं रतननाथ सरशार (१८४६–१९ २ ई) मुख्यतः उपन्यास लेखक थे, इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं — फ़िसाना-ए-आज़ाद जाम-ए-सरशार सैर-ए-कोहसार कामिनी। इनमें सबसे प्रसिद्ध रचना फ़िसाना-ए-आज़ाद है। इस उपन्यासका आज़ाद कथा के नामसे देवनागरीमें प्रेमचन्द ने संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया है।

मौलाना अब्दुल हलीम शरर (सन् १८६०–१९२६ ई) शरर ने सन् १८८७ ई में दिलगुदाज़ नामक पत्रिका निकाली। इसी पत्रिकामें उन्होंने अपने उपन्यास तथा निबन्ध लिखना प्रारम्भ किया। शरर के प्रसिद्ध उपन्यास इस प्रकार हैं फ़िरदौस-ए-बरीं अय्याम-ए-अरब मन्सूर मोहना इस्लाका डाकू मदाम-ए-बमदार शहीद-ए-वफ़ा। फ़िरदौस-ए-बरीं सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। शहीद-ए-वफ़ा नाटक है। शरर ने यद्यपि कई और नाटक भी लिखे हैं पर नाटककारके रूपमें वे सफल नहीं हो सके।

जिसमें पंचतन्त्र तथा हितोपदेशकी कहानियाँ संगृहीत हैं, पोथा ने उर्दू अनुवाद किया है। पोथा के अनुवादका नाम बुस्तान-ए-हिकमत है।

उर्दू गद्यके विकासके सामूहिक प्रयत्नोंमें दिल्ली कालेज तथा उसकी देहली वर्नाक्यूलर ट्रांसलेशन सोसायटी का उल्लेख भी आवश्यक है। देहली कालेजकी स्थापना सन् १८२५ ई. में अर्थात् फोर्ट विलियम कालेजकी स्थापनाके २५ वर्ष बाद हुई थी। सन् १८४१ ई में उक्त ट्रांसलेशन सोसायटीकी स्थापना हुई। जिन पुस्तकोंके सोसायटीने अनुवाद कराए हैं उनकी पूरी सूची देना तो सम्भव नहीं है इतना ही बताया जा सकता है कि सोसायटीने अंग्रेजी अरबी फारसी तथा संस्कृत भाषाओंसे अनुवाद कराए थे। अनुवादकों में विशेष रूपसे उल्लेखनीय धर्म नारायण अयोध्याप्रसाद शीतल प्रसाद वजीरअली मुकाम अली मुहम्मद हसन तथा मास्टर रामचन्द्र हैं। मास्टर रामचन्द्रको सबसे अधिक महत्व प्राप्त है। मास्टर रामचन्द्र की दो मौलिक रचनाएँ अजायब-ए-रोजगार तवारिख-उल-काम-ए-कीम विशेष रूपसे प्रसिद्ध हैं।

उर्दू गद्यका विकास-काल

उर्दू गद्यके विकास कालको सर सय्यद अहमद खाँसे प्रारम्भ किया जा सकता है। और इस प्रकार इस कालको सर सय्यद काल भी कहा जा सकता है।

सर सय्यद अहमद खाँका जन्म सन् १८१७ ई में दिल्लीमें हुआ। सर सय्यदने अंग्रेजी राज स्थापित हो जानेके बाद की उस स्थितिका जो विशेष रूपसे भारतीय मुसलमानोंसे सम्बन्धित थी—की ओर अधिक ध्यान दिया। उनका अधिकांश साहित्य और शिक्षा प्रचारके क्षेत्रमें अलीगढ़ कालेजकी स्थापना सब कुछ मुसलमानोंकी स्थितिको सुधारनेके उद्देश्यसे किया गया कार्य है।

सर सय्यदने अन्य कार्योंके अतिरिक्त छोटी-बड़ी तीस पुस्तकें लिखी हैं। सर सय्यदकी पहली पुस्तक जिसका विशेष रूपसे उल्लेख किया जा सकता है आसार स्सनादीद है। सर सय्यदकी सबसे प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण रचना खुतबात-ए अहमदिया समझी जाती है।

२४ दिसम्बर सन् १८७० ई में सर सय्यदने तहजीबुल इखलाक नामक पत्रिका निकाली। तहजीबुल-इखलाक में सर सय्यदके निबन्ध उर्दूके नए गद्यका नमूना कहे जा सकते हैं। इस प्रकार न केवल सर सय्यदके निबन्ध उच्च कोटिके ही हैं प्रत्युत वे नये ढंगके निबन्ध लेखनके जन्मदाता भी हैं।

इस कालके अन्य गद्यकारोंमें मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली डा नजीर अहमद, मौलाना शिबली नोमानी पं रतननाथ सरशार मौलाना अब्दुल हलीम शरर मुन्शी सज्जाद हुसैन मिर्जा मुहम्मद हादी रुसवा राशिदुल खैरी आगा हश्र काश्मीरी मौलाना अबुल कलाम आजाद हसन निजामी मौलाना मुहम्मद अली मौलाना जफर अली खाँ आदि हैं।

मौलाना मुहम्मद हुसेन आज़ाद (सन् १८३१–१९१० ई) की प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं आब-ए-हयात दरबार-ए-अकबरी नैरंग-ए-ख़याल सोख़नदान-ए-फ़ारस। आब-ए-हयात में उर्दू के कवियोंका वर्णन है। दरबार ए-अकबरी में आज़ाद ने अकबर के कालकी सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाका वर्णन किया है। नैरंग-ए-ख़याल में अंग्रेजी (Allegary) का अनुकरण किया गया है। सोख़नदान-ए-फ़ारस भाषा विज्ञान सम्बन्धी पहली उर्दू पुस्तक है।

ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली (सन १८३६–१९१४ ई) की गद्य पुस्तकोंमें उल्लेखनीय रचनायें इस प्रकार हैं हयात-ए-सादी मुक़द्दमा-ए-शेअर-ओ-शायरी *यादगार-ए-ग़ालिब हयात-ए-जावेद। हयात-ए-सादी में प्रसिद्ध फ़ारसी कवि शेख़ सादीका जीवन चरित है। मुक़द्दमा-ए-शेअर-ओ-शायरी आलोचनात्मक पुस्तक है। यादगार-ए-ग़ालिब मिर्ज़ा ग़ालिबके जीवन और साहित्यसे सम्बन्धित रचना है। हयात-ए-जावेद सर सय्यद अहमद ख़ाँका जीवन चरित है।

डा. नज़ीर अहमद (सन् १८३६–१९१२ ई.) की विशेष उल्लेखनीय रचनाओंमें मेरात-उल-उरूस बेनात-उन-नाश तौबत-उन-नसूह इब्न-उल-वक़्त आदि हैं। डा नज़ीर अहमद उर्दूके पहले उपन्यासकार होनेके साथ ही ऐसे लेखक भी थे जिन्होंने सामाजिक समस्याओंपर भी प्रकाश डाला है। नज़ीर अहमद की भाषा भी बड़ी प्रभावपूर्ण और दिल्लीकी विशुद्ध उर्दू है।

मौलाना शिबली नोमानी (सन १८५७–१९१४ ई) ने विभिन्न विषयोंपर रचनाएँ की हैं और इस प्रकार उनकी रचनाओं की संख्या भी बहुत है। पर सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं अलमामून सीरत-उन-नोमान अलफ़ारूक़ अल ग़ेज़ाली इल्म-उल-कलाम मवाज़नह मौलाना-रूम शेअर-उल-अजम *सीरत-उन-नबी अलकलाम मवाज़ना अनीसव दबीर।

पं रतननाथ सरशार (१८४६–१९०२ ई) मुख्यतः उपन्यास लेखक थे इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं — फ़िसाना-ए-आज़ाद जाम-ए-सरशार सैर-ए-कोहसार कामिनी। इनमें सबसे प्रसिद्ध रचना फ़िसाना-ए-आज़ाद है। इस उपन्यासका आज़ाद कथा के नामसे देवनागरीमें प्रेमचन्द ने संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया है।

मौलाना अब्दुल हलीम शरर (सन् १८६०–१९२६ ई) शरर ने सन् १८८७ ई में दिलगुदाज़ नामक पत्रिका निकाली। इसी पत्रिकामें उन्होंने अपने उपन्यास तथा निबन्ध लिखना प्रारम्भ किया। शरर के प्रसिद्ध उपन्यास इस प्रकार हैं फ़िरदौस-ए-बरीं अय्याम-ए-अरब मन्सूर मोहना हुस्नका डाकू ज़वाल-ए-बग़दाद शहीद-ए-वफ़ा। फ़िरदौस-ए-बरीं सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। शहीद-ए-वफ़ा नाटक है। शरर ने यद्यपि कई और नाटक भी लिखे हैं पर नाटककारके रूपमें वे सफल नहीं हो सके।

अंगारे नामक एक कहानी संग्रह प्रकाशित किया। यह कहानी संग्रह क्या था बम का गोला था जो तत्कालीन समाजपर गिरा। धर्म तथा नैतिकता आदिके आदर्शों-पर इस रचनाने ऐसी चोट की कि लोग तिलमिला उठे। पर इसमें सन्देह नहीं कि यह रचना तिलमिला देनेवाली रचना थी किसी प्रकारका रचनात्मक दृष्टिकोण इससे सम्भव न था। इसी समय काफी लम्बे अर्सेसे नियाज फतेहपुरीकी निगार नामक पत्रिका भी निकल ही रही थी जिसका उद्देश्य भी बहुत कुछ सर्व साधारणके नीति तथा धर्म सम्बन्धी विचारोंपर चोट करना ही था।

अंगारे के प्रकाशनके तीन वर्ष बाद सन् १९३६ ई में प्रेमचन्दकी अध्यक्षतामें लखनऊमें प्रगतिशील लेखक संघकी स्थापना हुई। जिसने लेखकोंको एक दृष्टि दी। परिणामतः उर्दूके अधिकांश लेखकोंने प्रगतिशील विचारधाराको अपना लिया। पर बहुतसे लेखकोंने प्रगतिशील विचार धारासे अपने आपको अलग रखा और पुरानी परिपाटीपर चलते रहे। ऐसे लेखकोंमें जिन्होंने प्रगतिशील विचार को अपना लिया तथा मार्क्सके दर्शनको स्वीकार कर लिया था उनकी संख्या एक समयमें बहुत काफी थी। पर धीरे-धीरे फ्रायडके विचारोंका भी लेखकोंपर प्रभाव पड़ने लगा और इस प्रकार आजके उर्दू कहानी तथा उपन्यास लेखकोंमें मार्क्सवादी फ्रायडवादी तथा कुछ स्वतन्त्र विचारक हैं।

आधुनिक लेखकोंमें जिनका विशेष रूपसे उल्लेख किया जा सकता है उनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं —

कृष्णचन्द, सआदत हसन मिंटो राजेन्द्रसिंह बेदी इस्मत चुगताई, उपेन्द्रनाथ अश्क हयात उल्लाह-अन्सारी अहमद नदीम कासिमी ख्वाजा अहमद अब्बास अजीज अहमद मुमताज मुफ्ती हंसराज रहबर

कृष्णचन्द के उपन्यास तथा कहानी संग्रह इस प्रकार हैं — शिकस्त तूफानकी कलियाँ उल्टा दरख्त जब खेत जागे (उपन्यास) नजारे, जिन्दगीके मोड़पर टूटे हुए तारे अन्नदाता तीन गुण्डे हम वहशी हैं समुन्दर दूर है अजन्तासे आगे मैं इन्तजार करूँगा एक गिर्जा एक खन्दक (कहानी) आदि।

मिंटोके कहानी संग्रह इस प्रकार हैं धुआँ मिन्टोके अफसाने लज्जतें संग खाली डिब्बे खाली बोतलें नमरूदकी खुदाई सियाह हाशिये ठण्डा गोश्त यजीद बादशाहतका खात्मा सड़कके किनारे चुगद आदि।

राजेन्द्रसिंह बेदीके प्रसिद्ध कहानी संग्रह दाना-ओ-दाम गरहन कोख जली।

इस्मत चुगताईके कहानी संग्रह कलियाँ चोटें छुई मुई एक बात।

उपेन्द्रनाथ अश्क के कहानी संग्रह कोंपल डाची नासूर चट्टान आदि।

हयातुल्लाह अन्सारीके कहानी संग्रहका नाम 'भरे बाजारमें' है।

अहमद नदीम कासिमी जो विभाजनके कारण पाकिस्तानमें हैं। उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह इस प्रकार हैं — बगूले, चौपाल, सन्नाटा, आबले, दर-ओ-दीवार, आंचल।

ख्वाजा अहमद अब्बासके कहानी संग्रह इस प्रकार हैं — 'जाफरानके फूल' लड़की, कहते हैं इश्क जिसको, आदि।

अजीज अहमदके दो उपन्यास ऐसी बुलन्दी ऐसी पस्ती और गुरेज के अलावा दो कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं, रक्स-ए-नातमाम, बेकार दिन बेकार रातें।

मुमताज मुफ्तीके कहानी संग्रह इस प्रकार हैं — अनकही, गहमागहमी, चुप।

हंसराज रहबर के कहानी संग्रहोंके नाम इस प्रकार हैं नया उफक हम लोग।

इन लेखकोंके अतिरिक्त अन्य लेखकोंके नाम तथा उनके संग्रहोंके नाम इस प्रकार हैं —

कुर्रतुल ऐन (सितारोंसे आगे, शीशेका घर) कुदरतुल्लाह शहाब (नफसाने) प्रेमनाथ परदेसी (दुनिया हमारी) गुलाम अब्बास ('आनन्दी') महेन्द्रनाथ ('चांदीके तार') 'यहां मैं रहता हूँ' नई बीमारी माई जालिम होटल (हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान तक) मुमताज शीरीं (अपनी नगरिया) हाजरा मसरूर ('चरके' हाय अल्लाह) खदीजा मस्तूर ('खेल' चन्द रोज और बौछार) इब्राहीम जलीस (चार चेहरे, चालीस करोड़ भिखारी तिकोना देश) ए हमीद ('सितारोंका गीत') शौकत सिद्दीकी (तीसरा आदमी) इन्तिजार हुसैन (गली कूचे) प्रकाश पण्डित (मीरास) रजिया सज्जाद जहीरका कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ।

उर्दूके हास्य लेखकोंमें भी कुछ लोग उच्च कोटिके हास्य लेखक हो गए हैं उनमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं रशीद अहमद सिद्दीकी अजीम बेग चुगताई, पतरस शौकत थानवी' इम्तियाज अली 'ताज' नाकारा हैदराबादी हाजी लकलक सिन्दबाद जहाजी शफीकुर्रहमान कन्हैयालाल कपूर आदि।

उर्दू हास्य लेखनकी परम्परा १९ शताब्दीसे अवध पंच नामक पत्रसे प्रारम्भ होती है।

उर्दू आलोचकोंमें आज कल विशेष रूपसे उल्लेखनीय आले अहमद सुरूर, एहतिशाम हुसैन ख्वाजा अहमद फारूकी एजाज हुसैन मुमताज हुसैन तथा इबादत बरेलवी हैं। इन आलोचकोंमें अधिकांश मार्क्सवादी दर्शनके अनुसार साहित्यका मूल्यांकन करनेके पक्षपाती हैं। मजनूं गोरखपुरी जैसे कुछ अन्य लोग भी हैं पर

उनको आजकी आलोचनामें विशिष्ट स्थान नहीं है यद्यपि गत वर्षोंमें उनका भी आलोचकोंमें अच्छा स्थान समझा जाता था।

निःसन्देह यहाँ जिन व्यक्तियोंका निबन्धकार, उपन्यासकार, कहानीकार, अथवा आलोचकोंके रूपमें उल्लेख किया गया है उनकी संख्या अत्यल्प है। अनेक ऐसे लेखक रह गए हैं जिनका यदि उल्लेख किया जाता तो संख्या और भी अधिक बढ़ जाती। फिर भी इस बातका यथा सम्भव ध्यान रखा गया है कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्तिका नाम रह न जाय।

• • •

मुहम्मद इक़बाल

[कवि परिचय]

मुहम्मद इकबाल

• • •

भूमिका

इस छोटी-सी पुस्तकका उद्देश्य हिन्दी संसारको इकबालका प्रारम्भिक परिचय देना है। इकबाल और टैगोर भारतके उन कवियोंमें हैं जिनकी कविता और व्यक्तित्वका प्रभाव राष्ट्रभूमिसे बाहर निकल कर सारे संसारमें फैला। उनके सन्देशके भिन्न भिन्न अर्थ लगाए गए और भारतीय नवयुवकों और बुद्धि जीवियोंकी अनेक पीढ़ियाँ उनकी कला और उनके द्वारा प्रतिपादित दर्शनकी छत्रछायामें पलीं और बढ़ीं। अतः इस छोटी-सी पुस्तकमें इकबालकी कला और दर्शनका पूरा परिचय देना कठिन है। प्रयत्न यही होगा कि इकबालके कलात्मक और दर्शनात्मक व्यक्तित्वका चित्रण ऐसा किया जाए कि उसके मूल्यका आभास सामने आ जाए।

एक कविको विशेषकर दार्शनिक कवि को दूसरे साहित्यवालोंसे भली भाँति परिचित कराना आसान नहीं है। कविता मनकी मौज भी होती है और शब्दोंका चमत्कार भी। शब्दोंकी यह शक्ति तभी समझी और समझाई जा सकती है जब हम साहित्यके और उस भाषाके मूल संकेतों और उसके सूत्रोंसे पाठक भली भाँति परिचित हों। यही कठिनाई दर्शनके परिचयमें भी है। दर्शन भाषामें पूर्ण रूपसे नहीं समा सकता। दर्शनकी कल्पनाओं विश्लेषणों और विचार वैभवका साथ भाषा नहीं दे पाती। जिस कविमें उन दोनों बातोंका सम्मिलन हो जाता है उस कविको समझना और समझाना और भी कठिन हो जाता है।

उर्दू शायरीके सम्बन्धमें यह विचार प्रचलित है कि वह केवल रोमांस है। उसकी जान गजल है और गजल प्रेम विलास और मस्तीकी कहानी होती है जिसमें भावनात्मक नशा तो होता है परन्तु विचारकी गहराई और दृष्टिकी सूक्ष्मता नहीं होती। ऐसी बात तो नहीं है कि यह आरोप एकदम निराधार ही हो परन्तु इसमें अधूरा सत्य है जो झूठसे अधिक घातक है।

उर्दू शायरी केवल गजलका नाम नहीं है और न गजलमें केवल प्रेम विलास और मस्ती ही अभिव्यक्त होती है। गजलकी शब्दावली अन्य भाषाभाषियोंको धोखा देती है। कारण जो कुछ भी हो फारसी कविता गजलमें ही एक विशेष रूपका संकेतवाद प्रचलित हो गया था। शराब साकी महबूब बुलबुल कफस बहार, जंजीर आदिके संकेत न केवल अपने शाब्दिक अर्थमें प्रयुक्त किए गए बल्कि राष्ट्र समाज धर्म नैतिक और दार्शनिक विचार भी इन्हीं शब्दों और संकेतोंमें व्यक्त हुए।

जैसे हिन्दी साहित्यके रीतिकालमें कवितापर सामन्ती छाप गहरी हो गई थी और भावना और दार्शनिक सूक्ष्मताका स्थान बौद्धिक काव्यत्व अत्यधिक आलंकारिकता और पाण्डित्य प्रदर्शनने ग्रहण कर लिया था ठीक इसी प्रकार उर्दू शायरी भी ऐसे ही युगसे गुजरी। गजल इसी परम्परावादसे बदनाम हुई और उसे कोरी प्रेमवाणी तक ही सीमित कर दिया गया।

इकबालने भी गजलें लिखी हैं परन्तु उनकी गजलें (केवल कुछको छोड़कर) परम्परा-वादके स्थानपर अनुभव और जीते जागते विचारोंसे पूर्ण हैं। यह भी ठीक है कि इकबालके युगसे कुछ पूर्व ही उर्दू शायरीमें एक क्रांति हो चुकी थी। इकबालने उस क्रांतिको नया मार्ग और नई दृष्टि अवश्य दी परन्तु इनके पहलेके कुछ कवि इनसे पहले इस नवचेतनाकी नींव डाल चुके थे। इकबालने उस परम्पराको आगे बढ़ाकर चरम सीमातक पहुँचाया।

ई० स० १८७४ में लाहौरकी अंजुमने पंजाबका मुशायरा कर्नल हालराइड और मौ० मुहम्मद हुसैन आजादके नेतृत्वमें हुआ था जिससे उर्दूमें गजलके साथ-साथ नज्म या पश्चिमी शायरीके ढंगपर एक विषयक कविताओंका चलन हुआ। राष्ट्रीय भावनाएँ, दर्शनात्मक कविता और वर्णनात्मक कविता Descriptive Poetry की ओर कवियोंका ध्यान गया। लखनऊमें बृज नारायण चकबस्त और इलाहाबादके हास्य कवि अकबर इलाहाबादीने हाली आजाद और शिब्लीकी इस नज्मवाली परम्पराको और दृढ़ किया।

इकबालने उर्दू शायरीके इसी मोड़को अपनाया था। मुहम्मद इकबालका जन्म स्यालकोट (पंजाब) में २२ फरवरी १८७३ को हुआ था। कहा जाता है कि उनके पुरखे काश्मीरी ब्राह्मण थे और लगभग १० वर्ष पूर्व वे मुसलमान हो गए थे। इकबालकी प्रारम्भिक शिक्षा पहले स्यालकोट और फिर लाहौरमें हुई। स्यालकोट ही में इकबालको शमसुल उलेमा मीर हसन जैसे गुरु मिल गए थे जिन्होंने

न्हें फारसी और अरबीके साहित्यके प्रति अच्छी रुचि पैदा करा दी थी। इक़बालने ोटी उम्र ही से शायरी करना आरम्भ कर दिया था और अपने युगके प्रसिद्ध कवि ाग़ देहलवीको अपना गुरु माना।

दाग़की कविता अपनी सूक्ष्म दृष्टि और विचार गंभीरताके कारण प्रसिद्ध थी केवल भाषाकी सरलता और टकसाली मुहावरेदार और प्रेम बल्कि काम विलास और रोमांसके कारण लोकप्रिय थी। दाग़ मुशायरों और समाजोंके कवि थे। उनकी शायरीमें सस्ती भावुकताकी अधिकता थी। उनकी कवितामें भाषाकी सरलता और आम फ़हम बोलीका मज़ा था मगर गहराईका अभाव पाया जाता था।

इक़बाल इस परम्परासे ऊपर उठे। दाग़के प्रभावके परिणाम स्वरूप उन्होंने कुछ ग़ज़लें कहीं। परिणामतः स्वयं दाग़को शीघ्र ही विश्वास हो गया कि उनके इस नए शिष्यको उनके नेतृत्वकी अधिक आवश्यकता नहीं है। फिर कुछ दिनों तक हाली आज़ाद और चकबस्तकी डगरपर चलते हुए इक़बाल राष्ट्र-प्रेम और राजनैतिक स्वतन्त्रताकी ओर झुके और उनकी नज़्में लाहौरके मुशायरों और सभाओंके अतिरिक्त सर अब्दुल कादिरके प्रसिद्ध मासिक पत्र "मख़ज़न" में छप कर सारे भारतमें मशहूर हुईं।

नीचे दी हुई ग़ज़लसे इस बातका सहज ही में अनुमान किया जा सकता है कि इक़बालकी ग़ज़लें किस हदतक दाग़से प्रभावित हैं —

न आते हमें इसमें तकरार क्या थी
मगर वादा करते हुए आर क्या थी
तुम्हारे पयामीने सब राज़ खोला
ख़ता इसमें बन्देकी सरकार क्या थी

इसी प्रकार हाली और चकबस्तकी परम्पराके उदाहरणमें इक़बालकी नज़्म "हिमाला" "नया शिवाला" "सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" और "तस्वीरे दर्द" को प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी युगमें इक़बालने बच्चोंके लिए बहुत सी अच्छी और सरल नज़्में भी लिखीं। "नालाए यतीम" (अनाथोंकी फरयाद) और "अब्रे गौहरबार" (मोती बरसानेवाला बादल) भी इसी ज़मानेकी लिखी हुई हैं जो बादमें संग्रहमें नहीं छापी गईं।

लाहौरमें इक़बाल दो और व्यक्तियोंसे प्रभावित हुए। एक प्रसिद्ध विद्वान् सर टामस आर्नल्डसे जिन्होंने इक़बालको दर्शन शास्त्र और पश्चिमी विचारोंके गहरे अध्ययनकी ओर आकृष्ट किया और दूसरे सर अब्दुल कादिरसे जो "मख़ज़न" के सम्पादक थे और निरन्तर इक़बालको उर्दू शायरीकी ओर आकर्षित करते रहते थे।

दर्शन शास्त्र और कविताका यह संघर्ष काफ़ी दिनों तक इक़बालके हृदयमें उथल-पुथल मचाता रहा और एक ऐसा ज़माना भी आया जब कि उन्होंने

त्याग देनेका निश्चय कर लिया था। अेक बार सर अब्दुल कादिरको उन्होंने लिखा —

मुदीर मख़्ज़नसे कोई इक़बाल जाके मेरा पयाम कह दे
जो काम कुछ कर रही हैं क़ौमें उन्हें मज़ाके सुख़न नहीं है।

[सम्पादक मख़्ज़नसे जाकर कोई मेरा यह सन्देश कह दे कि संसारमें जो अग्रसर राष्ट्र हैं उन्हें कविताओंमें रुचि नहीं है।]

यह फैसला सर टामस आर्नल्डपर छोड़ा गया कि इक़बालको शेरो शायरी छोड़ना चाहिए या नहीं? उनका फैसला इक़बाल द्वारा शायरी जारी रखनेके पक्षमें हुआ।

इक़बालकी शायरीका पहला दौर १९०५ तक समाप्त होता है। इस समय उन्होंने यूरोपकी यात्रा की थी। इससे पहलेकी शायरीमें एक ओर गहरी राष्ट्रीयता और भारत-प्रेम भरा हुआ है जिसका उदाहरण "नया शिवाला" "हिन्दोस्तां हमारा" और "तस्वीरे दर्द" में मिलता है और दूसरी ओर उनपर सूफी मतके उन मूल विचारों-का भी प्रभाव मिलता है जिनका इक़बालने बादको बड़ी तीव्रतासे खण्डन किया। इक़बालने आगे चलकर राष्ट्रवादको त्याग दिया किन्तु भारतका अटूट प्रेम इनके मनमें सदा बना रहा। इसीका यह परिणाम हुआ कि "जावेद नामा" में दान्तेकी "डिवाइन कॉमिडी" के ढंगकी कुछ रचनाएँ लिखी मिलती हैं। उन्होंने भारतसे गद्दारी करनेवालोंको नरकके सबसे निचले भागमें स्थान दिया है।

सन् १९०५ में इक़बाल विलायत गए और वहाँ तीन वर्ष रह कर उन्होंने केम्ब्रिजसे डिग्री ली म्युनिकसे पी अेच डी की डिग्री ली और ६ महीने तक उन्होंने लन्दन युनिवर्सिटीमें अरबी पढ़ाई और कोस्टन हालमें लेक्चर दिये। तीन वर्ष पश्चात् गवर्मेन्ट कालेज लाहौरमें दर्शन शास्त्रके अध्यापक नियुक्त हुए। चार वर्ष बाद उन्होंने कालेज छोड़कर बैरिस्टरी आरम्भ कर दी।

१९१५ में "असरारे ख़ुदी" छपी और उसके कुछ दिन बाद "रमूजे बेख़ुदी"। ये दोनों नज़्में फ़ारसीमें लिखी गई थीं। इनमें पहले पहल इक़बालकी दार्शनिकताकी झलक स्पष्ट रूपमें दिखाई दी। अब इक़बाल यह मान चुके थे कि उनकी शायरी एक सन्देशकी द्योतक है। १९२१ में "ख़िज़रे राह" और एक वर्ष बाद "तुलुए इस्लाम" छपी। इसके उपरान्त फ़ारसीमें उनकी तीन रचनाएँ "पयामे मशरिक़" (जो गेटेकी रचना West Ostlicher Divan के उत्तरमें मानो पौर्वात्य संस्कृति की ओर से पाश्चिमात्य संस्कृतिके नाम एक जवाब है) "ज़बूरे अजम" और "जावेद नामा" प्रकाशित हुईं।

इसके अतिरिक्त इक़बालने उर्दूमें चार संग्रह प्रकाशित किए। पहला "बाँगे दिरा" १९२४ में "बाले जिब्रील" १९३५ में और "ज़र्बे कलीम" १९३६ में [illegible] चौथा संग्रह उनकी मृत्युके पश्चात् छपा। इसी समय

फारसीकी दो लम्बी नज्में "मुसाफिर" और "पसचे बायद कर्द" भी प्रकाशित हुई।

वकील होनेके नाते इकबाल स्वतन्त्र विचारक थे। उन्होंने राजनीतिमें भी भाग लिया। उनको राजनीतिकी मूल समस्याओंमें अधिक लगाव था परन्तु राजनीतिकी पैंतरेबाजीसे न तो वे परिचित ही थे और न इस प्रकारकी राजनीतिमें उन्हें अधिक लगाव ही था। वे आल इंडिया मुस्लिम लीगके प्रधान भी चुने गए थे और १९३० का उनका अध्यक्षीय भाषण सचमुच ऐतिहासिक कहा जा सकता है। इसके करीब एक वर्ष बाद उन्होंने राउण्ड टेबिल कान्फ्रेन्समें भी लन्दन जाकर भाग लिया था। वे दो बार यूरोप गए तथा वहांके प्रसिद्ध नेताओं और दर्शन शास्त्रियोंसे भी मिले।

शिक्षासे इकबालको अत्यन्त गहरा लगाव था। उन्होंने काबुल यूनिवर्सिटी-की स्थापनामें महत्वपूर्ण भाग लिया था। इसी प्रकार जामिया मिल्लियासे भी उनको गहरी दिलचस्पी थी। १९२८ में उन्होंने मद्रास मैसूर, हैदराबाद और अलीगढ़ आदिका दौरा करके अपना भाषण क्रम पूरा किया जो बादमें "इस्लामके धार्मिक दर्शनकी नई रचना" के नामसे अंग्रेजीमें छपा। १९२२ में उन्हें "सर" की उपाधि मिली।

इकबालकी रचनाओंमें अर्थ शास्त्र (Economics) पर एक पुस्तक "इस्लामके धार्मिक दर्शन की नई रचना" (अंग्रेजीमें) और कविताओंमें (उर्दू संग्रह) "बांगे दिरा" "बाले जिब्रील" "जर्बे कलीम" और "अरमगाने हिजाज" और (फारसीमें) "असरारे खुदी" "रमूजे बेखुदी" "जबूरे अजम" "जावेद नामा" "पयामे मशरिक" "पसचे बायद कर्द" "मुसाफिर" और उर्दू संग्रह "अरमगाने हिजाज" का फारसी भाग शामिल हैं। इनके अतिरिक्त उनकी दो ऐसी रचनाओंका भी पता चलता है जिन्हें इकबाल पूरा न कर सके। उनमें एक उर्दू पद्यमें रामायणका अनुवाद था और दूसरे अंग्रेजीमें "The book of a forgotten prophet" ("भूले हुए पैगम्बरकी पुस्तक") है।

इकबाल कविके अतिरिक्त राजनीतिज्ञ और शिक्षा शास्त्रीके रूपमें भी प्रसिद्ध हुए। राजनीतिमें उनके उस व्याख्यानके आधारपर (जो उन्होंने इलाहाबादमें १९३० में मुस्लिम लीगके-अधिवेशनमें सभापति पदसे दिया था) कुछ लोग उन्हें पाकिस्तानका निर्माता भी घोषित करते हैं किन्तु इकबालने अपने व्याख्यानमें जो कल्पना की थी वह पाकिस्तानके आधुनिक रूपसे भिन्न है। वास्तवमें इकबालने मुस्लिम राष्ट्रोंके एक ऐसे संघकी रचनाका प्रस्ताव रखा था जो तुर्कीसे आरम्भ होकर भारतके मुस्लिम-बहु-संख्यक प्रान्तों तक फैला हुआ हो।

यह ध्यान रखना चाहिये कि इकबालने कभी राजनीतिमें सक्रिय रूपसे अधिक भाग नहीं लिया और इस रूपमें उनका महत्व कम है। कहा जाता है कि

मौलाना मुहम्मद अलीने एक बार इक़बालसे शिकायतके रूपमें यह कहा था कि अपनी कविताओंसे तो जनतामें आप इतना उत्साह और उमंग पैदा करते हैं परन्तु राजनीतिमें सक्रिय भाग नहीं लेते। यह क्या बात है? इक़बालने तुरन्त उत्तर दिया कि "भाई कवि तो अपने राष्ट्रका कव्वाल होता है जिसकी कव्वालियोंको सुन सुनकर श्रोतागण झूम उठते हैं। स्वयं नाचना उसका काम नहीं।"

इक़बालके जीवनके अन्तिम दिन कष्ट और रोग ग्रसित दशामें बीते। पहले उनके गलेपर फालिजका प्रभाव हुआ जिससे उनकी आवाज जाती रही। फिर आँखोंमें तकलीफ आरम्भ हुई और वह सर रास मसूदके पास भूपालमें चिकित्साके लिए जाकर रहे। किन्तु कोई लाभ नहीं हो पाया। २१ मार्च १९३८ को उनका देहान्त लाहौरमें हो गया। एशिया और योरोपके सभी प्रसिद्ध बुद्धिजीवियोंने इक़बालके देहान्तपर श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

इक़बालकी कविताका युग १९ वीं शताब्दीके अन्त और २ वीं के आरम्भके २१–३ वर्षोंकी अवधिका है। यह वह ज़माना था जब एक ओर तो योरोपमें वैज्ञानिक क्षमता और शक्ति चरम सीमाकी ओर उत्सर थी और दूसरी ओर एशिया और विशेषकर मुस्लिम राष्ट्र पराधीनता और राजनैतिक गुलामीके घोर अन्धकारमें घिरते जा रहे थे।

तुर्की जो कभी मुसलमानोंका सबसे शक्तिशाली देश था अब निर्बल हो गया था और योरोपका "बीमार आदमी" कहलाने लगा था। अन्य सभी मुस्लिम राष्ट्र या तो पराधीन हो चुके थे या उनमें भीतरी फूट और संघर्ष तीव्रतासे चल रहा था। जागीरदारीने मुसलमानोंकी दशा बिगाड़ रखी थी और वे परिश्रम और कार्यक्षेत्रसे दूर होते जा रहे थे। एशियाके दूसरी जातियों और राष्ट्रोंकी दशा भी अधिक ठीक न थी और वे सब पतनकी चरम सीमा तक पहुँच चुके थे। सबसे आश्चर्यकी बात तो यह थी कि उन्हें यहाँ तक भान न रह गया था कि वे किस सीमा तक पतित हो चुके हैं बरन् अपने शुभचिन्तकों और नेताओंको भली-भाँति पहचाननेकी क्षमता भी खो बैठे थे।

हिन्दुस्तानी मुसलमानोंमें सर सय्यद अहमद खाँके नेतृत्वमें पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यताका प्रभाव पड़ना तो आरम्भ हो गया परन्तु नवयुवक इस शिक्षापद्धति और सभ्यताकी बाहरी चमक दमक और टीम टामसे प्रभावित हो रहे थे और इसी धुनमें वे अपनी परम्परा और अपने उज्ज्वल अतीतको भूल बैठे थे।

उधर योरोप गहरे संकटमें था। इक़बालने अपने बहुतसे दूसरे साथियोंकी भाँति जिस राष्ट्रवाद स्वतन्त्रता औद्योगीकरण और संसदीय प्रजातन्त्रके जिस रूपको भारत और एशियाके सभी पराधीन राष्ट्रोंके दुखोंका एक मात्र इलाज समझ रखे थे स्वयं यूरोपमें वह सारा विधान संकटमें घिरा हुआ दिखाई दिया। इस संकटके दो रूप थे—एक आर्थिक और दूसरा नैतिक। आर्थिक दृष्टिसे यूरोपमें मशीनों

और कारखानोंने जीवनकी सभी आवश्यक वस्तुओंको बहुत बड़ी संख्यामें बाजारोंमें उपलब्ध कर दिया था। परन्तु जनताके लिए उन्हें मोल लेना भी सम्भव नहीं रह गया था। जहाँ एक ओर पूँजीपतियोंके मुनाफे बढ़ रहे थे वहाँ दूसरी ओर जनता कंगाल होती जा रही थी। भिन्न-भिन्न राष्ट्रोंके उद्योगपति अधिक मुनाफेकी चिन्तामें दिन प्रति दिन घोर स्पर्धाकी होड़में मजदूरोंका वेतन कम करने उनपर कामका बोझ बढ़ाने सस्ते दामोंपर कच्चा माल खरीदने और नई मण्डियोंका पता लगानेकी निरन्तर कोशिशमें लगे हुए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि एक तो हर राष्ट्रकी जनता दो भागोंमें बँट गई एक पूँजीपति और उनके समर्थक और दूसरे इस लूटके विधानमें परिवर्तन चाहनेवाले मजदूर लोग।

इस औद्योगिक होड़ने राजनैतिक स्तरपर उपनिवेशोंके लिये राष्ट्रोंमें नई खींचातानी पैदा कर दी। हर उन्नत देश नए-नए उपनिवेश चाहता था और उससे अन्तरराष्ट्रीय घृणा और उसके पश्चात् महायुद्धकी आग भड़क पड़ी। इधर राजनीतिज्ञ यह भी देख रहे थे कि पार्लियामेंटों द्वारा जो प्रजातन्त्र स्थापित हो रहा है वह वास्तवमें केवल पूँजीपतियोंका शासन ही है और प्रजा उसमें मतदानके अतिरिक्त और किसी प्रकारका भाग नहीं लेती। इसीलिए मार्क्स और उनके साथियोंने इस औद्योगिक और राजनैतिक विधानके विरुद्ध आवाज उठाई और समाजवाद और साम्यवादका स्वप्न देखा जिसमें शोषण न हो। कारखाने राष्ट्र और सरकार द्वारा मुनाफेके लिये नहीं बल्कि आवश्यकताओंको पूरी करनेके लिये चलाये जाएँ और सबकी बराबरीका सिद्धान्त स्वीकार किया जाय और मजदूरोंकी सरकार स्थापित हो। इसीकी प्रतिक्रियामें पूँजीवादके अत्यन्त भयंकर रूप नाजीज्म और फासिज्ममें प्रकट हुए जिनकी जड़ें अन्धे राष्ट्रवाद और गहरे व्यक्तिवादमें फैली हुई थी।

नैतिक रूपसे योरोपका यह पतन और भी भयानक था। इसी मशीनी युगमें साधारण व्यक्ति इतना व्यस्त और कारोबारी होकर रह गया था कि उसके जीवनका मूल आधार केवल धन ही रह गया था। उसके सारे सम्बन्ध प्रेम ममता दोस्ती और मित्रता मानवता और हमदर्दी सब कुछ पैसे तक ही सीमित थे। और जिनके पास धन था वे भी एक आन्तरिक हलचलमें फँसे हुए थे। धन उन्हें बाहरके साधन और सुखके सामान तो देता था परन्तु उनकी आत्माको सुख और चरित्रकी प्रसन्नता प्रदान न करता था। इस प्रकार योरोपका शरीर तो किसी हद तक सुखी था भी परन्तु उसकी आत्मा दुखी थी। इस उथल-पुथलका शायद सबसे स्पष्ट रूपसे वर्णन (Decline of West) "पश्चिमका पतन नामक पुस्तकमें हुआ।

इकबालने अपनी पहली योरोप यात्रामें ही योरोपकी इस गम्भीर स्थितिको परख लिया था। उन्हें यह पता लग गया था कि जिस जीवनका स्वप्न वे एशियामें देखा करते थे वह भी पूर्णरूपसे सन्तोष जनक नहीं है। राष्ट्रवाद राजनैतिक स्वतन्त्रता तो अवश्य दिला सकता है परन्तु वह संसारको मुसीबतमें डाले हुए है।

औद्योगीकरण आर्थिक संकटसे कुछ बाहर निकालनेके साथ साथ पूँजीवाद और साम्राज्यकी ओर ले जाता है और इससे एक ऐसा वातावरण पैदा होता है जो मनुष्यको मानवी स्तरसे नीचे गिराकर केवल मशीनका पुर्जा या कमाने खाने पीने ऐश उड़ानेवाला एक जीव बना डालता है।

इकबालकी कविता और उनका दर्शनशास्त्र इसी दुखी मानवताकी पुकार है जो एक तरफ राजनैतिक पराधीनता बीमारी अविद्या और पतनमें घिरी है और दूसरी ओर औद्योगिक उन्नतिके साथ चरित्र और आत्मिक अशान्ति और संघर्ष फैला हुआ है। एक ओर भौतिक साम्राज्य था दूसरी ओर आत्मा और नैतिकताका कोलाहल। इसी प्रश्नको इकबालने लेनिनकी जबानी खुदाके सामने रखा है —

यह कौन सा आदम है कि तू जिसका है माबूद
मशरिकके खुदावंद सफेदाने फिरंगी
मगरिबके खुदावन्द दरख्शन्दा फलिज्जात।
यूरपमें बहुत रोशनीए इल्मो हुनर है
हक यह है कि बेचश्मए हैवाँ है यह ज़ुल्मात।

उपर्युक्त परिस्थितियोंमें इकबालकी शायरी आरम्भ हुई। इकबालकी शायरीको समझनेके लिए उनके जीवन चरित्र और उनके समयकी नैतिक राजनैतिक और दार्शनिक परिस्थितियोंका ज्ञान भी आवश्यक है।

इकबालने " असरारे खुदी " की भूमिकामें लिखा है —

" अस्तित्वकी समस्याकी जाँच बीनमें मुसलमानों और हिन्दुओंके विचारात्मक इतिहासमें एक अद्भुत समानता है और वह यह कि जिस दृष्टिकोणसे श्री शंकरने गीताकी टीका की है उसी दृष्टिकोणसे मुहीउद्दीन इब्ने अरबी ने कुरान शरीफकी टीका की जिसने मुसलमानोंके मन मस्तिष्कपर बहुत गहरा प्रभाव डाला है

यहाँ इकबालने हिन्दू अद्वैतवाद और इस्लामी सूफी मतकी समानता दिखाई है।

सूफी मतके सम्बन्धमें इकबालका यह विचार काफी दिनों तक रहा कि इस्लामने संसारको त्याग देने और व्यावहारिक जीवनके स्थानपर आध्यात्मिक जीवन बितानेका विरोध ही किया था परन्तु जब इस्लाम ईरानमें फैला तो वहाँकी आरयाई चरित्र आध्यात्मिक दृष्टिकोणने इस्लामके व्यावहारिक छविमें बदलनेके स्थानपर स्वयं इस्लाममें इस प्रकारकी प्रवृत्तियोंको जन्म दिया। एक ओर यूनानी दर्शन-शास्त्रोंका प्रभाव पड़ा और अफलातून (प्लेटो) और उसके शिष्यों नौअफलातूनियों (Neo-platonists) के विचार फैल रहे थे और उसीके साथ साथ भारतीय

दर्शन बुद्धदर्शन और वैदान्तिक अध्यात्मवादकी गूँज खलीफा हारून रशीद और मामून रशीदके राज्यमें बगदाद तक पहुँच चुकी थी।

इस आधारपर इकबालने आरम्भमें यही विचार प्रकट किया है कि कम-से-कम इस्लामी सूफी मार्गका एक रूप जो "वहदतुल वजूद" (ब्रह्मवाद) में विश्वास करता है अवश्य ही ईरानी यूनानी और भारतीय दर्शनका प्रभाव है और सूफी मतका यह रूप इस्लामके मूल दार्शनिक आधारके विरुद्ध है।

"वहदतुल वजूद" क्या है? और सूफी मत और वेदान्तके अध्यात्मवादमें क्या समानता है? इन प्रश्नोंपर बड़ा मत भेद रहा है।

परन्तु इस्लामी सूफी मतके पक्षवाले यह मानते हैं कि इस्लाम और उसके मूल ग्रन्थ कुरानके दो रूप हैं। एक व्यावहारिक जो समस्त संसारके लिए है और जिसमें राज्य व्यवस्था और नैतिक धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति और भलाईके नियम बताए गए हैं। इसका नाम शरीअत है और यह साधारण जनसमूहके लिए है।

परन्तु कुरानके शब्दों और आयतोंके एक आध्यात्मिक और गहरे अर्थ भी हैं जिन्हें केवल बुद्धिसे नहीं समझा जा सकता बल्कि उन तक पहुँचनेमें भक्ति और श्रद्धाकी विशेष आवश्यकता होती है। यह जानकारी मस्तिष्कसे नहीं वरन मनकी लौ और प्रेम त्याग तथा एकाग्रचित्तता द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

इस्लामी सूफी मत आरम्भमें तो केवल सीधे सादे जीवन बितानेपर जोर देता था और अपना आधार कुरान और स्वयम् हजरत मुहम्मदकी वाणी तथा चौथे खलीफा हजरत अलीकी बातोंको बताता था परन्तु पीछे वर्ष बीत जानेके बाद उसका अपना एक विस्तृत दर्शन विधान-सा बन गया और उसके सिद्धान्तोंमें सूक्ष्मता और विचारशीलता आ गई।

उन्होंने पहला प्रश्न यह किया कि खुदा और मनुष्यमें क्या सम्बन्ध है और उसके उत्तरमें इस तत्व तक पहुँचे कि संसार और सारी भौतिक वास्तविकताएँ जो घट घट विभिन्न रूपसे प्रस्तुत हैं केवल एकमात्र ब्रह्मके अस्तित्वके स्वरूप हैं। इसका आधार उन्होंने इस्लामके मूल मन्त्रसे निकाला जिसका अर्थ है, अल्लाहके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं और मुहम्मद उसके भेजे हुए पयामी हैं। इसकी टीका सूफियोंने इस प्रकार की कि इससे संसार और भौतिकताके अस्तित्वको भंग किया गया है और इस्लाम केवल एक ऐसी परम आत्मामें विश्वास रखता है जो हजारों रूपसे प्रगट होती है। इस तरह सूफी अध्यात्मवादकी नींव पड़ी।

सूफियोंकी बहुत-सी विचार धाराएँ हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध इब्ने अरबी नामक एक सूफी मुनि जीवीके विचार हैं जिन्होंने भौतिकताको भ्रम बताया और सारे संसारकी अध्यात्मवादी एकतापर जोर दिया। उन्होंने तत्वमसि ही की तरह हमा ओस्त पर जोर दिया और कहा कि एक मात्र वास्तविकता अध्यात्मवाद है और जाहिरी वस्तुओंका मूल वही परमात्मा है और उस तक पहुँचनेका साधन ज्ञान

प्रशंसा की है वह है कार्यशील और कर्मरत व्यवसाय क्रम। वे लिखते हैं कि मानवताके इतिहासमें श्रीकृष्णका नाम सदा सम्मान और आदरसे लिया जाएगा कि इस सर्वश्रेष्ठ महापुरुषने एक अत्यन्त मनमोहक रूपसे अपने राष्ट्र और जनताकी दार्शनिक परम्पराकी आलोचनाकी और इस वास्तविकताको प्रगट किया कि सन्यास का अर्थ कार्यक्षेत्रसे पूर्ण रूपसे अवकाश ग्रहण करना नहीं है क्योंकि इच्छा और कार्य प्रकृतिके अनुकूल हैं और जीवनका आधार हैं बल्कि त्यागका अर्थ यह है कि कार्यके परिणामसे लगाव न हो।

कार्यकी जड़ है कामना और अभिलाषा। इसी कारण सूफी और सिद्ध अभिलाषाको मिटा देनेका उपदेश देते रहे हैं क्योंकि इससे दुख और मोहका जन्म होता है।

इकबालने उर्दू शायरीकी इस वर्णनात्मक प्रवृत्तिको बिल्कुल उलट दिया। इकबालने कामना और अभिलाषाको जीवनका आधार माना है और जीवनकी पहचान बताया है। जीवन घोर शान्ति का नाम नहीं। यह घोर शान्ति तो पेड़ों और पौधोंको भी प्राप्त है और उनसे कहीं अधिक शान्ति पत्थरों और अचल जड़ वस्तुओंको प्राप्त है। जीवन शान्ति नहीं वह तो निरन्तर गतिशील और अशान्त है। गति मनुष्यके वातावरणमें असन्तुष्ट होने और उसमें नई कामना नई अभिलाषा और नए उत्साहके परिणाम स्वरूप पैदा होती है। इसलिए इकबाल शान्तिको मृत्यु और गतिको जीवनका द्योतक मानते हैं।

अतः इकबाल चञ्चल हृदयको कामनाओंसे खाली करने और अभिलाषाओंको कुचल डालनेके स्थानपर कामना और अभिलाषाके उपासक हैं। उनको वह मनुष्य वह राष्ट्र और वह समाज पसन्द है जो नई कामनाओंके लिए व्याकुल और उत्सुक हो। कामनासे कार्यका उत्साह पैदा होता है और कार्यसे मनुष्य अपने विचारके अनुसार समाजको परिवर्तित करता है और जीवनको नए सांचेमें ढालता है।

इन बातोंकी अभिव्यक्तिके लिए इकबालने कवितामें भिन्न भिन्न प्रतीक दिए हैं और पुराने शब्दोंकी नई टीका करके व्यक्त किया है। किसी आदर्श या उद्देश्यकी लगन और उत्साहको वे इश्क (प्रेम) का नाम देते हैं। कामनाको वे खुदी (आत्मत्व) कहते हैं और ये दोनों शब्द उनकी शायरीका मुख्य आधार हैं।

इकबाल कामनाकी व्याकुलताको व्यक्तित्वका आधार मानते हैं और इसी लिए वे इब्लीस या शैतानको फरिश्तोंसे ऊँचा स्थान देते हैं। मानवको इस नाते अधिक सम्मान प्रदान करते हैं।

शैतान या इब्लीसके सम्बन्धमें इस्लाममें जो बातें बताई हैं उनके अनुसार इब्लीस भी पहले एक फरिश्ता था और उसको फरिश्तोंको शिक्षा दीक्षा देनेका काम

और विलास नहीं केवल श्रद्धा और आन्तरिक ध्यान है। जब मनुष्य अपने अस्तित्वको खो देता है और अपने व्यक्तित्व और भौतिक चेतना या अविद्याको छोड़ता है तभी वह परमात्माका मूल रूप पा सकता है।

अतः आध्यात्मिक वास्तविकताको पानेके लिए स्वयं अपनेको खोना आवश्यक है और अपने आपको खोनेका अर्थ यह है कि मनुष्य सबसे पूर्व अपनी कामनाओं स्पृहाओं और अभिलाषाओंको पूरी तरह शमन कर ले। लालसा और कामना ही मनुष्यको संसारका लोभी बनाती है और उन्हींके लिए मनुष्य दौड़-धूप करता है श्रम करता है और सुखसे बढ़ी अधिक दुख उठाता है। इस प्रकार मनुष्यके भौतिक जीवनका आधार कामना ही है।

इस विचारधाराका परिणाम यह हुआ कि एशियामें साधारण रूपसे और भारतमें विशेष रूपसे कर्मक्षेत्रसे जनताका ध्यान हट गया। भौतिक उन्नतिको भ्रम समझा जाने लगा। और उसका स्थान अध्यात्मवाद और भक्तिने ले लिया।

भारतीय दर्शनमें तो उपनिषदों और वेदान्तकी यह परम्परा बहुत पुरानी थी परन्तु इकबालके अनुसार इस्लाममें भी अरबके कार्यकुशल राष्ट्र और अरबजन जनतामें परवान चढ़ा था सूफी मतका अध्यात्मवादी रूप ईरानमें आनेके बाद आरम्भ हुआ। इसको ब्राउन जैसे प्रसिद्ध विद्वानने कुछ तो यूनानी अध्यात्मवादका प्रभाव बताया है और कुछ ईरानके परम्परागत मत और आर्योंकी अन्तर्मुखी प्रकृति और स्वभावका परिणाम बताया है। कुछ विद्वान उसे भारतीय दर्शनशास्त्रके अरबी अनुवाद द्वारा इस्लामी संसारमें पहुँचनेका प्रभाव मानते हैं। इकबालने इसे अजमी प्रभाव बताया है।

कारण कुछ भी क्यों न हो सूफी मत एक अभिलाषा विरोधी अन्तर्मुखी मतके रूपमें सारे इस्लामी देशोंमें प्रचलित हुआ। लोग तन की दुनिया और भौतिकवादको छोड़कर मन की दुनियाकी खोजमें लग गए। इसका बड़ा यह प्रभाव पड़ा कि एशियामें साधारण रूपसे और भारतमें विशेष रूपसे उदारता प्रेम और एक दूसरेके प्रति प्रेमकी भावना आयी और त्याग और सांसारिक मोहसे तपस्वी और सन्यासीपन-सा पृथकत्व पैदा हो गया। और यही भारतीय भाषाओंकी कविताका मूल सुर बन गया।

उर्दू शायरीकी परम्पराका भी मूल आधार यही है। उर्दू कविताके जन्म ही से अभिलाषा विरोधी और त्यागवादी विचारकी प्रधानता रही और सारा जोर इसी पर दिया जाता रहा कि जीवन विरह है और प्रियसे मिलनका एक मात्र साधन यही है कि भौतिकवादसे मुक्ति प्राप्त की जाए और अपनी हस्तीको मिटा दिया जाए। क्योंकि कामनाहीन अभिलाषाहीन बल्कि चेतनाहीन होना ही मुक्तिका एकमात्र साधन है।

इस परम्पराकी विरोधी प्रवृत्तियाँ भारतीय दर्शनमें भगवद्गीता और श्री रामानुजके पंथमें मिलती हैं और इसीलिए इकबालने श्रीमद् भगवद्गीताके जिस रूपकी

प्रशंसा की है वह है कार्यशील और कर्मरत व्यवसाय रूप। वे लिखते हैं कि मानवताके इतिहासमें श्रीकृष्णका नाम सदा सम्मान और आदरसे लिया जाएगा कि इस सर्वश्रेष्ठ महापुरुषने एक अत्यन्त मनमोहक रूपसे अपने राष्ट्र और जनताकी दार्शनिक परम्पराकी आलोचनाकी और इस वास्तविकताको प्रगट किया कि सन्यास का अर्थ कार्यक्षेत्रसे पूर्ण रूपसे अवकाश ग्रहण करना नहीं है क्योंकि क्रिया और कार्य प्रकृतिके अनुकूल हैं और जीवनका आधार हैं बल्कि त्यागका अर्थ यह है कि कार्यके परिणामसे लगाव न हो।

कार्यकी जड़ है कामना और अभिलाषा। इसी कारण सूफी और सिद्ध अभिलाषाको मिटा देनेका उपदेश देते रहे हैं क्योंकि इससे दुख और मोहका जन्म होता है।

इकबालने उर्दू शायरीकी इस ध्वंसात्मक प्रवृत्तिको बिलकुल उलट दिया। इकबालने कामना और अभिलाषाको जीवनका आधार माना है और जीवनकी पहचान बताया है। जीवन घोर शान्ति का नाम नहीं। यह घोर शान्ति तो पेड़ों और पौधोंको भी प्राप्त है और उनसे कहीं अधिक शान्ति पत्थरों और अचल जड़ वस्तुओंको प्राप्त है। जीवन शान्ति नहीं वह तो निरन्तर गतिशील और अशान्त है। गति मनुष्यके वातावरणमें असन्तुष्ट होने और उसमें नई कामना नई अभिलाषा और नए उत्साहके परिणाम स्वरूप पैदा होती है। इसलिए इकबाल शान्तिको मृत्यु और गतिको जीवनका द्योतक मानते हैं।

अतः इकबाल चञ्चल हृदयको कामनाओंसे खाली करने और अभिलाषाओंको कुचल डालनेके स्थानपर कामना और अभिलाषाके उपासक हैं। उनको वह मनुष्य वह राष्ट्र और वह समाज पसन्द है जो नई कामनाओंके लिए व्याकुल और उत्सुक हो। कामनासे कर्मका उत्साह पैदा होता है और कार्यसे मनुष्य अपने विचारके अनुसार समाजको परिवर्तित करता है और जीवनको नए साँचेमें ढालता है।

इन बातोंकी अभिव्यक्तिके लिए इकबालने कविताओंमें भिन्न भिन्न प्रतीक लिए हैं और पुराने शब्दोंकी नई टीका करके व्यक्त किया है। किसी आदर्श या उद्देश्यकी लगन और उत्साहको वे इश्क (प्रेम) का नाम देते हैं। कामनाको वे खुदी (अस्तित्व) कहते हैं और ये दोनों शब्द उनकी शायरीका मूल आधार हैं।

इकबाल कामनाकी व्याकुलताको व्यक्तित्वका आधार मानते हैं और इसी-लिए वे इब्लीस या शैतानको फ़रिश्तोंसे ऊँचा स्थान देते हैं। मानवको इन दोनोंसे अधिक सम्मान प्रदान करते हैं।

शैतान या इब्लीसके सम्बन्धमें इस्लामने जो बातें बताई हैं उनके अनुसार इब्लीस भी पहले एक फ़रिश्ता था और उसको फ़रिश्तोंको शिक्षा दीक्षा देनेका काम

सौंपा गया था परन्तु जब खुदाने मिट्टीसे मानवका पुतला बनाया और उसमें जान डालकर फ़रिश्तोंसे कहा कि मानव अबसे मेरा उत्तराधिकारी होगा और उसको सब सजदा (दण्डवत) करें। सभी फ़रिश्तोंने इस आज्ञाका पालन किया परन्तु इब्लीसने कहा कि हम अग्निसे बने हैं हम मिट्टीसे बने इस मानवको क्यों सम्मान दें और खुदाने इस विद्रोहका दण्ड उसे दुनियामें भेजकर दिया जहाँ वह मानवको अच्छाईके रास्तेसे बहकानेमें लगा हुआ है। इसी इब्लीसी षड्यन्त्रका परिणाम यह था कि आदमको जिन्हें खुदा ने अपना उत्तराधिकारी बनाया था इब्लीसने उनकी पत्नी हौवा द्वारा बहकाया और गेहूँके दानेपर उकसाया और काम ईर्ष्यामें फँसाकर मानवके इस पूर्वजके मनमें आकांक्षा और विद्रोहकी चिनगारी भड़काकर उन्हें हौवा सहित जन्नत (स्वर्ग) से निकलवाया।

इक़बालने इस किस्सेकी टीका इस प्रकार की है कि फ़रिश्ते अभिलाषाहीन हैं। उनके मनमें लेशमात्र भी कामना नहीं है। इसलिए वे इब्लीस या शैतानसे भी नीचे हैं क्योंकि शैतानका एक अस्तित्व था। उसके मनमें विद्रोह ही की सही परन्तु एक चिनगारी अवश्य थी और उस चिनगारीने उसे कार्यका मार्ग दिखाया। यह और बात है कि उसकी कामनाएँ उसे गलत रास्तेपर भटका ले गईं और उनपर अच्छाई और मस्तिष्कका कोई नियन्त्रण नहीं रहा। मानवकी पदवी शैतानसे भी महान है कि उसके पास कामना और अभिलाषा की पूँजी भी है जो उसे कार्यक्षेत्रमें ले जाती है और उसके साथ-साथ वह अपनी अभिलाषाओंको नियन्त्रित करनेकी शक्ति भी रखता है।

इक़बाल भटकी हुई तृष्णा या अभिलाषाकी आलोचना अवश्य करते हैं परन्तु उसे अभिलाषाहीन होनेसे कहीं अच्छा मानते हैं। शक्ति कार्यशीलता और अपूर्व अभिलाषाको इक़बालने स्थान-स्थानपर आदर्शके रूपमें अनेक प्रकारसे प्रस्तुत किया है। विशेषकर विभिन्न पक्षियों और प्रतीकोंके रूपमें वह अच्छी चीज़ोंको चाहने और इनके लिये कार्यक्षेत्रमें तन मन धनकी बाज़ी लगानेवाली शक्तिको दिखाते हैं। शाहीनको उन्होंने इसी प्रकारसे प्रतीक बनाया है कि यह पक्षी दूसरोंके विपरीत कभी घोंसला नहीं बनाता और सदा शिकार करके खाता है ऊँचा उड़ता है। एक स्थानपर शाहीन कौएको जवाब देते हुए कहता है —

जो कबूतरके झपटनेमें मज़ा है हम नशीं
वह मज़ा शायद कबूतरके लहूमें भी नहीं॥

अथवा असल मज़ा किसी चीज़की प्राप्तिमें भी इतना नहीं होता जितना कि उसकी प्राप्तिके लिये दौड़-धूप करनेमें है। जीवन-संघर्षका मूल तत्व यही है। कर्म का उत्साह और लगन है मूल उद्देश्य यही है बाकी सारे उद्देश्य बहाने मात्र हैं।

इक़बालने इसी प्रवृत्तिसे संकेतों और प्रतीकोंका एक पूरा भण्डार जुटाया है। उनकी सबसे बड़ी सफलता यही है कि उन्होंने पुराने शब्दोंको नए अर्थ और

संकेत दे दिये। इश्क अक्ल खिरद (बुद्धि) अमर (काम) आदि अनेक शब्दोंको उन्होंने नवीन बना दिया है।

परन्तु उनका सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक "मर्द मोमिन" है। यूं साधारण रूपसे इसका अनुवाद धर्मात्मा ही हुआ परन्तु इकबालने उसे एक महा-मानवके अर्थमें लिया है। ऐसे मानवमें उनके अनुसार केवल खुदी ही नहीं होती कामना और अभिलाषा ही की ज्योति नहीं होती बल्कि वह अपनी व्यक्तिगत कामनाओंको समाजकी सामूहिक कामनाओं और अभिलाषाओंसे समन्वित कर देता है।

इकबालके अनुसार कामना और अभिलाषाके दो रूप हैं। एक केवल व्यक्तिगत जिसमें मनुष्य अपना भला चाहता है और उसका हित समाजके हितसे टकराता है। यही खुदी या व्यक्तिगत कामनाओंका शैतानी रूप है। इसमें संसार भरके सारे हत्यारे, चोर लुटेरे और युद्ध प्रेमी सम्राट् आ जाते हैं परन्तु इसका एक दूसरा रूप यह है कि व्यक्तिकी कामना समाजके हितसे न टकराए और दोनोंके लिए लाभदायक हो। कामना और अभिलाषापर अगर किसी रूपसे नियन्त्रण रखा जा सकता है तो इसी तरह कि उन्हें पूर्ण रूपसे समाज हितके अधीन कर दिया जाए।

जो व्यक्ति ऐसा कर पाते हैं वे केवल स्वयं ही अमर नहीं हो जाते बल्कि अपने युगको नया मार्ग दिखानेवाले सिद्ध होते हैं। यहां इकबाल अध्यात्मवादके बहुत निकट होकर यह सोचते हैं कि राष्ट्रों और देशों ही का नहीं शायद मानवताके विभिन्न युगोंका उत्थान पतन भी केवल भौतिक और राजनैतिक कारणों ही से नहीं होता बल्कि उनके पीछे किसी न किसी महापुरुषकी विचार शक्ति और सामूहिक कामनाकी चिनगारी भी होती है जो पूरे राष्ट्रके मनमें कार्यक्षेत्रमें कूद पड़नेकी ज्वाला भड़का देती है।

इकबालके महामानवकी विभिन्न टीकाएं की गई हैं। कुछने उसपर जर्मन दार्शनिक नीत्शेके सुपरमैन (Superman) महापुरुषका प्रभाव बताया है और इकबालको फासिज्मके निकट साबित कर दिया। वे आलोचक यह भूल गए कि इकबाल फासिज्मके मूल आधार राष्ट्रीयता और जातीयभेदको नहीं ही मानते न वे यह स्वीकार करते हैं कि दुनियामें किसी रंगवालों या किसी देशके रहनेवालोंको यह अधिकार है कि वह अपनेको अन्य देशों या राष्ट्रोंसे उच्च और श्रेष्ठ घोषित करें। कुछ और आलोचकोंने कहा है कि इकबालने अरब सूफी विद्वान अब्दुल करीम अल्जीलीकी की पुस्तक "इन्साने कामिल" से सहायता ली है। कुछ और लोग इस आदर्शकी जड़ कुरान और विशेष कर मौलाना जलालुद्दीन रूमीकी मसनवीको बताते हैं।

सत्य कुछ भी हो इकबालके महामानवका रूप भयानक और डरावना नहीं है। वे केवल उसकी शक्ति ही का चित्रण नहीं करते न केवल उसे नीत्शेके महापुरुषके समान युद्ध प्रिय और खून पिपासु नीति और नियमसे मुक्त दिखाते हैं बल्कि इकबालका महामानव मनमोहक भी है वह आत्मा अभी कार्यक्षेत्रमें दृढ़ और

मोह और वासनासे मुक्त है। उसके सब काम ईश्वरके उत्तराधिकारी होनेके रूपमें हैं जिनमें उसकी अपनी व्यक्तिगत आकांक्षा सम्मिलित नहीं है।

उसका हर काम ईश्वरके लिए है। उसका हाथ भगवानका हाथ और उसका कार्य खुदाका कार्य है और इस स्थानको वह मन मारकर और संसार छोड़कर संन्यास लेकर प्राप्त नहीं करता केवल कार्यक्षेत्र द्वारा प्राप्त करता है।

ऐसा समझना स्वाभाविक ही है कि इकबालने महा पुरुषका प्रतीक चुना चाहे कहींसे हो परन्तु इनकी रचनामें कुरान और इस्लामके मूल तत्वोंका ही प्रभाव है। तथापि यह भी सत्य ही है कि अनेक धर्मों और दर्शनोंकी भाँति इस्लामकी भी कई रूपसे टीका हुई है। इकबाल भी ऐसा ही मानते हैं परन्तु उनके अनुसार इस्लामका सच्चा रूप वह है जो हजरत मुहम्मद और उनके चारों उत्तराधिकारियोंके युगमें माना और उपयोगमें लाया गया।

इस्लामका यह रूप इकबालके अनुसार ईरानी प्रभाव और सूफी मतके प्रचलित रूपसे भिन्न है। इस्लाम इकबालके अनुसार व्यावहारिक धर्म है जो किसी एक जाति राष्ट्र या रंग तक सीमित नहीं। इस्लाम संन्यासका नहीं कार्यशीलताका प्रचारक है। व्यक्तिगत काम मोह और लालसा के विपरीत परिणाम-की चिन्तासे मुक्त होकर अपने कर्तव्यका पालन करना और संसारको त्याग देनेके स्थानपर उसे ईश्वरकी इच्छाके अनुसार मानव समाजकी भलाई और नैतिक उन्नतिके उद्देश्यसे परिवर्तित करनेका नाम है।

इस्लामके इस रूपकी जानकारी प्राप्त करनेपर इकबालको संकीर्ण और साम्प्रदायिक कहना कठिन है। वे इस्लामको एक धर्म एक सम्प्रदाय नहीं मानते बल्कि एक ऐसी नीति और नियम मानते हैं जो सारी मानवताके लिए मुक्तिका सन्देश है। वह जीवनका एक नया विधान है। इसीलिए वे मुल्ला और कट्टर पन्थी मौलवियोंकी कड़ी आलोचना करते हैं जो इस्लामके बाहरी रूपको महत्व देते हैं और उस जीवन विधान और नियमोंको नहीं पहचानते जिनके प्रतीक इन बाहरी नियमोंमें मिलते हैं। उनके अनुसार इस्लाम पहला धर्म है जिसने धर्मके संकीर्ण अर्थसे निकलकर एक व्यावहारिक जीवन विधानका रूप लिया। संसार त्यागके स्थानपर संसार परिवर्तनके उत्साहको महत्व दिया संसारकी सारी शक्तियोंको ललकारकर केवल एक ईश्वरपर विश्वासका प्रचार किया और जातिभेद, राष्ट्र भेद, रंगभेद वर्णभेद और कुलभेदको समाप्त कर सारी मानव जातिको एक स्तरपर खड़ा कर दिया और सबको अपने अपने कार्यक्षेत्रमें अपनी महानता सिद्ध करनेके समान अवसर दिये।

एक तरह इकबालका इस्लाम बड़ा विशाल और महान जीवन-आधार है। जिस प्रकार तुलसीदासकी रामायण और मिल्टनकी पैराडाईज लॉस्ट या दांतेकी "डिवाइन कामेडी" को केवल सनातन धर्म या ईसाईयतकी पुस्तकें कहकर संकीर्ण

या साम्प्रदायिक नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार इकबालके दर्शनको भी कोरा धार्मिक या साम्प्रदायिक घोषित करना ठीक नहीं है। पाकिस्तान बननेपर उस देशमें यह प्रवृत्ति उभरी है कि वह इकबालको इस्लामी शायर कहकर उन्हें पाकिस्तानका श्रेष्ठ निर्माता घोषित करने लगे हैं। इसका आधार वे इकबालकी उन एक कविताओंमें ढूंढते हैं जिनमें उन्होंने हिन्दुस्तानसे बुखारा और काशगर जैसे सभी राष्ट्रोंके मुसलमानोंको एक हो जानेका सन्देश दिया है या उनका वह भाषण जो उन्होंने मुस्लिम लीगके अधिवेशनमें सभापति पदसे दिया था इसकी पुष्टिमें प्रस्तुत किया जाता है। परन्तु ये प्रमाण काफी नहीं हैं। इकबालने जिस पाकिस्तानकी कल्पना की थी वह हिन्दुस्तानके टुकड़े करके बनाया जानेवाला राष्ट्र नहीं था।

यहाँ यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये कि इकबालके यहाँ महामानवकी कल्पनामें कुछ उलझनें हैं। "शिकवा" और "जवाबे शिकवा" में वे केवल ऐसे मुसलमानोंकी जबानी फरयाद करते हैं जो मुसलमान घरानोंमें जन्म पानेसे मुसलमान कहे जाते हैं परन्तु उनकी अनेक नज़्मोंमें महामानवका यह रूप केवल जन्म द्वारा मुसलमान कहे जानेवालों तक सीमित नहीं है बल्कि उन सबके लिए है जो इस्लामको जीवन दर्शनके रूपमें मानते हैं। ये व लोग हैं जो समाजमें परिवर्तन करते हैं और जिनका जीवन एक प्रेरणा भी है और तपस्या भी।

इन व्यक्तियोंके व्यक्तित्वको इकबालने बड़ा महत्व दिया है। एक स्थान-पर तो यहाँ तक कह दिया है कि —

खुदीको कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीरसे पहले।
खुदा बंदेसे खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है॥

[अपने आत्म सम्मान और कामनाओंको इतना उच्च रखना चाहिए कि स्वयं ईश्वर मानवसे उसकी इच्छा पूछने लगे।]

इकबालके अनुसार मानव एक मजबूर और क्षणभर बाद मिटनेवाला बुलबुला नहीं है जो मिटनेपर अपना व्यक्तित्व खो देता है बल्कि वह एक ऐसा अस्तित्व है जो अमर है। इसलिए वे सूफियों और भक्तोंकी तरह इस बातको नहीं मानते कि आत्मा मृत्युके बाद परमात्मामें समन्वित होकर अपना व्यक्तित्व खो देगी। सूफियोंकी एक भारी संख्याने अहंभावके मिट जाने और मृत्यु या समाधिके बाद परमात्मामें इस प्रकारसे घुल-मिल जानेको अपना उद्देश्य बनाया है कि "तू मैं बन जाए और मैं तुम बन जाऊँ।"

इकबाल मानवके अस्तित्वको किसी दिशामें भी उसके व्यक्तित्वका नाश होने की कल्पना नहीं करते। सांसारिक बन्धनोंसे मुक्त हो जानेपर भी वे मानव और परमात्माके ऐसे समन्वयको मानते हैं जिसमें मानवके व्यक्तित्वमें बाधा नहीं पड़ती और वह परमात्माके अत्यन्त निकट और सम्बन्धित अवश्य रहता है। ये दोनों व्यक्तित्व उनके अनुसार अलग अलग भी हैं और एक दूसरेसे सम्बद्ध भी।

इकबालके व्यक्तित्ववादपर बर्गसाँके दर्शनका प्रभाव भी बताया जाता है। जिस प्रकार बर्गसाँने रचनात्मक परिणामवाद (Creative Evolution) को एक ऐसी शक्ति बताया है जो रचनात्मक ढंगसे अपनेको संसारमें अनेक रूपमें व्यक्त करती है और उन्नति तथा समाज कल्याण की ओर ले जाती है। यही छुपी हुई शक्ति इकबालके यहाँ "खुदी" बन जाती है और उसीको वह व्यक्तियों और राष्ट्रोंकी उन्नतिका मूल और मूल आधार मानते हैं।

इकबाल इस शक्तिको मृत्युसे ऊँचा और अमर मानते हैं। शायरी नामे में उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि यमदूत व्यक्तिको तो नष्ट कर सकता है परन्तु एक व्यक्ति की मृत्युके साथ ही दूसरे अनेक व्यक्ति जन्म लेते हैं। डालीपर एक फूलके मुरझानेसे बागकी बहार नहीं लुट जाती। अनेक फूल खिलकर उसका स्थान ले लेते हैं। और इस प्रकार जीवन प्रवाह चलता रहता है। वे आवागमनको नहीं मानते और उन्होंने स्पष्ट रूपसे इस विश्वासका वर्णन किया है कि जीवन-पुष्प कभी पहले रूपमें नहीं लौटता और हर पल नये दृश्य और नये रूप दिखाता रहता है।

मृत्युको इकबाल जीवनका अन्त नहीं मानते केवल उसका परिवर्तित रूप मानते हैं। वह केवल शरीरको नष्ट कर सकती है परन्तु आदर्श और कामना और कार्यकी चलती हुई लहरको नहीं रोक सकती। मानव मर जाता है परन्तु उनके साहस लगन कामना और उत्साह और दृढ़ विश्वास से पूर्ण किये कार्य संसारमें परिवर्तन करते रहते हैं। इकबालके अनुसार "मोमिन" की सच्ची पहचान ही यह है कि मृत्युका स्वागत मुस्कराते होठोंसे कर सके। मृत्यु वास्तवमें यदि किसी चीजका नाम है तो वह साँसके आने जाने या रुक जानेका नहीं बल्कि मनमें कामना और उत्साहके न होनेका नाम है।

इकबालने इसी प्रकार समय और स्थान दोनोंके नये रूप अपनाए हैं। वे बर्गसाँकी तरह यह मानते हैं कि स्थान केवल भौतिक वस्तु है और भौतिक वस्तुएं सब की सब अन्तिम विश्लेषणमें शक्ति या एनर्जी में परिवर्तित हो सकती हैं। और समय वास्तवमें उसी छिपी हुई एनर्जी या शक्तिका नाम है जिसने संसारमें शायद चेतनाके साथ-साथ ही प्रवेश किया होगा। इस तरह स्थान और समय दर असल एक ही रचनात्मक शक्तिके दो रूप हैं। कहा जाता है कि जब बर्गसाँसे इकबालकी मुलाकात हुई और इकबालने उसे हजरत मुहम्मदकी यह वाणी सुनाई कि खुदाने कहा है कि मैं स्वयम् जमाना या समय हूँ तो बर्गसाँ उछल पड़ा। इस वाणीपर बहुत कुछ किया गया है और कुछ लोगोंका विचार है कि इसका अर्थ केवल इतना ही है कि खुदाने जमानेको बुरा कहनेकी इसलिए मनाही की है कि समय और जमानेकी रचना भी तो स्वयं खुदा ही ने की है। इकबालका समय सम्बन्धी सारा दर्शन "तस्खिरे फरतरा" के आरम्भमें आ गया है।

अन्तमें दो शब्द इकबालकी कविता-कलाके सम्बन्धमें कहना है।

इकबालके पूर्व उर्दू शायरीका बड़ा भाग ग़ज़ल ही का था। ग़ज़लमें यूँ तो रोमान्टिक होती है परन्तु उसकी सीमित भाषा और प्रतीक प्रणालीमें हर युगमें परिवर्तन होते आये हैं और नैतिक और कभी-कभी दार्शनिक और राजनैतिक विषय तक उसमें घुस गये हैं। फिर भी इकबालसे पहले पूरी शायरीमें केवल गालिब ही एक उदाहरण मिलता है जिसने ग़ज़लको दार्शनिक बोझ और गहरे सूक्ष्म विचारका माध्यम बनाया। गालिबने उर्दू शायरीको मस्तिष्क दिया परन्तु यह खोज करनेवाला सन्देह करनेवाला मस्तिष्क था।

१८७४ में सर सय्यद अहमद खाँ और उनके साथियोंने शायरीमें कोरी अन्तर्मुखी बातों या रोमांसके स्थानपर राष्ट्र और समाज कल्याणका रंग पैदा करनेकी बात चलाई और हाली आज़ाद शिब्ली इस्माईल और कुछ दिनों बाद अकबर और चकबस्तने राष्ट्र प्रेम और नैतिकताको शायरीका विषय बनाया और नज़्मोंका युग आरम्भ हुआ।

ग़ज़लोंका दार्शनिक सूत्र केवल सूफ़ी मतमें ही था और चाहे शायर सूफ़ी हो या न हो वह सदा अपनी कवितामें रहस्यवाद पैदा करनेके लिए सदा सूफ़ीमतके विचार ही व्यक्त करता था।

इकबालने इस परम्पराको बिल्कुल उलट दिया। उन्होंने पहली सफलता तो इसमें प्राप्त की कि दर्शनको शायरीका विषय बनाया जो उनकी बहुत बड़ी देन है। उनके दर्शन शास्त्रका महत्व है परन्तु उससे भी कहीं बड़े महत्वकी बात यह है कि वे दर्शन जैसे कठिन विषयको अपनी रसीली सजीली शायरीमें समोलेने और पूरी सुन्दरता और मिठाससे समोलेनेमें सफलता प्राप्त कर सके। इकबाल अकेले कवि हैं जिनका अपना दर्शन है जिनके पास प्रस्तुत करनेको एक सीधा और स्पष्ट जीवन विधान है।

इकबालने शायरी और कलाका जो उद्देश्य अपने सामने रखा था उसमें व्यक्तिगत रोमांसका स्थान न था। वे कलाको खुशी या उत्साह और कार्यप्रेम की ज्वालाको प्रज्वलित करनेका साधन मानते हैं। वह आर्ट जो मनुष्यमें थकावट और निराशा जगाए, उनके अनुसार आर्ट नहीं है। आर्ट और सुन्दरताकी कसौटी ही यह है कि उनसे जीवनका उत्साह बढ़े और कार्यके प्रति मानवको आकर्षण हो।

इस कसौटीको इकबालने स्वयं अपनी कविताओंमें भी बरता है। यह केवल इस कारण सम्भव हुआ कि इकबालने परम्परागत आई हुई शब्द प्रणालीको नए अर्थ और नई सीमाएँ प्रदान कीं। वे ग़ज़लकी परम्परासे भलीभाँति परिचित थे परन्तु उसकी सीमाओंको उन्होंने दर्शन शास्त्र तक फैला दिया। उनकी कवितामें शराब साक़ी और पैमाना या इश्क़ अक्ल और इल्म (ज्ञान) जैसे साधारण शब्द भी विशिष्ट अर्थमें हैं। इस प्रकारसे न एक ओर तो ग़ज़ल की शब्द प्रणालीसे काम लेकर उसके

रसीलेपनको क़ायम रख सके और दूसरी ओर अपने दर्शन शास्त्रके सारे विधानको इससे कविता और कलाका रूप दे सके।

इक़बालकी कलाकी एक दूसरी विशेषता यह है कि उनकी रचनात्मक शक्ति अद्वितीय है। उनकी नज़्मोंमें भरतीके बेकार या केवल आभूषण मात्र टुकड़े बहुत कम मिलेंगे। एक छोरसे दूसरे तक एक ऐसा रसात्मक और रचनात्मक सूत्र है जो निरन्तर बढ़ता जाता है और पूरी कविताको एक विचार-सूत्रमें बाँध लेता है।

इक़बालकी कविता कला इस कारण भी बड़ी महत्वपूर्ण है कि उनकी कविताएँ सुन्दर चित्रों कल्पनाओं और संगीतकी मधुर गूँजसे भरी हुई हैं। वे एक महान कलाकारकी भाँति जीवन ज्ञानके हर विभागसे पूरी स्वतन्त्रतासे अपने लिए सामग्री ले लेते हैं और कविता और कल्पनाके आधारपर दर्शन इतिहास और राजनीति जैसे—विषयोंको रसात्मक और आकर्षक बना देते हैं। इक़बालकी उपमाएँ और चित्र उनके संकेत और प्रतीक सभी एक मधुर और मनमोहक वातावरणको जन्म देते हैं और उनकी नज़्मोंमें एक ऐसा जादू पैदा कर देते हैं कि पढ़नेवाला उनमें खोया रहता है।

इक़बालकी कला शब्दावलीकी नहीं अर्थ और उत्साहकी कला है। जो कुछ वे लिखते हैं वह गहरे विश्वास और आदर्शका परिणाम होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी भावनासे विवश होकर कविता कर रहे हैं।

टी एस इलियटने शायरीकी जिन तीन आवाज़ोंका उल्लेख किया है उसके अनुसार इक़बालकी आवाज़ दूसरी श्रेणीकी है अथवा इक़बाल अपने आपसे स्वयं अपने व्यक्तिगत दुख-सुखकी बात न करके पूरे राष्ट्र बल्कि कभी-कभी पूरी मानवताको सम्बोधित करने लगते हैं परन्तु उनकी शायरी विशेषकर सम्बोधन की शायरी ही है और इस प्रकारकी शायरीमें उत्साह पैदा करना आसान होता है परन्तु रस पैदा करना बड़ा कठिन होता है। इक़बालकी बड़ी सफलता यही है कि वे दर्शन शास्त्रीसे कहीं बड़े शायर और कलाकार थे। उनकी शायरी युग राष्ट्र और देशकालकी सीमाओंसे ऊपर उठ चुकी है। वे लोग भी जो इक़बालके विचारोंसे सहमत नहीं हैं और उनके दर्शनशास्त्रको स्वीकार नहीं करते उनकी कलाके आगे माथा टेकते हैं।

यहाँ हमें एक प्रश्नपर और विचार करना है। इक़बालने समाजके किस रूपकी कल्पना की थी और वह मानव समाजकी रचना किन रेखाओंपर करना चाहते थे। यह पहले कहा जा चुका है कि इक़बाल पश्चिम और पूर्व दोनोंकी प्रवृत्तियोंके आलोचक थे। एशियामें उन्हें कार्य कुशलता कामना और उत्साहका अभाव दिखाई देता था जिसके कारण आध्यात्मिक और नैतिक गुणोंके होनेपर भी वह राजनैतिक और मानसिक पराधीनतामें बँधा हुआ है। इसके विपरीत योरोपका जीवनका

उत्साह, खुदी और अभिलाषाकी ज्योति उसकी शक्ति प्राप्त है परन्तु वह वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगिक उन्नतिकी दौड़में आत्मा और नीति ही नहीं बल्कि मानवताको भी खो बैठा है। उसके पास चिमनियोंका धुआँ और भौतिक सम्पत्ति और सांसारिक सुखके सामान तो अवश्य है परन्तु उसकी आत्मा सुखी नहीं है। वह उस शान्तिसे वंचित है जो लालसा और वासनाके ऊपर उठनेसे पैदा होती है। योरोपके पास 'खुदी' तो है परन्तु " शैतानी खुदी है जो सामाजिक अन्याय और ऊँच-नीचके रूपमें व्यक्त होती है।

इकबाल ऐसे समाजका स्वप्न देखते हैं जिसमें पूर्व और पश्चिम दोनों सभ्यताओंका समन्वय हो सके। इसका मूल आधार एशियाकी आध्यात्मिक शक्ति मानव प्रेम और नैतिकता होनी चाहिए और दूसरी ओर योरोपकी वह शक्ति और कार्यशीलता होनी चाहिए जो नई वैज्ञानिक चेतना ही को जन्म नहीं देती बल्कि उन्नतिका एक मात्र रास्ता दिखाती है। उन्हें एशियाके अन्तर्मुखीपन कर्महीनता और उत्साहहीन समाजसे भी घृणा है और योरोपकी मानवताहीन आत्माहीन बर्बरतापूर्ण समाजसे भी। इन दोनोंका समन्वय वह इस्लामी समाजकी कल्पनामें ढूंढते हैं जो सामाजिक भाईचारे, न्याय और मानवकी समानताके आधारपर स्थापित किया जाय।

क्या इकबालके इस सन्देशका नए भारत वर्षके लिए कोई महत्व है? इकबालको साम्प्रदायिक कह कर उनकी शिक्षाके महत्वसे वंचित रहना दुर्भाग्यकी ही बात है। इकबालने जिस नीरस निराशावाद और सांसारिक उन्नतिसे मुँह मोड़कर मनमें खो जानेकी प्रवृत्तिकी आलोचना की है वह आज भी भारतमें भली-भाँति प्रचलित है। भारतवर्ष जिस नए समाजका निर्माण कर रहा है उसके लिए नए मानवकी रचना आवश्यक है और यह तभी हो सकता है कि इकबालके स्वरमें स्वर मिलाकर अपने समाजमें व्याप्त निराशावाद अन्तर्मुखीपन और दुर्बलताका घोर खंडन किया जाय।

यह बार-बार कहा गया है कि इकबालका दर्शन केवल इस्लाम पर निर्भर करता है। परन्तु जिस प्रकार स्वयं इकबालने पूर्व और पश्चिमके विद्वानों और दर्शन शास्त्रियोंसे चुन चुनकर गुण ग्रहण किए हैं उसी प्रकार इकबालके दर्शनशास्त्र और उनकी कविताके मूल गुणोंको चुनकर अपनानेकी आवश्यकता है। इकबालने भर्तृहरि, स्वामी रामतीर्थ गुरु नानक श्री रामचन्द्रजी और श्रीकृष्णका स्थान स्थानपर बड़ी प्रशंसात्मक वर्णन किया है उसी प्रकार वे ईरानके रूमी योरोपके नीत्शे मार्क्स लेनिन मुसोलिनी नैपोलियन बर्गसाँ और दूसरे विद्वानोंका भी वर्णन करते हैं।

आज इकबालके दर्शन शास्त्रसे नए भारत वर्षको यह सीख लेनी चाहिए कि जीवन गतिमें है और जो व्यक्ति या राष्ट्र गति और कार्यके उत्साहमें विश्वास रखते

१ नया शिवाला

सच कह दूं ऐ ब्रह्मन गर तू बुरा न माने।
तेरे सनमकदोंके बुत हो गए पुराने।।
अपनोंसे बैर रखना तू ने बुतोंसे सीखा।
जंगो जदल सिखाया वाइजको भी ख़ुदाने।।
तंग आके मैंने आखिर दैरो हरमको छोड़ा।
वाइज का वाज छोड़ा छोड़े तिरे फ़साने।।
पत्थरकी मूरतोंमें समझा है तू ख़ुदा है।
ख़ाके वतनका मुझको हर ज़र्रा देवता है।।

आ ग़ैरियतके पर्दे एक बार फिर उठा दें।
बिछड़ोंको फिर मिला दें, नक़्शे दुई मिटा दें।।
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिलकी बस्ती।
आ एक नया शिवाला इस देसमें बना दें।।
दुनियाके तीर्थोंसे ऊँचा हो अपना तीरथ।
दामाने आस्मांसे उसका कलस मिला दें।।
हर सुबह उठके गाएँ मन्तर वह मीठे मीठे।
सारे पुजारियोंको मय पीत की पिला दें।।
शक्ति भी शान्ति भी भक्तोंके गीतमें है।
धरतीके वासियोंकी मुक्ती प्रीतमें है।।

---

२. नया शिवाला

ऐ ब्राह्मण! यदि तू बुरा न माने तो एक सच बात कह दूं कि तू जिन मूर्तियोंको पूजता है वे अब बहुत पुरानी हो गई हैं। तूने इन मूर्तियोंसे यह सीखा है कि अपनोंसे दुश्मनी करे और इसी प्रकार मुल्लाने खुदासे केवल यही सीखा है कि अपनोंसे लड़ाई-झगड़ा किया जाए। मैंने तंग आकर मस्जिद और मन्दिर दोनोंको त्याग दिया है मुल्लाके उपदेश और तेरी कथाएँ सभी छोड़ दी हैं। तू समझता है कि खुदा पत्थरकी मूर्तियोंमें है, मेरे लिए तो अपने देशकी मिट्टीका हर कण देवता ही जान पड़ता है।

आ, हम आपसमें मिलकर एक हो जाएँ और एक दूसरेको गैर समझना छोड़ दें जो फूटसे बिछुड़ गए हैं उन्हें फिर मिला लें और अपने को दो अलग अलग अस्तित्व समझने वालोंको एक बना दें। एक ज़मानेसे मनकी दुनियामें सन्नाटा छाया है इस देशमें अब एक नया मन्दिर बनानेका समय आ गया है। यह मन्दिर दुनियाके सारे तीर्थोंसे ऊँचा हो और उसका कलश आकाश तक पहुँचता हो। हर प्रभातको उठकर उसके पुजारी मीठे मन्त्र पढ़ें और सब प्रेम और प्रीतिकी मदिरा पिएँ। भक्तोंके गीतमें शान्ति भी है और शक्ति भी। धरतीके वासियोंकी मुक्ति प्रीतिमें है।

---

३ खिज़्र राह

बर तर अज़ अन्देशाए सूदो ज़ियाँ है ज़िन्दगी।
है कभी जाँ और कभी तस्लीमे जाँ है ज़िन्दगी॥
तू इसे पैमानए इमरोज़ो फ़र्दासे न नाप।
जाविदाँ पैहम दवाँ हर दम जवाँ है ज़िन्दगी॥
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर ज़िन्दोंमें है।
सिर्रे आदम है ज़मीरे कुन फ़काँ है ज़िन्दगी॥
ज़िन्दगानीकी हक़ीक़त कोहकनके दिलसे पूछ।
जूए शीरो तेशओ संगे गराँ है ज़िन्दगी॥
बन्दगीमें घुटके रह जाती है एक जूए कम आब।
और आज़ादीमें बहरे बेकराँ है ज़िन्दगी॥
आशकारा है यह अपनी कुव्वते तसख़ीरसे।
गर्चे एक मिट्टीके पैकरमें निहाँ है ज़िन्दगी॥
कुल्ज़ुमे हस्तीसे तू उभरा है मानिन्द हुबाब।
इस ज़ियाँ ख़ानेमें तेरा इम्तहाँ है ज़िन्दगी।
ख़ाम है जब तक तो है मिट्टीका एक अंबार तू।
पुख़्ता हो जाए है तो है शमशीरे बे ज़िन्हार तू॥

३ खिज्र राह

["खिज्र राह" इक़बालकी अच्छी नज़्मोंमें है जिसमें कवि पैग़म्ब
खिज्र से जीवन और संसारकी स्थितिके सम्बन्धमें प्रश्न करता है। खिज्र
हज़रत मुहम्मदसे बहुत पहले हो गए थे और उनके बारेमें विश्वास किया जाता
कि उनकी रहती दुनिया तक मृत्यु नहीं और वह अब भी भटके हुए लोगोंको मा
दिखाते हैं—

नीचे इक़बालकी इस कविताके केवल वे भाग दिये जाते हैं जिनमें कवि
प्रश्न पर खिज्र जीवन आधार और राजसत्ता तथा गणतन्त्रवादपर अपने विचा
प्रस्तुत करते हैं। इन अंशोंको पढ़ते समय याद रखना चाहिए कि यह कवित
उस समय लिखी गई थी जब रूसमें समाजवाद पूरी तरह दृढ़ भी न हुआ थ
और उसकी चर्चा जनसाधारणकी ज़बानपर आजकी तरह न थी।]

जीवन लाभ और हानिसे कहीं ऊँचा है। कभी प्राण है औ
कभी प्राणोंका बलिदान। तू इसको आज और कलके प्याले द्वारा
नाप क्योंकि जिन्दगी कभी समाप्त होनेवाली नहीं और हर क्षण आग
बढ़ती रहती है। यदि अपनेको जीवित कहता है तो अपनी दुनिय
आप ही पैदा कर क्योंकि जिन्दगी मानव पिता (आदम) का भेद
और यही वह चमत्कारिक मन्त्र है जिससे ईश्वरने संसारकी रचना की
जीवनकी वास्तविकता तो फ़रहादसे दिल्से पूछनी चाहिए जिसने अपनी
प्रिय शीरींको प्राप्त करनेके लिए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ोंको काटकर दूधकी
नहर बनाई थी। जीवन भी इसी प्रकारके कठोर परिश्रमका नाम
जिसके प्रतीक नहर विशाल पहाड़ और फ़रहादका कुल्हाड़ा है
गुलामीमें जीवनकी लालसा घटकर एक छोटी-सी नहरकी भाँति र
जाती है और स्वतन्त्रतामें यही नहर एक महासागर बन जाती है। या
जीवन लालसा अभिलाषा केवल अपनी विजय पानेकी शक्तिसे व्यक्त
होती है यद्यपि यह जीवन धारा एक मानवके रूपमें एक मिट्टीके पुतलम
छिपी रहती है। तू जीवनके महासागरमें एक बुलबुलेकी भाँति उभरा है
हर क्षण घाटा देनवाले स्थान तेरी इस जिन्दगीकी परीक्षाएं हैं। जबतक
तेरे अन्दर जीवन-अभिलाषा कच्ची है उस समय तक तो केवल मिट्टीकी
मूर्ति समान है, परन्तु यदि यह अभिलाषा पक्की हो जाए तो एक ऐसी
तलवारकी भाँति हो जाएगी जिसका वार अचूक होता है।

३ ख़िज़्र राह

बर तर अज़ अन्देशाए सूदो ज़ियाँ है ज़िन्दगी ।
है कभी जाँ और कभी तस्लीमे जाँ है ज़िन्दगी ॥
तू इसे पैमानए इमरोज़ो फ़र्दासे न नाप ।
जाविदाँ पैहम दवाँ हर दम जवाँ है ज़िन्दगी ॥
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर ज़िन्दोंमें है ।
सिर्रे आदम है ज़मीरे कुन फ़काँ है ज़िन्दगी ॥
ज़िन्दगानीकी हक़ीक़त कोहकनके दिलसे पूछ ।
जूए शीरो तीशाओ संगे गराँ है ज़िन्दगी ॥
बन्दगीमें घुटके रह जाती है एक जूए कम आब ।
और आज़ादीमें बहरे बेकराँ है ज़िन्दगी ॥
आशकारा है यह अपनी क़ुव्वते तसख़ीरसे ।
गर्चे एक मिट्टीके पैकरमें निहाँ है ज़िन्दगी ॥
क़ुल्ज़मे हस्तीसे तू उभरा है मानिन्द हुबाब ।
इस ज़ियाँ ख़ानेमें तेरा इम्तहाँ है ज़िन्दगी ।
ख़ाम है जब तक तो है मिट्टीका एक अंबार तू ।
पुख़्ता हो जाए है तो है शमशीरे बे ज़िन्हार तू ॥

३ खिज्र राह

["खिज्र राह" इकबालकी लम्बी नज्मोंमें है जिसमें कवि पैगम्बर खिज्र से जीवन और संसारकी स्थितिके सम्बन्धमें प्रश्न करता है। खिज्र हजरत मुहम्मदसे बहुत पहले हो गए थे और उनके बारेमें विश्वास किया जाता है कि उनकी रहती दुनिया तक मृत्यु नहीं और वह अब भी भटके हुए लोगोंको मार्ग दिखाते हैं—

नीचे इकबालकी इस कवितासे केवल वे भाव लिये जाते हैं जिनमें कविके प्रश्न पर खिज्र जीवन आधार और राजसत्ता तथा अन्तर्राष्ट्रवादपर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इन अंशोंको पढ़ते समय याद रखना चाहिए कि यह कविता उस समय लिखी गई थी जब रूसमें समाजवाद पूरी तरह दृढ़ भी न हुआ था और उसकी चर्चा जनसाधारणकी जबानपर आजकी तरह न थी।]

जीवन लाभ और हानिसे कहीं ऊँचा है। कभी प्राण है और कभी प्राणोंका बलिदान। तू इसको आज और कलके प्याले द्वारा न नाप क्योंकि जिन्दगी कभी समाप्त होनेवाली नहीं और हर क्षण आगे बढ़ती रहती है। यदि अपनेको जीवित कहता है तो अपनी दुनिया आप ही पैदा कर क्योंकि जिन्दगी मानव पिता (आदम) का भेद है और यही वह चमत्कारिक मन्त्र है जिससे ईश्वरने संसारकी रचना की। जीवनकी वास्तविकता तो फरहादके दिलसे पूछनी चाहिए जिसने अपनी प्रिय शीरींको प्राप्त करनेके लिए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ोंको काटकर दूधकी नहर बनाई थी। जीवन भी इसी प्रकारके कठोर परिश्रमका नाम है जिसके प्रतीक नहर विशाल पहाड़ और फरहादका कुल्हाड़ा है। गुलामीमें जीवनकी लालसा घटकर एक छोटी-सी लहरकी भाँति रह जाती है और स्वतन्त्रतामें यही नहर एक महासागर बन जाती है। यह जीवन लालसा अभिलाषा केवल अपनी विजय पानीकी सविनय व्यक्त होती है यद्यपि यह जीवन धारा एक मानवके रूपमें एक मिट्टीके पुतलेमें छिपी रहती है। तू जीवनके महासागरमें एक बुलबुलेकी भाँति उभरा है। हर क्षण आग देनेवाले स्थान तेरी इस जिन्दगीकी परीक्षाएँ हैं। जबतक तेरे अन्दर जीवन-अभिलाषा कच्ची है उस समय तक तो केवल मिट्टीकी मूर्ति समान है परन्तु यदि यह अभिलाषा पक्की हो जाए तो एक ऐसी तलवारकी भाँति हो जाएगी जिसका वार अचूक होता है।

हो सदाक़तके लिए जिस दिलमें मरनेकी तड़प।
पहले अपने पैकरे ख़ाकीमें जाँ पैदा करे॥
फूँक डाले यह ज़मीनो आस्माने मुस्तआर॥
और ख़ाकस्तरसे आप अपना जहाँ पैदा करे॥
ज़िन्दगी की क़ुव्वते पिन्हाँ को करदे आशकार।
ता यह चिंगारी फ़रोग़े जाविदाँ पैदा करे॥
ख़ाके मशरिक़ पर चमक जाए मिसाले आफ़ताब।
ता बदख़्शाँ फिर वही लाले, गराँ पैदा करे॥
सूए गर्दूं नालए शबगीरका भेजे सफ़ीर।
रातके तारोंमें अपने राज़दाँ पैदा करे॥
यह घड़ी महशरकी है तू अरसए महशरमें है।
पेश कर ग़ाफ़िल अगर कोई अमल दफ़्तरमें है॥

जो सच्चाईके लिए जान देनेकी लालसा रखता हो उसे चाहिए कि अपने मिट्टीके बने शरीरमें पहले प्राण (शक्ति) पैदा करे। इस मांगकी दुनिया को (जो उसे पूर्वजोंसे मिली है) फूंक डाले और इस दुनियाकी राखसे अपने लिए नए संसारकी रचना करे। जीवनकी छिपी हुई शक्तिको व्यक्त कर दे ताकि इस चिनगारीसे ऐसी रोशनी पैदा हो जो अमर हो। पूर्वकी दुनियापर सूरजकी भाँति चमक जाए ताकि ईरानके प्रसिद्ध बदख्शाँकी धरती फिरसे पुराने युगकी तरह लाल और कीमती पत्थर पैदा करने लगे। आसमान तक अपनी आवाज और फरयादके दूतको भेज और रातके तारोंको भी अपना मित्र बना ले। यह समय प्रणयके बाद अपने जीवनका हिसाब देनेका है यदि तेरे पास कार्यका श्रय हो तो प्रस्तुत कर।

---

४. सल्तनत

आ बताऊँ तुझको रम्ज़े आयाए इन्नल मुलूक।
सल्तनत अक़वामे ग़ालिबकी है एक जादूगरी॥
ख़्वाबसे बेदार होता है ज़रा मेहकूम अगर।
फिर सुला देती है उसको हुक्मरांकी साहिरी॥
जादुए महमूदकी तासीर से चश्मे अयाज़।
देखती है हल्क़ए गरदनमें साज़े दिलबरी॥
ख़ूने इसराईल आजाता है आख़िर जोश में।
तोड़ देता है कोई मूसा तिलिस्मे सामरी॥
सरवरी ज़ेबा फ़क़त उस ज़ाते बे हमता को है।
हुक्मरां है एक वही बाक़ी बुताने आज़री॥१॥

है वही साज़े कुहन मग़रिबका जमहूरी निज़ाम।
जिसके पर्दोंमें नहीं ग़ैर अज़ नवाए क़ैसरी।
देव इस्तब्दाद जमहूरी क़बामें पाए कोब।
तू समझता है यह आज़ादी की है नीलम परी॥
मजलिसे आईनो इस्लाहो रियायातो हक़ूक़।
तिब्बे मग़रिबमें मज़े मीठे असर ख़्वाब आवरी॥
गरमिए गुफ़्तारे आज़ाए मजालिस अल अमां।
यह भी एक सरमाया दारों की है, जंगे ज़रगरी।
इस सराबे रंगो बू को गुलसितां समझा है तू।
आह ए नादां क़फ़सको आशियां समझा है तू॥२॥

8. राज्य



फिराक कहते हैं कि आ तुमको वह भेद बताऊँ जो खुदाने कुरान में 'इन्नल मुलूक' वाली आयतमें व्यक्त किया है। इस आयतका अर्थ यह है कि जब कोई नया राज्य स्थापित होता है तो नए राजा पहलेके सम्मानित लोगोंको जलील करते हैं और नयोंको सम्मान देकर मिला लेते हैं और जमीनपर उथल-पुथल पैदा करते हैं राजसत्ता केवल शक्तिशाली राष्ट्रोंकी जादूगरी ही है। अगर कभी प्रजा राजाकी इस जादूगरीको समझने लगती है और नींदसे जाग जाती है तो सत्ताधारी फिर उसे किसी न किसी प्रकारसे सुला देते हैं। सत्ताधारी (मेहमूद बादशाह) के जादू से गुलाम (महमूदके प्रिय गुलाम अयाजकी भाँति) गरदनकी जंजीर और तौक़ को भी आभूषण समझने लगते हैं। परन्तु एक न एक दिन यह भ्रम उसी प्रकार टूट जाता है जैसे मिस्रमें फिरऔनके विरुद्ध (जो कि अपनको खुदा कहलवाता था। हजरत मूसा की क़ौम का खून जोशमें आया और फिर औन की तरह सत्ताधारी तख्तोंसे उतारकर फेंक दिए जाते हैं और यह सिद्ध हो जाता है कि सत्ता केवल एक खुदा की है और शेष सब उन मूर्तियोंकी भाँति हैं जिन्हें हजरत इब्राहीमके बाप अजार बनाया करते थे ॥१॥

पश्चिममें जो राजसत्ता गणतन्त्रके नामसे प्रसिद्ध है वह भी वास्तव में ऐसा बाजा है जिसमें बादशाही के ही स्वर भरे हैं। जुल्म और बर्बरता ही का राक्षस है जो आजादीकी नीलमपरीका सुन्दर रूप धारण करके उछल-कूद दिखा रहा है। लोकसभा जनहित सुधारकी बातें और संविधानके अधिकारोंकी बातें बस ऐसी मीठी औषधियोंकी भाँति हैं जिनका उद्देश्य केवल नींद लाना और सुलाना ही होता है। लोक सभामें जो जोर-शोरके भाषण हाथ हिला-हिलाकर होते हैं, वह केवल पूँजीपतियोंके एक तमाशेसे अधिक कुछ नहीं है। ऐ मूर्ख तू इन चित्रों और सुगन्धोंके भ्रमको पुष्पवाटिका समझ बैठा है। तेरी समझपर दुख होता है कि हाय तूने पिंजरे ही को भ्रममें अपना घोंसला मान लिया है॥२॥

---

५. साक़ी नामा

हुआ खेमाज़न कारवाने बहार। इरम बन गया दामने कोहसार॥
गुलो नरगिसो सोसनो नस्तरन। शहीदे अज़ल लाला ख़ूनीं कफ़न॥
जहाँ छुप गया पर्दए रंगमें। लहूकी है गरदिश रगे संगमें॥
फ़िज़ा नीली-नीली हवामें सुरूर। ठहरते नहीं आशियाँमें तयूर॥
वह जूए कुहिस्ताँ उचकती हुई। अटकती लचकती सरकती हुई।
उछलती फिसलती सम्भलती हुई। बड़े पेच खाकर निकलती हुई॥
रुके जब तो सिल चीर देती है यह। पहाड़ोंके दिल चीर देती है यह॥
ज़रा देख एऐ साक़िए लाला फ़ाम। सुनाती है यह ज़िन्दगी का पयाम॥
पिला दे मुझे वह मए परदा सोज़। कि आती नहीं फ़स्ले गुल रोज़-रोज़॥
वह मय जिससे रौशन ज़मीरे हयात। वह मय जिससे है मस्तीए काएनात॥
वह मय जिससे है सोज़ो साज़े अज़ल। वह मय जिससे खुलता है राज़े अज़ल

उठा साक़िया परदा इस राज़से।
लड़ा दे ममोले को शहबाज़ से॥१॥

५. साक़ी नामा

[साक़ी नामा यों तो फ़ारसी कविताकी एक प्रसिद्ध तरह है जिसमें साक़ीसे शराब पिलाने और धूम मचानेकी फ़र्माइश ही की जाती है परन्तु कुछ उर्दू और फ़ारसी शायरोंने शराब और मधुशालाकी शब्दप्रणालीमें गहरी बातें भी कही हैं। इस नज़्ममें इक़बालका बुलाका वर्णनात्मक रूप बड़े सुन्दर और सीधे-सादे ढंगसे अभिव्यक्त हुआ है।]

बहार आ गई है और उसके क़ाफ़िलोंने डेरे डाल दिए हैं। पहाड़ोंकी घाटियाँ स्वर्ग बन गई हैं। तरह-तरहके फूल खिलने लगे जिसमें नरगिस सौसन नस्तरन भी हैं और लालेका लाल रंगका फूल भी है जो मानो हमेशासे किसी शहीदकी भाँति ख़ूनसे भरा लाल कफ़न पहने हुए है। संसार रंगोंके परदेमें छिप गया है और पत्थरों तकमें ख़ूनका बहाव और मस्तीका आवरण है। वातावरण नीला-नीला है हवामें मस्ती छाई हुई है और पखेरू तकका मन घोंसलेमें पड़े रहनेको नहीं करता पहाड़ी नदी उछलती अटकती सरकती हुई बह रही है। बड़े मोड़ पेच खाकर उछलती फिसलती सम्भलती हुई बह रही है। यदि पहाड़ नदीकी लहर रुक जाए तो पत्थरकी शिलाको फाड़कर रास्ता निकाल लेती है पहाड़ोंके और दिलों तक को चीर डालती है। ए (शराबके नशेसे लाल चेहरेवाले साक़ी यह पहाड़ी नदी भी जीवनका भेद सुना रही है। वह भेदोंको जला देनेवाली शराब मुझे पिला दे क्योंकि दिन प्रति दिन तो यह बहारका मौसम नहीं आता। यह शराब ऐसी है जिससे जीवनकी अन्तरात्मा ज्योतिमान है और समस्त विश्व मस्त है—जिससे संसार-सृष्टि जन्मके पहले दिनसे बदला और आनन्दमें फिरा है और जिस शराबसे संसारके जन्मके भेद खुल जाएँ। ऐ साक़ी इस भेदको खोलकर निर्बल ममोलेको एक पक्षीको बाजके रूपमें भरपूर बल प्रदान कर दे। ॥१॥

दमादम रवां है यमे ज़िन्दगी। हर एक शयसे पैदा रमे ज़िंदगी।।
इसीसे हुए हैं बदनकी नमूद। कि शोलेमें पोशीदा है मौजे दूद।।
गरां गरचे है सुहबते आबो गिल। खुश आई उसे मेहनते आबो गिल।।
यह साबित भी है और सय्यार भी। अनासिर के फन्दोंसे बेज़ार भी।।
यह वहदत है कसरतमें हर दम असीर। मगर हर कहीं बेचगूं बे नज़ीर।।
यह आलम यह बुतखानए शश जहात। इसीने तराशा है यह सोमनाथ।।
पसन्द उसको तकरार की खू नहीं। कि तू मैं नहीं और मैं तू नहीं।।
मनोतीसे है अंजुमन आफ़रीं। मगर ऐने मेहफ़िलमें खिल्वत नशीं।।
चमक उसकी बिजलीमें तारे में है। यह चांदीमें सोनेमें पारे में है।।
इसीके बियाबां इसीके बबूल। इसीके हैं कांटे इसीके हैं फूल।।
कहीं इसकी ताक़तसे कुहसार चूर। कहीं इसके फन्देमें जिबरीलो हूर।।
कहीं जुर्रा शाहीन सीमाब रंग। लहूसे चकोरोंके आलूदा चंग।।

कबूतर कहीं आश्याने से दूर।
फड़कता हुआ जालमें नासबूर।।२।।

जीवन-धारा हर क्षण चल रही है और हर वस्तुसे जीवनकी गति व्यक्त होती है, जैसे हर ढोलमें धुएँकी लहर भी छिपी रहती है इसी प्रकारसे भौतिक वस्तुओंमें बल्कि हर शरीरमें यही मौजूद है। इस जीवन धारा (खुदी) पर कीचड़ और पानीका यह प्रतिबन्ध भारी है परन्तु उसे यही प्रतिबन्ध अच्छा लगा है। यह धारा ठहरी हुई भी लगती है और हरदम गतिमान भी दिखाई पड़ती है और भौतिक वस्तुओंमें घिरे होनेपर भी भौतिकवादके पिंजरेसे असन्तुष्ट भी है। यह एक होकर भी अपनेको हजारों और अनेक रूपोंमें जाहिर करती है परन्तु हर स्थान पर अद्वितीय और सर्वश्रेष्ठ रहती है। यह ससार जो एक ही दिशाओंमें मूर्ति स्थान की शान्ति है उसीने इन भौतिक मूर्तियोंकी रचना की है। संसार शक्तिको अपनेको बार-बार दुहराना पसन्द नहीं और यह (आवागमनके स्थान) हर बार नई वस्तुएँ और आत्माएँ सामने लाती है और हर व्यक्ति दूसरसे विभिन्न होता है। व्यक्ति और मैं और तू की भावनासे ही संसारकी यह सभा सजी है परन्तु सभाके बीचमें भी यह शक्ति सबसे अलग रहती है। इसकी चमक बिजलीके तारेमें है यह चाँदीमें सोनेमें और पारेमें है। इसीने जगल बनाए हैं इसीने बबूल इसीके काँटे और फूल हैं। कहीं इसकी शक्तिसे पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और कहीं सर्वश्रेष्ठ फ़रिश्ता जिब्रील और हूरें भी इसकी शक्ति-जालमें फँसी हैं। कहीं यह चुर्रा (बाजके नर बच्चे) को शाहीन (श्येन-बाज) बनाता है और उसके पंजोंको शिकारके खूनसे रँगता है। कहीं कबूतर अपने घोंसलेसे दूर जालमें व्याकुल और तड़पता हुआ दिखाई देता है।।२।।

फ़रेबे नज़र है सुकूनो सिबात। तड़पता है हर ज़र्राए काएनात।
ठहरता नहीं कारवाने वुजूद। कि हर लहज़ा है ताज़ा शाने वुजूद
समझता है तू राज़ है ज़िन्दगी। फ़क़त ज़ौक़-परवाज़ है ज़िन्दगी॥
बहुत उसने देखे हैं पस्तो बलन्द। सफ़र उसको मंज़िलसे बढ़कर पसन्द।
सफ़र ज़िन्दगीके लिए बर्गोसाज़। सफ़र है हक़ीक़त हज़र है मजाज़॥
उलझकर सुलझनेमें लज़्ज़त इसे। तड़पने फड़कनेमें राहत इसे॥
हुआ जब इसे सामना मौतका। कठिन था बड़ा थामना मौतका॥
उतर कर जहाने मकाफ़ातमें। रही ज़िन्दगी मौतकी घातमें॥
मज़ाक़े दुई से बनी ज़ौज ज़ौज। उठी दश्तो कोहसारसे फ़ौज फ़ौज॥
गुल इस शाख़से टूटते भी रहे। इसी शाख़से फूटते भी रहे।
समझते हैं नादाँ इसे बे सबात। उभरता है मिट मिटके नक़्शे हयात॥
बड़ी तेज़ जौलाँ बड़ी ज़ूद रस। अज़लसे अबद तक रमे यक नफ़स॥

ज़माना कि ज़ंजीरे अय्याम है।
दमों के उलट फेरका नाम है॥१॥

वास्तवमें शान्ति केवल भ्रम है, तड़पना ही जीवनका भेद है
ोर विश्वका हर ज़र्रा (अणु) तड़पता है। जीवनका काफ़िला ठहरता
हीं है और हर क्षण जीवन अपनी नई शान और दृश्य दिखाता है।
समझता है कि जीवन एक भेद है—नहीं—बल्कि जीवन केवल उड़ानका
त्साह है और कुछ नहीं। उसने बहुत ऊँच-नीच देखी है। उसे ठहरनेसे
धिक यात्रा और गति ही पसन्द है। जिन्दगीकी गति ही सारा साज
मान है। असली सफ़र (गति) ही है शान्ति भ्रम है। उसे उलझकर
ुलझनेमें मज़ा मिलता है और तड़पने-फड़कनेमें आनन्द। जब उसे मृत्युका
ामना हुआ और मृत्युको थामनेका कठिन कार्य आ पड़ा और दोनों इस
नियाके कार्य क्षेत्रमें उतरकर एक दूसरेकी घातमें रहीं तो जिन्दगी दो
ो जाने (समूहका रूप धारण) की शक्तिसे जोड़ा-जोड़ा बनकर मैदान
ौर पहाड़ोंसे समूहके रूपमें फ़ौज बन बनकर उठी। इस शाखासे
ूल तो टूटते रहे, परन्तु उसीके साथ साथ नए फूल जन्म भी लेते रहे।
ूर्ख ही जीवनको मर्त्य और विनाशी समझते हैं, वरन् जिन्दगीका रूप तो
मट मिटकर और भी उभरता है। यह जीवन शक्ति बड़ी तीव्र गतिकी
है। और हर स्थानपर शीघ्र पहुँचती है। संसारके जन्मसे उसके अन्त
होने तकका फ़ासला उसके लिए एक साँसमें पूरा हो जाता है। ज़माना जो
क दिनोंकी ज़ंजीर-सा है दर असल साँसोंके आने-जाने ही का
ाम है ॥१॥

यह मौजे नफ़स क्या है तलवार है । ख़ुदी क्या है तलवार की धार है।
ख़ुदी क्या है राज़े दुरूने हयात । ख़ुदी क्या है बेदारिए कायनात ॥
ख़ुदी जल्वा बदमस्तो ख़िलवत पसन्द । समन्दर है एक बूँद पानीमें बन्द ॥
अँधेरे उजालेमें है ताबनाक । मनोतौ में पैदा मनोतौसे पाक ॥
अज़ल उसके पीछे अबद सामने । न हद उसके पीछे न हद सामने ॥
ज़मानेके दरयामें बहती हुई । सितम उसकी मौजोंके सहती हुई ॥
तजस्सुसकी राहें बदलती हुई । दमादम निगाहें बदलती हुई ॥
सुबक उसके हाथोंमें संगे गराँ । पहाड़ उसकी ज़र्बोंसे रेगे रवाँ ॥
सफ़र उसका अंजामो आग़ाज़ है । यही उसकी तक़्वीमका राज़ है ॥
किरन चाँदमें है शरर संग में । यह बेरंग है डूबकर रंगमें ॥
इसे वास्ता क्या कमो बेश से । नशेबो फ़राज़ो पसो पेश से ॥
अज़लसे है यह कशमकशमें असीर । हुई ख़ाके आदममें सूरत पज़ीर ॥
ख़ुदीका नशेमन तिरे दिलमें है ।
फ़लक जिस तरह आँखके तिलमें है ॥४॥

साँसोंकी यह लहर तलवारकी भाँति है और खुदी इसकी धार। खुदी जीवनके अन्दरका भेद है, यही विश्वके जागरणकी प्रतीक है। खुदी ज़ाहिर रूपमें व्यक्त होकर मस्त है परन्तु उसकी मिसाल उस समुद्रकी भाँति है, जिसकी सारी शक्ति एक बूँद पानीमें समा गई हो। अँधेरे उजालेमें ज्योतिमान है। व्यक्तियों ही द्वारा व्यक्त होती है फिर भी व्यक्तियोंके बाहरी रूपसे मुक्त है। उसकी कोई सीमा, कोई समय नहीं है। संसारका जन्म-दिन उसके पीछे है और अन्तिम दिन उसके आगे। ज़मानेकी नदीमें बहती और उसकी लहरोंके थपेड़े खाती नए-नए रूप धरती और पैंतरे बदलती और रामके नए रूप धारण करती चली आती है। उसके सामने भारी पत्थर हलके हैं और उसकी चोटके आगे पहाड़ रुईके ज़र्रोंकी भाँति हैं। गति और यात्रा ही उसका आरम्भ और अन्त है और यही उसके अमर होनेका भेद है। यह चन्द्रमामें किरण बनकर और पत्थरमें चिनगारी बनकर रहती है। और व्यक्त रूप धारण करके भी वह इन वस्तुओंका रंग नहीं अपनाती-रंगमें डूबकर भी उससे मुक्त रहती है। इसे भौतिक मामलोंसे कोई मतलब नहीं। उसे न कमका भय है न अधिकका लालच। वह ऊँचाई-नीचाई मोड़-मेंड़से नहीं घबराती। यह जन्म ही से व्याकुलतामें घिरी है और मानव रूपमें व्यक्त हो गई है। खुदीका स्थान हरे मनमें है परन्तु वह उसमें सीमित नहीं जैसे आसमानका प्रतिबिम्ब आँखोंके लिए पड़ता है परन्तु आकाश उसमें सीमित नहीं होता ॥४॥

ख़ुदीके निगहबानको है ज़हरे नाब । वह-नाँ जिससे जाती रहे उसकी आब॥
वही नाँ है उसके लिए अरजमन्द । रहे जिससे दुनियामें गर्दन बुलन्द ॥
फ़रोफ़ाले मेहमूदसे दर गुज़र । ख़ुदीको निगह रख अयाज़ी न कर ॥
वही सजदा है लायके एहतराम । कि हो जिससे हर सजदा तुझपर हराम॥
यह आलम यह हंगामाए रंगो सौत । यह आलम कि है ज़ेरे फ़र्माने मौत ॥
यह आलम यह बुतख़ानाए चश्मोगोश । जहाँ ज़िन्दगी है फ़क़त ख़ुर्दोनोश॥
ख़ुदीकी यह है मंज़िले अव्वली । मुसाफ़िर यह तेरा नशेमन नहीं ॥
तिरी आग इस ख़ाकदांसे नहीं । जहाँ तुझसे है तू जहाँ से नहीं ॥
बढ़े जा यह कोहे गराँ तोड़कर । तिलिस्मे ज़मानो मकाँ तोड़कर ॥
ख़ुदी शेरे मौला जहाँ उसका सैद । ज़मीं उसकी सैद-आस्माँ उसका सैद ॥
जहाँ और भी हैं अभी बे नुमूद । कि ख़ाली नहीं है ज़मीरे वुजूद ॥
हर एक मुन्तज़र तेरी यलग़ारका । तिरी शोख़िये फ़िक्रो किरदार का ॥
यह है मक़सदे गर्दिशे रोज़गार । कि तेरी ख़ुदी तुझ पे हो आशकार ॥
तु है फ़ातहे आलमे ख़ूबो ज़िश्त । तुझे क्या बताऊँ तिरी सरनविश्त ॥
हक़ीक़त पे है जामाए हर्फ़ तंग । हक़ीक़त है आईना गुफ़्तार ज़ंग ॥
फ़रोज़ाँ है सीनेमें शमए नफ़स । मगर ताबे गुफ़्तार कहती है बस ॥

"अगर यक सरे मूए बर तर परम
फ़रोगे तजल्ला बिसोज़द परम"॥५॥

खुदीके रक्षकके लिए वह मद्य विष है जिससे सम्मान जाता हो। उसके लिए वही रोटी रोजी अच्छी है जिससे दुनियामें सर ऊँचा रहे, बादशाहोंकी भी शानसे प्रभावित न हो। आत्म-सम्मानको देख और गुलामी न कर। केवल वही सजदा मानवके योग्य है जिससे हर अन्य सजदा उसपर हराम हो जाता हो। यह संसार जो रंग और सुरकी दुनिया है और जिसपर मृत्युका राज है। यह संसार जो आँख कानका बनाया हुआ एक मूर्ति-स्थल समान है और जहाँ जीवन केवल खाने और पीनेका नाम है यह खुदीकी पहली ही मंजिल है और ऐ यात्री! यह तेरा घर नहीं है। तेरी आत्माकी चिनगारी इस संसारकी मिट्टीकी नहीं है। तू इस संसारके लिए नहीं बल्कि संसार तेरे लिए बना है। बढ़े जा यह भारी पहाड़ काटकर यह जमानेका जादू यह समयका मायाजाल तोड़ दे। खुदी खुदाके शेरकी भाँति है और संसार उसका शिकार है। धरती-आकाश उसके शिकार हैं। अभी और भी दुनियाएँ ऐसी हैं जो प्रगट नहीं हुई हैं। हर एक तेरे आक्रमणका प्रतीक्षक है तेरी कल्पना और कार्यकुशलताका प्रतीक्षक है। संसारके चक्करका उद्देश्य ही यह है कि तेरी खुदीकी शक्ति तेरे ऊपर खुले। तू तो इस अच्छाई-बुराई की दुनियाका विजयी है। भला तुझे तेरी किस्मतका हाल क्या बताऊँ। वास्तविकता शब्दोंके कपड़ोंमें पूरी तरह नहीं समाती। वास्तविकता दर्पण है और शब्द उसके लिए धूल या धब्बे की भाँति हैं। मेरे सीनेमें साँसकी शमा जल रही है परन्तु शब्द शक्ति और भाषणकी शक्ति कहती है कि समाप्त करो कि "अब अगर इस स्थानसे एक पग भी आगे मारोगे तो सच्चाई और ईश्वरत्व की ज्योतिसे पर जल जाएँगे"॥५॥*

* यह शेर इकबालने एक फारसी शायरसे लिया है यह मेअराजका प्रसंग है। मेअराज हजरत मुहम्मदके जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना है। यह घटना इस प्रकार है कि एक रातको जिब्रील फ़रिश्ता जो भगवानके सबसे अधिक निकट रहनेवाला है आकर हजरत मुहम्मदसे कहा कि भगवान तुमको मिलनेके लिए बुलाते हैं। हजरत मुहम्मद जिब्रीलके साथ हो लिए जिब्रीलने हजरत मुहम्मदको सब आसमानोंकी सैर कराई। जब वह खुदाके स्थानसे थोड़ी दूर रह गया तो कहा कि अब मैं और आगे नहीं जा सकता। अगर जाऊँगा तो मेरे पंख जल जाएँगे।

६ मस्जिदे क़ुर्तबा

सिलसिलाए रोज़ो शब नक़्श गरे हादिसात।
सिलसिलाए रोज़ो शब अस्ले हयातो ममात॥
सिलसिलाए रोज़ो शब तारे हरीरे दो रंग।
जिससे बनाती है ज़ात अपनी क़बाए सिफ़ात॥
सिलसिलाए रोज़ो शब साज़े अज़ल की फ़ुग़ाँ।
जिससे दिखाती है ज़ात ज़ेरो बमे मुमकिनात॥
तुझको परखता है यह, मुझको परखता है यह।
सिलसिलाए रोज़ो शब सैरफ़ीए काएनात॥
तू हो अगर कम अयार, मैं हूँ अगर कम अयार।
मौत है तेरी बरात, मौत है मेरी बरात॥
तेरे शबो रोज़की और हक़ीक़त है क्या।
एक ज़मानेकी रौ जिसमें न दिन है न रात॥
आनीओ फ़ानी तमाम मुअजज़ाहाए हुनर।
कारे जहाँ बे सबात, कारे जहाँ बे सबात॥
अव्वलो आख़िर फ़ना बातिनो ज़ाहिर फ़ना।
नक़्शे कुहन हो, कि, नौ मंज़िले आख़िर फ़ना॥१॥

६ मस्जिदे कर्तबा

[यह नज्म स्पेनमें लिखी गई और उस मस्जिदको देखकर लिखी गई जिसे कभी मुसलमानोंने बनाया था और जो अब मुसलमानोंके स्पेनसे चले जानेके बाद उजाड़ पड़ी है।]

यह रात दिनकी क्रममाला ही घटनाओंकी रचना करती है। यही जीवन और मृत्युका मूल है। यह दो रंगोंवाले रेशमके तारोंकी भाँति है जिससे अस्तित्व अपनी बाहरी परिभाषाओंका ताना बाना बुनता है। यह दुनियाकी रचनाके पहले झिनका संगीत है जिससे जात या अस्तित्व (खुदा) सम्भावनाओंकी ऊँच नीच दिखाता है। यह तुझको और मुझको सभीको परखता है कि वह किसको परखनेवाला है। यदि तू या मैं कोई भी खोटा निकले तो फिर उसके भाग्यमें मृत्यु ही है। तब रात दिनकी वास्तविकता इसके अतिरिक्त और क्या है कि एक समयकी लहर है जिसमें न दिन है न रात। कलाके सारे चमत्कार सबके सब ही मिटने वाले हैं क्योंकि दुनियाके सारे कार्य ही समाप्त होनेवाले हैं। सभीका अन्त मृत्यु ही है। मौत ही आरम्भ है वही अन्त है वही व्यक्त है और वही भीतरी भेद है। चाहे चित्र पुराना हो या नया उसका अन्त मृत्यु ही है॥१॥

है मगर उस नक्शमें रंगे सबाते दवाम।
जिसको किया हो किसी मर्दे ख़ुदाने तमाम।।
मर्दे ख़ुदाका अमल इश्क़से साहब फ़रोग़।
इश्क़ है असले हयात मौत है उसपर हराम।।
तुंदो सुबक सर है गरचे जमानेकी रौ।
इश्क़ खुद एक सैल है सैल को लेता है थाम।।
इश्क़ की तक़वीममें असरे रवांके सिवा।
और जमाने भी हैं जिनका नहीं कोई नाम।।२।।

इश्क़ दमे जिब्राईल इश्क़ दिले मुस्तफ़ा।
इश्क़ ख़ुदाका रसूल इश्क़ ख़ुदाका कलाम।।
इश्क़की मस्तीसे है पैकरे गिल ताब नाक।
इश्क़ है सेहबाए खाम इश्क़ है कासुलकिराम।।
इश्क़ फ़क़ीहे हरम, इश्क़ अमीरे जुनूद।
इश्क़ है इब्नुस्सबील उसके हज़ारों मक़ाम।।
इश्क़के मिज़राबसे नग़मए तारे हयात।
इश्क़से नूर हयात इश्क़से नारे हयात।।३।।

ऐ हरमे क़र्तबा! इश्क़ से तेरा वुजूद।
इश्क़ सरापा दवाम जिसमें नहीं रफ़्तो बूद।
रंग हो या ख़िश्तो संग चंग हो या हर्फ़ो सौत।
मोजज़ाए फ़नकी है ख़ूने जिगरसे नमूद।।
क़तराए ख़ूने जिगर सिलको बनाता है दिल।
ख़ूने जिगरसे सदा सोज़ो सुरूरो सुरूद।।
तेरी फ़ज़ा दिल फ़रोज़ मेरी नवा सीना सोज़।
तुझसे दिलोंका हुज़ूर मुझसे दिलोंका कुशूद।।४।।

हाँ ऐसे चित्रोंमें जो अमर होनेकी शक्ति होती है जो किसी ईश्वर भक्तके हाथों पूरे हुए हों। ऐसे ईश्वर भक्तका काम वास्तवमें प्रेम और उत्साहसे प्रज्ज्वलित होता है क्योंकि यही जीवन आधार है और मृत्युसे मुक्त है। यद्यपि जमानेकी लहर बड़ी ही तेज और आगे और फैल जानेवाली है परन्तु इश्क (प्रेम और उत्साह) स्वयं एक लहर है और उस लहरको रोक सकती है। प्रेमकी डायरीमें तो आधुनिक कालके अतिरिक्त एसे और भी कई युग हैं जिनका कोई नाम नहीं है।।२।।

प्रेम ही जिब्रील फरिश्ताकी साँस है जिससे वह खुदाका सन्देश हजरत मुहम्मद तक पहुँचाता था और यही हजरत मुहम्मद खुदाके रसूल का दिल है। इसीके नफस मिट्टीसे बना हुआ इंसान प्रज्वलित हुआ। यही कच्चा नशा लाने वाली शराब है यही वह प्याला है जिसमें प्रसिद्ध महाप्राणियों ने शराब पी है। यही काबेमें बैठा हुआ इस्लामका विधायक है यही फौजोंका नेतृत्व करनेवाला है। यही राही है और इसकी हजारों मंजिलें हैं। इसीके मिजराबसे जीवन-वीणाके तार बज उठते हैं यही जीवनकी ज्योति है और यही जीवनकी आग है।।३।।

ओ स्पेनमें बनी हुई मस्जिद तू भी प्रेमके ही हाथों बनी थी। क्या कि तमामका तमाम अमर है और जो आने जाने वाला नहीं है। कलाकी कोई भी प्रणाली हो—चाहे रंगकी चित्रकारी हो या ईंट-पत्थर द्वारा भवन रचना हो या संगीत हो या कविता जो सुर और शब्द की कन्याएँ हैं —इन सबका आधार केवल परिश्रम और खूने जिगर ही है। खूने जिगरकी एक बूँद पत्थरमें मानवके दिलकी धड़कन पैदा कर देती है। इसीसे हर प्रकारका संगीत जन्म लेता है। ऐ मस्जिद तेरा वातावरण मनको ज्योतिमान करनेवाला है और मेरा मन सीनेमें आग पैदा करता है। तुझसे मन आकर्षित होता है और मुझसे मन खुल जाते हैं।।४।।

अर्शे मुअल्लासे कम सीनए आदम नहीं।
गरचे कफ़े ख़ाकको हद है सपहरे कबूद ।।
पैकरें नूरी को है सजदा मयस्सर तो क्या।
उसको मयस्सर नहीं सोज़ो गुदाज़े सुजूद ।।
काफ़िरे हिन्दी हूँ मैं देख मेरा ज़ौक़ो शौक़।
दिलमें सलातो दुरूद लब पे सलातो दुरूद ।।
शौक़ मेरी लय में है शौक़ मेरी नय में है।
नग़मए "अल्लाह हू" मेरे रगो पयमें है -- ।।५।।

ईश्वरके स्थान अर्शसे मानवके हृदयका महत्व कम नहीं है यद्यपि मिट्टीसे बने मानवकी सीमा तो आकाश ही प्रतीत होती है। फ़रिश्तोंको सजदा और पूजाका अवसर तो प्राप्त है परन्तु उन्हें पूजाका आनन्द उसकी वेदना प्राप्त नहीं क्योंकि वे अभिलाषाहीन हैं। मैं हिन्दुस्तानका रहनेवाला काफ़िर हूँ परन्तु मेरा प्रेम और उत्साह तो देखो कि मेरे मनमें भी खुदा और हज़रत मुहम्मदकी भक्ति है और ओठोंपर भी। मेरी रूहमें मेरी आवाज़में यही प्रेम और उत्साह भर गया है और यही "अल्लाह वही है" का संगीत मेरी रग रग में बस गया है ॥५॥

लेनिन (ख़ुदाके हुज़ूरमें)

ऐ अनफ़ुसो आफ़ाक़में पैदा तिरे आयात।
हक़ यह है कि है ज़िन्दा ओ पाइन्दा तिरी ज़ात।।
मैं कैसे समझता कि तू है या कि नहीं है।
हरदम मुतग़य्यर थे ख़िरदके नज़रियात।।
महरम नहीं फ़ितरतके सरोदे अज़ली से।
बीनाए कवाकिब हो कि दानाए नबातात।।
आज आँखने देखा तो वह आलम हुआ साबित।
मैं जिसको समझता था कलीसाके ख़ुराफ़ात।।
हम बंदे शबो रोज़में जकड़े हुए बंदे।
तू ख़ालिक़े आसारो निगारंदए आनात।।१।।

एक बात अगर मुझको इजाज़त हो तो पूछूं।
हल कर न सके जिसको हकीमोंके मक़ालात।
जब तक मैं जिया ख़ेमए अफ़लाकके नीचे।
काँटेकी तरह दिलमें खटकती रही यह बात।।
गुफ़्तारके उसलूब पे क़ाबू नहीं रहता।
जब रूहके अन्दर मुतलातिम हो ख़यालात।।२।।

वह कौन-सा आदम है कि तू जिसका है माबूद?
वह आदमे ख़ाकी कि जो है ज़ेरे समावात?।।
मशरिक़ के ख़ुदावन्द सफ़ेदाने फ़िरंगी।
मग़रिबके ख़ुदावन्द दरख़्शन्दा फ़िलिज़्ज़ात।।
यौरपमें बहुत रौशनीए इल्मो हुनर है।
हक़ यह है कि बे चश्मए हैवाँ है यह ज़ुल्मात।।
रानाइ तामीरमें, रौनक़में, सफ़ा में।
गिरजोंसे कहीं बढ़के हैं बैंकोंके इमारत।।३।।

लेनिन (खुदाके हुजूरमें)

ऐ खुदा जिसकी निशानियाँ तारों और संसारमें व्यक्त हैं। सच तो यह है कि तेरा ही व्यक्तित्व है जो अमर है और जीवित है। मैं कैसे समझता कि तू है या नहीं है क्योंकि हर क्षण दुनियाके बुद्धिजीवी अपने विचार बदलते रहते थे। चाहे तारोंका देखनेवाले हों या वनस्पति शास्त्र के पण्डित हों कोई भी प्रकृतिके अनन्त भेदोंसे परिचित नहीं। अब मृत्युके बाद स्वयं अपनी आँखसे देखा तो यह सिद्ध हुआ कि जिसे अबतक मैं *पादरियोंकी बकवास समझता था। अब ईश्वरका अस्तित्व सिद्ध हुआ* हम दिन और रातकी घड़ियोंमें जकड़े हुए मानव हैं और तू जमाने युग और धर्मोंको जन्म देनेवाला है ॥१॥

यदि तेरी आज्ञा पाऊँ तो एक बात पूछूँ जिसे बुद्धिजीवियोंकी किताबें भी सुलझा नहीं पाई हैं। जबतक आकाशके नीचे मैं जीता रहा यही बात मनमें खटकती रही। अब आत्मामें बहुतसे विचार तूफान मचा रहे हों तो बात कहनेके तरीकेपर भी पूरी तरह नियन्त्रण नहीं रहता ॥२॥

प्रश्न यह है कि वह कौन-सा मानव है कि तू जिसका खुदा है? क्या यह वह मानव है जो आकाशके नीचे बसा हुआ है। मगर पूरबके खुदा या मालिक तो योरपमें बसनेवाले गोरे बन बैठे हैं और पश्चिममें चमकते हुए जर्रों (परमाणु) का राज है। यों तो योरपमें कला और विज्ञानका बड़ा प्रकाश है परन्तु सच यह है कि यह एक अन्धकार भरी धरतीकी भाँति है जिसमें अमृत नहीं है। (कहा जाता है कि अमृत एक ऐसे प्रदेशमें है जो अन्धेरेमें घिरा रहता है) रचना की सुन्दरता शोभा और सफाईमें गिरजाघर कहीं अधिक बैंक दफ्तर है ॥३

ज़ाहिरमें तिजारत है हक़ीक़त में जुआ है।
सूद एकका लाखोंके लिए मर्गे मफ़ाजात।।
यह इल्म यह हिकमत यह तदब्बुर यह हुकूमत।
पीते हैं लहू देते हैं तालीमे मसावात।।
बेकारीओ उरयानीओ मयख़्वारी ओ इफ़लास।
क्या कम हैं फ़िरंगी मदनियत के फ़ुतूहात।।
वह क़ौम कि फ़ैज़ाने समावी से हो महरूम।
हद उसके कमालातकी है बर्क़ो बुख़ारात।।
है दिलके लिए मौत मशीनोंकी हुकूमत।
एहसासे मुरव्वतको कुचल देते हैं आलात।।४।।

आसार तो कुछ कुछ नज़र आते हैं कि आख़िर।
तदबीरको तक़दीरके शातिरने किया मात।।
मयख़ानेकी बुनियाद में आया है तज़ल्ज़ुल।
बैठे हैं इसी फ़िक्रमें पीराने ख़राबात।।
चेहरों पे जो सुर्ख़ी नज़र आती है सरे शाम।
या ग़ाज़ा है या साग़रो मीनाकी करामात।।५।।

तू क़ादिरो आदिल है मगर तेरे जहाँ में।
हैं तल्ख़ बहुत बंदए मज़दूरके औक़ात।
कब डूबेगा सरमाया परस्तीका सफ़ीना।
दुनिया है तिरी मुन्तज़िरे रोज़े मकाफ़ात।।६।।

यों तो इनका व्यवसाय तिजारत ही प्रतीत होता है परन्तु वास्तवमें उनकी सब व्यवस्था एक प्रकारका जुआ ही है जिसमें एक को जो सूद मिलता है वह लाखोंके लिए मृत्युका सन्देश बन जाता है। यह विज्ञान यह दर्शन शास्त्र यह बुद्धिमानी और यह राजनीति—सब भ्रम ही हैं। खून पीते हैं एकता और समानताकी शिक्षा देते हैं। बेकारी नग्नता शराब और गरीबी ही योरपकी सारी सभ्यताके चमत्कार हैं। वह राष्ट्र या जनता जो ईश्वरकी दीक्षासे वंचित हो वह केवल भाप और बिजली ही के चमत्कार दिखा सकती है। मशीनोंकी प्रधानता और हकूमत दिलके लिये मौत है क्योंकि ऐसे यन्त्र प्रेम और उच्च भावनाओंको कुचल देते हैं ॥४॥

कुछ कुछ इसका पता लगता है कि तदबीरको तक़दीर (भाग्य) ने मात दे दी है और पश्चिमी सभ्यताकी नींव ही डाँवाडोल हो उठी है और योरपके वृद्ध बुद्धिजीवी इसी चिन्तामें डूबे हुए हैं। मुखपर जो शामकी लाली दिखाई देती है। वह या तो शराबके नशेके कारण है या पाउडर और शृंगारके प्रसाधनके कारण है ॥५॥

ऐ खुदा तू न्यायी और सर्वशक्तिमान है। मगर तेरी दुनियामें मजदूरों और निर्धनोंके दिन रात बड़े कठिन हैं। आखिर पूँजीवादकी नाव कब डूबेगी तेरी दुनिया उसके दण्डका दिन देखनेकी प्रतीक्षामें है ॥६॥

---

८ फ़रिश्तोंका गीत

अक़्ल है बे ज़माम अभी इश्क़ है बे मुक़ाम अभी ।
नक़्श गरे अज़ल तिरा नक़्श है नातमाम अभी ।।
ख़ल्क़े ख़ुदा की घातमें रिंदो फ़क़ीहो मीरो पीर ।
तेरे जहाँ में है वही गरदिशे सुब्हो शाम अभी ।।
तेरे अमीर माल मस्त, तेरे फ़क़ीर हाल मस्त ।
बन्दा है कूचागर्द अभी ख़्वाजा बलन्द बाम अभी ।।
दानिशो दीनो इल्मो फ़न बन्दगीए हवस तमाम ।
इश्क़े गिरह कुशाएका फ़ैज़ नहीं है आम अभी ।।
जौहरे ज़िन्दगी है इश्क़ जौहरे इश्क़ है ख़ुदी ।
आह कि है यह तेग़े तेज़ परदगिए नियाम अभी ।।

८ फरिश्तोंका गीत

अभी तक बुद्धि नियन्त्रित नहीं है और अभी प्रेम अपनी मंजिलसे दूर है। खुदा ओ संसारकी रचना करनेवाले! तेरा बनाया चित्र अधूरा है। जनताकी घातमें घातकी, धर्मके विधान बनानेवाले सरदार और साधु (गुरु) सभी लगे हुए हैं और तेरी दुनियामें अभी तक रात और दिनका वही चक्र चल रहा है। तेरे धनवान अपने धनमें खोए हुए हैं और तेरे मुनि और साधु अपने ही में खोए हुए हैं। तेरी प्रजा अभी तक इधर-उधर भटक रही है और तेरे धनवान अभीतक ऊँचे कोठों पर हैं। बुद्धि, ज्ञान कला और धर्म सभी लालसाके पराधीन हैं अभीतक उस इश्क (अभिलाषा और उत्साह) की प्रथा प्रचलित नहीं हुई है जो सारी कठिनाइयोंको सुलझा देता है। जीवनका मूल तत्त्व इश्क ही है और इश्क (प्रेम) का मूल तत्त्व खुदी है। खेद है कि यह तेज चलनेवाली खुदीकी तलवार अभीतक म्यानमें छिपी हुई है।

१. फ़र्माने ख़ुदा

उट्ठो मेरी दुनियाके ग़रीबोंको जगा दो।
काख़े उमराके दरो दीवार हिला दो।।
गरमाओ ग़ुलामोंका लहू सोज़े यक़ीं से।
कुंजश्के फ़रोमायाको शाहीं से लड़ा दो।।
सुल्तानिए जम्हूरका आता है ज़माना।
जो नक़्शे कुहन तुमको नज़र आए मिटा दो।।
जिस खेतसे देहक़ाँको मयस्सर नहीं रोज़ी।
उस खेतके हर ख़ोशाए गन्दुमको जला दो।।
क्यों ख़ालिक़ो मख़लूक़में हायल रहें परदे।
पीराने कलीसाको कलीसासे उठा दो।।
'हक़ रा बसुजूदे, सनम रा बतवाफ़े।'
बेहतर है चिराग़े हरमो दैर बुझा दो।।
मैं नाख़ुशो बेज़ार हूँ मरमरकी सिलोंसे।
मेरे लिए मिट्टीका हरम और बना दो।
तहज़ीबे नवी कारगहे शीशा गरां है।
आदाबे जुनूं शाइरे मशरिक़को सिखा दो।

———

९. खुदाका हुक्म

(फरिश्तोंको)

उठो, मेरी दुनियाके ग़रीबोंको जगा दो और अमीरों और धनवानोंके महलोंकी दीवारें हिला दो। ग़ुलामोंके खूनको उनके मनके उत्साहसे गर्म करो और जो शक्तिहीन चिड़ियाकी भाँति हैं उनको चिड़ियोंके शिकार करनेवाले बाजसे लड़ा दो। अब जनता राजका युग आ रहा है जो भी पुरानी रेखाएँ तुमको दिखाई दें उन्हें मिटा दो। जिस खेतसे किसानको रोटी और रोज़ी न मिले उस खेतके गहूँके हरे दानेको फूँक दो। ईश्वर और उसकी प्रजाके बीचमें क्यों परदे पड़े रहें। गिरजोंके पादरियोंको, जो दोनोंके बीचमें पड़ गए हैं गिरजोंसे उठा दो। हक़ (सत्य ईश्वर) सजदेमें हो और मूर्तियाँ काबेका तवाफ़ (चक्र) लगा रही हों। अच्छा यही है कि काबा और मन्दिरके चिराग़ बुझाकर उनके भेदभाव मिटा दो। मैं स्फटिक और बहुमूल्य पत्थरके बने हुए सदनों और मन्दिरोंसे उकता गया हूँ मेरे लिए मिट्टीका एक काबा और बना दो। नई पश्चिमी सभ्यता शीशोंकी बनी दुनिया है इसे तोड़नेके लिए पूर्वके कविको दीवानापन और पागलपनके विधानको सिखा दो।

१० जिब्रीलो इब्लीस

जिब्रील—हम दमे दैरीना कैसा है जहाने रंगो बू ?।
इब्लीस—सोज़ो साज़ो दर्दो दाग़ो जुस्तुजू ओ आरज़ू ।।
जिब्रील—हर घड़ी अफ़लाक पर रहती है तेरी गुफ़्तगू ।
क्या नहीं मुमकिन कि तेरा चाक दामन हो रफ़ू ।।
इ०— आह ए जिब्रील तू वाक़िफ़ नहीं इस राज़से ।
कर गया सरमस्त मुझको टूटकर मेरा सुबू ।।
अब यहां मेरी गुज़र मुमकिन नहीं मुमकिन नहीं ।
किस क़दर ख़ामोश है यह आलमे बे काख़ो कू ।।
जिसकी नौमीदीसे हो सोज़े दुरूने कायनात ।
उसके हक़में "तक़नतू" अच्छा है या "ला तक़नतू"

जि०— खो दिए इन्कार से तूने मुक़ामाते बुलन्द
चश्म यज़्दांमें फ़रिश्तोंकी रही क्या आबरू ।
इ०— है मेरी जुरअतसे मुश्ते ख़ाकमें ज़ौक़े नुमू ।
मेरे फ़ितने जामाए अक़्लो ख़िरदका तारो पू ।।
देखता है तू फ़क़त साहिलसे रज़्मे ख़ैरोशर ।
कौन तूफ़ांके तमांचे खा रहा है, मैं कि तू ?।।
ख़िज़्र भी बे दस्तोपा इल्यास भी बे दस्तो पा ।
मेरे तूफ़ां यम ब यम दरया ब दरया जू ब जू ।।
गर कभी ख़िलवत मयस्सर हो तो पूछ अल्लाहसे ।
क़िस्साए आदमको रंगीं कर गया किसका लहू ।।
म खटकता हूं दिले यज़्दांमें कांटे की तरह ।
तू फ़क़त 'अल्लाह हू' 'अल्लाह हू' 'अल्लाह हू।'

१० जिब्रीलो इब्लीस

फ़रिश्ता जिब्रील इब्लीस (शैतान) से पूछता है कि ऐ साथी यह रंग और सुगन्धका संसार कैसा है। इब्लीस कहता है कि यह भौतिक संसार केवल दुःख और आनन्द – अभिलाषा और खोज वेदना और पीड़ाका संसार है। जिब्रील कहता है कि अब भी हर क्षण आकाश पर तेरी चर्चा होती है। क्या यह सम्भव नहीं है कि तेरा फटा हुआ दामन फिर रफ़ू हो जाय अथवा भगवानसे तू क्षमा मांगकर फिर फ़रिश्तोंमें सम्मिलित हो जाए। इब्लीस कहता है कि ऐ जिब्रील तू इस भदको नहीं जानता। मेरा प्याला टूटकर मुझको मस्त कर गया है। अब उस संसारमें मेरा जाना असम्भव है। मुझे प्रतीत होता है कि वह सपाट दुनिया कैसी नीरस फीकी है और कैसी मौन है। जिसके निराश होनेपर सारे विश्वकी आन्तरिक शक्ति और तप निर्भर हो उसके लिये यह कहना उचित है कि निराश न होना चाहिये या यह कहना कि निराश होना चाहिये।

जिब्रील कहता है कि तूने सजदा करनेको मना करके सम्मानका स्थान खो दिया और तेरी इस बातसे खुदाकी दृष्टिमें फ़रिश्तोंकी आबरु गिर गई।

इब्लीस जवाब देता है कि मेरे साहससे मिट्टीके पुतलमें आगे बढ़नेका उत्साह पैदा हुआ है। मेरी शरारतें बुद्धि और समझदारीके वस्त्रोंका ताना-बाना बनी हुई हैं। तू तो किनारे पर खड़ा अच्छाई और बुराईका समर देखता है इस संघर्षमें बढ़कर तूफ़ानके थपेड़े तू खा रहा है या मैं? खिज़र और इल्यास जैसे पैग़म्बर विवश हैं परन्तु मेरे उठाए हुए तूफ़ान हर लहर, हर समुद्र और हर नदीमें हैं। यदि कभी तुझे अल्लाहसे एकान्तमें मिलना हो तो यह पूछना कि यह किसका रक्त था जो आदमके किस्सेको रंगीन कर गया। मैं अल्लाहके दिलमें आज भी कांटा बनकर खटकता हूँ और तू तो केवल उसकी प्रशंसा करनेवाला ही है यही कहता है कि "वही अल्लाह है', वही अल्लाह है', वही अल्लाह है।"

११ मुहब्बत

उससे पहले की ज़ुल्फ़ें थीं अभी ना आशना ख़मसे ।
सितारे आसमाँके बेख़बर थे लज़्ज़ते रम से ।।
क़मर अपने लिबासे नौमें बेगाना-सा लगता था ।
न था वाक़िफ़ अभी गरदिशके आईने मुसल्लमसे ।
अभी इमकाँके ज़ुल्मत ख़ानेसे उभरी ही थी दुनिया ।
मज़ाक़े ज़िन्दगी पोशीदा था पहनाए आलम से ।।
कमाले नज़्में हस्ती की अभी थी इब्तदा गोया ।
हुवैदा थी नगीनेकी तमन्ना चश्मे ख़ातम से ।।१।।

सुना है आलमे बालामें कोई कीमियागर था ।
सफ़ा थी जिसकी ख़ाके पा में बढ़कर साग़रे जमसे ।
लिखा था अर्शके पाए पे एक अक्सीरका नुस्ख़ा ।
छुपाते थे फ़रिश्ते जिसको चश्मे रूहे आदम से ।
निगाहें ताकमें रहती थीं लेकिन कीमियागरकी ।
वह इस नुस्ख़ेको बढ़कर जानता था इस्मे आज़मसे ।।
बढ़ा तस्बीह ख़्वानीके बहाने अर्शकी जानिब ।
तमन्नाए दिली आख़िर बर आई सइए पैहम से ।।२।।

फिराया फ़िक्रे अजज़ा ने उसे मैदाने इमकाँ में ।।
छुपेगी क्या कोई शै बारगाहे हक़के मेहरमसे ।।
चमक तारेसे माँगी चाँदसे दाग़े जिगर माँगा ।
उड़ाई तीरगी थोड़ी-सी शबकी ज़ुल्फ़े बरहम से ।।
तड़प बिजलीसे पाई हूरसे पाकीज़गी पाई ।
हरारत ली नफ़स हाए मसीहे इब्ने मरयमसे ।।
ज़रासी फिर रबूबीयत से शाने बे नियाज़ी ली ।
मलकसे आजिज़ी उफ़तादगी तक़दीरे शबनमसे ।।
फिर इस अजज़ाको घोला चश्मए हैवा के पानीमें ।
मुरक्कबने मुहब्बत नाम पाया अर्शे आज़मसे ।।३।।

११ मुहब्बत

रातकी दुल्हनके बाल अभी घुँघराले न बने थे और आकाशके तारे अभी चलनेके मजसे परिचित न थे। चाँद अपने नए वस्त्रोंमें बेजोड़ सा लगता था कि अभी चलनके मामे हुए विधानसे जानकारी न रखता था। अभी सम्भावनाके अन्धकारमय संसारसे विश्व उभरा ही था और उसकी आत्मामें जीवन प्रेम और उत्साह छिपा हुआ था। जीवनकी व्यवस्था की सीमा तक पहुँचनेका अभी आरम्भ ही हुआ था और अँगूठीके मनसे नगकी अभिलाषा प्रगट हो रही थी।

सुना है दूसरी दुनियामें एक कीमियागर था जिसके पाँवोंके नीचे मिट्टी भी आकर शुद्ध हो जाती थी। अर्श (ईश्वर स्थान) के पाए पर एक इक्सीरका नुस्खा लिखा था जिसे फ़रिश्ते आदमीकी नज़रोंसे छिपाते थे परन्तु कीमियागर निरन्तर उसीकी खोजमें लगा रहता था वह इसको इस्मे आज़म (महामन्त्र) से भी बढ़कर जानता था। एक दिन पूजा के बहाने माला लेकर अर्शकी ओर बढ़ा और बराबर कोशिश करनेसे आखिर एक दिन मनकी कामना पूरी हुई।

फिर इस नुस्खेके तत्त्वोंकी खोजमें पूरी दुनियामें इधर-उधर भटका, भला कौनसी चीज़ ईश्वरकी सत्ताके भेद जाननेवालेकी निगाहोंसे छिप सकती है। उसने तारोंसे चमक और चाँदसे उसके दिलका दाग़ माँगा और रातके बिखर बालोंसे थोड़ा-सा अन्धेरा माँगा। बिजलीसे तड़प प्राप्त की अप्सराओंसे सुन्दरता पाई। हज़रत ईसाके प्राणों (जो मुर्दोंको जीवित कर देते थे) से गर्मी ली। ज़रा से फिर खुदासे बे-परवाही और स्वतन्त्रता की फ़रिश्तोंसे पूजा नम्रता ली और ओसकी प्रकृतिसे खामसारी ली फिर इन वस्तुओंको अमृतमें घोला और इस मिश्रणने महान अर्शसे मुहब्बत या प्रेमका नाम पाया।

मुहब्बिसने यह पानी इसलिए मौक़ेपर पर छिड़का ।
फिरह कोको हुनरमें उसके गोया कारे आलम से ।।
हुई कुंजिया मयां यारोंने सुरके रुबाबको छोड़ा ।
गले मिलने लगे उठ उठके अपने अपने हमदम से ।।
फ़िराके माह पाया माफ़ताबोंने सितारों में ।
फलक सुबोंने पाई, बाग पाए लाला यारोंने ।।

कीमियागरने यह पानी नए पैदा हुए जीवनपर छिड़का और उसकी कलाने संसारके सारे कार्योंकी कठिनाइयोंको सुलझा दिया। इसका प्रभाव यह हुआ कि सोई हुई दुनियामें गतिका जन्म हुआ और परमाणुओंने नींदके नशेको छोड़ दिया और उठ उठकर अपने अपने जोड़ोंसे मिलने लगे। सूरज और तारोंने मस्तीसे चमकसे चलना सीख लिया। कलियोंने चटकना सीखा और लालाके फूलके बागोंने प्रेमका दाग पाया।

---

२२ गज़लें

फिर, चिराग़े लालासे रौशन हुए कोहो दमन।
मुझको फिर नग़मों पे उकसाने लगा मुर्ग़े चमन॥
फूल हैं सेहरामें या परियां क़तार अन्दर क़तार।
ऊदे ऊदे नीले नीले पीले पीले पैरहन॥
बर्गे गुलपर रख गई शबनमका मोती बादे सुब्ह।
और चमकाती है उस मोतीको सूरजकी किरन॥
हुस्ने बे परवाको अपनी बे नक़ाबी के लिये।
हों अगर शहरोंसे बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन॥
अपने मनमें डूब कर पाजा सुराग़े ज़िन्दगी।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन॥
मनकी दुनिया? मनकी दुनिया सोज़ो मस्ती जज़्बो शौक़।
तनकी दुनिया? तनकी दुनिया सूदो सौदा मक्रो फ़न॥
मनकी दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं।
तनकी दौलत छांव है आता है धन जाता है धन॥
मनकी दुनियामें न पाया मने अफ़रंगी का राज।
मनकी दुनियामें न देखे मैंने शैख़ो बरहमन॥
पानी पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात।
तू झुका जब ग़ैरके आगे न तन तेरा न मन॥

१९. ग़ज़लें

फिर लाले के फूलसे पहाड़ और वादियोंमें प्रकाश फैला है और मुझको बाग़ बग़ीचोंके पखेरू फिर गानेकी प्रेरणा देने लगे हैं। जंगलमें फूल नहीं है ऐसा प्रतीत होता है कि ऊदे, पीले और नीले वस्त्र पहने परियाँ (अपसराएँ) खड़ी हैं। गुलाबके फूलके पत्तोंपर ओसके मोती प्रभातकी हवा रख गई है और उस मोतीको सूरजकी किरणोंने और भी चमका दिया है। यदि अनीले और स्वतन्त्र सुन्दरताको अपनको प्रगट करनेके लिये नगरोंसे जंगल अच्छे लगते हों तो भला नगर भले या जंगल। ऐ मानव ! अपने मनमें डूबकर जीवनका भेद पाले यदि मेरा नहीं बनता तो न सही अपना ही बनजा। मनकी दुनियामें उत्साहकी जलन और मस्ती प्रेम और लगन है और तनकी दुनियाँ घाटे और लाभ छल-कपट और धोखा ही है। मनकी दुनियामें मैंने अंग्रेजोंका राज न देखा न मुल्ला और ब्राह्मणोंका ही पता पाया। मुझको एक फ़क़ीर की यह बात पानी पानी कर गई (लज्जित कर गई) कि यदि तू दूसरेके आगे झुक गया तो फिर न मन ही तेरा है न तन (शरीर) ही तेरा है।

सितारोंसे आगे जहाँ और भी हैं।
अभी इश्क़के इम्तिहाँ और भी हैं।।
तही ज़िन्दगीसे नहीं यह फ़ज़ाएँ।
यहाँ सैकड़ों कारवाँ और भी हैं।।
क़नाअत न कर आलमे रंगो बू पर।
चमन और भी आशियाँ और भी हैं।
अगर खो गया एक नशेमन तो क्या ग़म।
मक़ामाते आहो फ़ुगाँ और भी हैं।।
तू शाहीं है परवाज़ है काम तेरा।
तिरे सामने आसमाँ और भी हैं।।
इसी रोज़ो शबमें उलझकर न रह जा।
कि तेरे ज़मानो मकाँ और भी हैं।।
गए दिन कि तन्हा था मैं अंजुमनमें।
यहाँ अब मेरे राज़दाँ और भी हैं।।

सितारोंसे आगे भी अभी बहुतसे संसार हैं। अभी प्रेम और उत्साहकी और भी परीक्षाएँ हैं। जीवनसे यह वातावरण वंचित और खाली नहीं है अभी इनमें सैकड़ों क़ाफ़िले और भी हैं। इस रंग और सुगंधकी बाहरी दुनियापर ही सन्तुष्ट न हो क्योंकि अभी बहुतसे बाग़ और बहुतसे घोंसले और ठिकाने और भी हैं। अगर एक स्थान या ठिकाना खो गया तो खेद ही क्या है? अभी फ़रयाद करनेके और भी कई स्थान हैं। तू बाज पक्षीकी भांति है, तेरा काम सदा उड़ते रहना ही है तेरे सामने अभी और कई आकाश हैं। इसी रात-दिनके चक्रमें उलझकर न रह जा। तेरे लिए समय और स्थानकी यही सीमाएँ नहीं हैं तेरे युग और स्थान और भी हैं। वह समय गया जब इक़बाल को यह शिकायत थी कि वह इस सभामें अकेला है अब इस सभामें उसका भेद जानने वाले और भी हैं।
